राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 295

मूल्य ₹6 .00, नई दिल्ली, गुरुवार, 2 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	इटली	भारत	(26 मार्च)	दिल्ली
कुल केस	8,82,781	1,88,881	1,05,792	1903	640	152
मौतें	44,150	4,066	12,428	49	12	2
स्वस्थ हुए	1,85,175	7,251	15,729	133	43	6

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	335	9
केरल	265	2
तमिलनाडु	234	1
उत्तर प्रदेश	107	0
राजस्थान	108	0
कर्नाटक	105	3
गुजरात	82	0
तेलंगाना	77	3
अन्य	437	29

शाम 11 :45 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	स्पेन	चीन	जर्मनी
केस	1,02,136	81,554	73,217
मौतें	9,053	3,312	802

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो सोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

निश्चिंत रहें, पूरी तरह सुरक्षित है आपका अखबार

आप सब इससे अवगत ही होंगे कि प्रख्यात डॉक्टर, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ आदि बार-बार यह कह रहे हैं कि अखबारों से कोरोना वायरस के संक्रमण फैलने का कोई खतरा नहीं है। आप पूरी तरह निश्चिंत होने के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करके खुद देख सकते हैं कि आपका प्रिय दैनिक जागरण समाचार पत्र कितने सुरक्षित तरीके से छपकर आपके हाथों में पहुंचता है। सतर्कता और सजगता की यह प्रक्रिया हम हर दिन-हर क्षण अपनाते हैं, क्योंकि आपकी तरह हम भी कोरोना को परास्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रतिबद्धता को और प्रबल करने के लिए यह आवश्यक है कि आप समाचारों के सबसे विश्वसनीय स्रोत से जुड़े रहें। आपकी तरह हमें भी यह भरोसा है कि हम यह जंग जीतेंगे।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +9190131515515

भारत में कोरोना के कम मामलों के पीछे बीसीजी का टीका! ● पेज 5

शारीरिक दूरी का नया पैमाना, आठ मीटर का हो अंतर ● पेज 6

एसपी की पत्नी जरूरतमंदों के लिए खुद बना रहीं भोजन ● पेज 7

सरोकार

मदद के पैकेट से जल रहा जरूरतमंदों के घरों का चूल्हा

मुरादाबाद : कोरोना से लड़ने के लिए मदद करने वाले हाथ दिन पर दिन बढ़ रहे हैं। उत्तर प्रदेश के रतनपुर कलां गांव के युवा संकट की घड़ी में गरीबों और जरूरतमंदों के लिए किस तरह बन गए मसीहा, एक रिपोर्ट। (पेज-7)

जागरण विशेष

दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे हथियार डाल रहा कोरोना

नई दिल्ली : केरल के 93 वर्षीय थॉमस हों, 88 वर्षीय मरियम्मा या रायपुर के 68 वर्षीय मनबोधन साहू। चिकित्सक इनके आत्मबल की तारीफ कर रहे हैं। कहते हैं कि इन्होंने सिर्फ इच्छाशक्ति के बूते कोरोना को चित कर दिया। (पेज-7)

देशभर में तब्लीगियों पर सरकार ने कसा शिकंजा

तलाश ▶ जमात के लोगों के संपर्क में आने वालों की पहचान के लिए भी सघन अभियान शुरू

कैबिनेट सचिव ने राज्यों के डीजीपी और मुख्य सचिवों के साथ की वीडियो कांफ्रेंसिंग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, जमात के संक्रमित लोगों के कारण कोरोना के मामले बढ़े, यह राष्ट्रीय ट्रेंड नहीं
- वीजा नियमों के उल्लंघन के दोषी पाए जाने पर विदेशी तब्लीगियों के खिलाफ होगी दंडात्मक कार्रवाई

दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में स्थित मरकज से तब्लीगी जमात के लोगों को निकालने के बाद केंद्र सरकार ने यहां से विभिन्न राज्यों में गए उनके नुमाइंदों की तलाश तेज कर दी है। कैबिनेट सचिव राजीव गौबा ने सभी राज्यों के पुलिस प्रमुखों (डीजीपी) और मुख्य सचिवों को इस काम को जल्द से जल्द पूरा करने को कहा है। तब्लीगी जमात के कारण पिछले 24 घंटे में कोरोना से ग्रसित 376 नए मरीज सामने आए हैं। वैसे स्वास्थ्य मंत्रालय ने साफ किया है कि नए मरीजों की संख्या में तेज बढ़ोतरी सिर्फ तब्लीगी जमात के कारण है और यह राष्ट्रीय ट्रेंड को नहीं दर्शाता है।

वहीं, सरकारी सूत्रों ने बताया कि तब्लीगी जमात में शामिल विदेशियों को वीजा नियमों के उल्लंघन का दोषी पाया जाता है तो उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई भी की जाएगी। विदेश मंत्रालय ने संबंधित देशों में अपने दूतावासों को इस बारे में जानकारी भी दे दी है।

बुधवार को सभी राज्यों के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये बैठक में कैबिनेट सचिव ने विभिन्न राज्यों में फैले तब्लीगी जमात के लोगों के खतरे से आगाह किया। राजीव गौबा ने राज्य सरकारों से कहा कि इन तब्लीगियों की युद्धस्तर पर खोजकर उन्हें अलग-थलग करना जरूरी है, वरना अभी तक की सारी कोशिशों पर पानी फिर सकता है। उन्होंने राज्यों के कई तब्लीगियों के विदेशी होने और पर्यटक वीजा पर आने के बावजूद धर्म प्रचार में लगने का हवाला देते हुए उनके खिलाफ तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा।

संक्रमण के संवाहक (विशेष) पेज पेज>>4

लॉकडाउन का सख्ती से हो पालन : अजय भल्ला

केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने भी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को पत्र लिखकर लॉकडाउन के पालन में ढिलाई न हो यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है। कुछ राज्यों में लॉकडाउन में ढिलाई की शिकायतों के मद्देनजर गृह सचिव ने साफ कहा है कि केंद्र की तय रियायतों से ज्यादा छूट किसी सूरत में नहीं दी जानी चाहिए।

दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के मरकज में शामिल होने वाले लोगों की देश भर में तलाश हो रही है। बुधवार को त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में ऐसे कई लोगों को कोरोना जांच के लिए अस्पताल भेजा गया। प्रेट्र

जमात के लोगों की आपराधिक लापरवाही ने बिगाड़े हालात

तब्लीगी जमात के लोगों की आपराधिक लापरवाही के कारण कोरोना के केस की संख्या तेजी से बढ़ने का हवाला देते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि उनके संपर्क में आने के कारण दिल्ली से 18, जम्मू-कश्मीर में 23, तेलंगाना में 20, आंध्र प्रदेश से 43, अंडमान-निकोबार से नौ, तमिलनाडु से 110 और पुडुचेरी से दो नए मामले सामने आए हैं। इसके अलावा कई अन्य जगहों पर अतिरिक्त सैंपल की टेस्टिंग की जा रही है। जहां भी ये मामले मिले हैं, वहां उनके संपर्क में आने वालों की पहचान के लिए सघन अभियान शुरू कर दिया गया है। ताकि जरूरत के मुताबिक उन्हें आइसोलेशन में रखने से लेकर अस्पताल में भर्ती तक किया जा सके। संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि यदि तब्लीगी जमात के लोगों के कारण फैले कोरोना को छोड़ दें, तो पूरे देश में स्थिति नियंत्रण में है। उनके अनुसार कोरोना को फैलने से रोकने में लॉकडाउन का असर निश्चित रूप से सामने आएगा, सिर्फ लोगों का इसका कड़ाई से पालन करने की जरूरत है।

मरकज में पनप रहा था देश की तबाही का वायरस

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

- संक्रमण के बाद भी मौलानाओं के छिपने से जांच एजेंसियां सतर्क
- जांच में एनआइए से भी सहयोग ले सकती है क्राइम ब्रांच

तब्लीगी मरकज में ठहरे देश-विदेश के मौलानाओं को बाहर निकाले जाने के साथ ही चौंकाने वाली जानकारियां सामने आ रही हैं। सूत्रों का दावा है कि मरकज में ठहरे लोग न सिर्फ देश विरोधी गतिविधियों को हवा दे रहे थे, बल्कि कोरोना वायरस को ही हथियार बनाकर देशभर में तबाही फैलाने की भी मंशा रखते थे। यही वजह है कि मरकज में न सिर्फ लोगों को छिपाया गया, बल्कि पुलिस ने जब बाहर निकालने का प्रयास किया तो वे हमलावर हो गए। पुलिस के पहुंचने से पहले ही विदेशी नागरिकों को राजधानी में कई इलाकों में छिपा दिया गया। टूरिस्ट वीजा पर आए इन लोगों ने धर्म प्रचार में शामिल होकर वीजा नियमों का उल्लंघन किया। फिलहाल, क्राइम ब्रांच ने आयोजकों पर आपराधिक साजिश की धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जल्द ही जांच में एनआइए का भी सहयोग लिया जा सकता है।

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज में ठहरे देश-विदेश से आए सैकड़ों लोगों में कोरोना का संक्रमण पाए जाने के बाद पुलिस व सुरक्षा एजेंसियों की नींद उड़ी हुई है। एजेंसियों को शक है कि विदेशी नागरिकों के जरिये कोरोना फैलाकर देश को आर्थिक रूप से कमजोर करने की साजिश रची जा रही थी। यही कारण है कि पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने जांच क्राइम ब्रांच को सौंप दी है।

पुलिस के अनुसार, 28 मार्च को ही पता लग गया था कि यहां ठहरे लोगों में कोरोना वायरस का संक्रमण फैल रहा है। इसके बावजूद ये लोग न तो पुलिस और स्वास्थ्य विभाग से मदद मांग रहे थे और न ही प्रशासन का किसी तरह से सहयोग करने को तैयार थे। दिल्ली सरकार ने तो 16 मार्च को ही ऐसे सभी धार्मिक व निजी कार्यक्रमों पर पाबंदी लगा दी थी, जिसमें 50 लोग एक जगह एकत्र हो सकते थे। बावजूद इसके नौ मंजिल की इस बिल्डिंग में बड़ी संख्या में लोग रुके रहे। बार-बार चेतावनी के बावजूद बिल्डिंग खाली न करने पर पुलिस-प्रशासन ने इन्हें निकालना शुरू किया। रविवार सुबह से शुरू हुआ ऑपरेशन बुधवार तड़के 3.30 बजे तक चला। तलाशी के दौरान करीब 100 लोग अलग-अलग वाशरूम में छिपे थे। बहुत समझाने के बावजूद स्वास्थ्य जांच के लिए तैयार नहीं थे, बल्कि पुलिस पर ही थूककर संक्रमण फैलाने का प्रयास कर रहे थे।

आठवीं तक के सभी बच्चों को पास करेगी सीबीएसई

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- कोरोना के प्रकोप को देखते हुए मानव संसाधन मंत्री ने दिया आदेश

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से मान्यता प्राप्त देशभर के स्कूलों में पहली से आठवीं कक्षा तक के सभी बच्चों को अगली कक्षा में प्रमोट किया जाएगा। किसी भी बच्चे को अनुत्तीर्ण नहीं किया जाएगा। मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने बुधवार को यह घोषणा की। उन्होंने कहा कि मौजूदा स्थिति को देखते हुए सीबीएसई के साथ सलाह-मशविरा कर यह निर्णय लिया गया है।

मानव संसाधन विकास मंत्री के आदेश के बाद सीबीएसई ने भी इसकी आधिकारिक घोषणा कर दी है। बयान में कहा गया है कि एनसीईआरटी के साथ परामर्श कर इस संबंध में एक एडवाइजरी भी जारी की जाएगी। सीबीएसई ने संबद्ध स्कूलों को नौवीं और 11वीं के बच्चों को आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर पास करने के लिए भी कहा है। आंतरिक मूल्यांकन में प्रोजेक्ट वर्क, पीरियोडिक परीक्षाएं और टर्म परीक्षाओं के अंक जोड़े जाएंगे। अगर किसी छात्र के इस आंतरिक मूल्यांकन में कम अंक आते है या वो फेल होता है तो उसका स्कूल बेस्ड टेस्ट लिया जाएगा। यह ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों प्रकार से हो सकता है। आंतरिक मूल्यांकन क्लियर न कर पाने वाले बच्चों को इस टेस्ट के आधार पर अगली कक्षा में प्रमोट किया जाएगा।

परीक्षा की 10 दिन पहले दे दी जाएगी सूचना

: सीबीएसई के मुताबिक दसवीं-बारहवीं की शेष परीक्षाओं को पुनः आयोजित किया जाएगा। हालांकि अब उन्हीं विषयों की परीक्षा कराई जाएगी, जो उच्च संस्थाओं में दाखिले के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। सीबीएसई ने कहा कि बोर्ड परीक्षाओं के बार में परीक्षा से लगभग 10 दिन पहले सभी हितधारकों को सूचना दी जाएगी।

अब 11वीं कक्षा के छात्र पढ़ेंगे अप्लाइड मैथमेटिक्स

सीबीएसई 11वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में एक नया विषय शामिल करने जा रहा है। 11वीं के छात्र अब अप्लाइड मैथमेटिक्स विषय पढ़ सकेंगे। सीबीएसई द्वारा जारी नोटिस के मुताबिक इस विषय की मदद से छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में बुनियादी गणितीय और सांख्यिकीय उपकरणों और उनके अनुप्रयोगों की समझ विकसित करने में मदद मिलेगी। जिन छात्रों के पास 10वीं में बेसिक मैथ थी, वह वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक अप्लाइड मैथमेटिक्स ले सकेंगे। इस विषय को मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल के सुझाव पर शामिल किया जा रहा है। इसके संबंध में पोखरियाल ने ट्वीट भी किया है।

डॉक्टर व मेडिकल स्टाफ की जान गई तो देंगे एक करोड़ : केजरीवाल

नई दिल्ली : दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा, कोरोना का इलाज कर रहे डॉक्टर व पैरा मेडिकल स्टाफ भी सैनिकों की तरह देश सेवा कर रहे हैं। अगर कोरोना मरीजों का इलाज कर रहे किसी डॉक्टर, या अन्य चिकित्साकर्मी की मौत होती है तो दिल्ली सरकार उसके परिवार को भी एक-एक करोड़ की सम्मान राशि देगी। (पेज-2)

आज मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक करेंगे प्रधानमंत्री

नई दिल्ली : लॉकडाउन का एक हफ्ता बीतने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ विचार-विमर्श करेंगे। गुरुवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये होने वाली बैठक में कोरोना के खिलाफ जंग की मौजूदा स्थिति, घर लौट रहे लोगों के लिए चलाए जा रहे राहत कार्यों के साथ-साथ तब्लीगी जमात के विभिन्न राज्यों में जाने से उत्पन्न खतरे पर चर्चा होगी। (पेज-3)

गैर-सब्सिडी वाला एलपीजी सिलेंडर 61 रुपये सस्ता

नई दिल्ली : ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने बुधवार को जनता को बड़ी राहत प्रदान की। कंपनियों ने गैर-सब्सिडी वाला रसोई गैस सिलेंडर 61.50 रुपये सस्ता कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल के दाम औंधे मुंह गिर जाने के चलते एलपीजी का भाव भी गिरा है। अब नई दिल्ली में गैर-सब्सिडी वाले 14 .2 किग्रा एलपीजी सिलेंडर की कीमत 744 रुपये रह गई है। (पेज-10)

जम्मू-कश्मीर में 15 साल से रहने वाले नागरिक होंगे डोमिसाइल के हकदार

राज्य ब्यूरो, जम्मू

- केंद्र सरकार ने जारी की अधिसूचना, नियम और शर्तें तय
- सात वर्ष तक केंद्र शासित प्रदेश के स्कूलों में पढ़ाई करने वाले बच्चे भी डोमिसाइल के हकदार
- लेवल चार तक की नौकरियों के लिए डोमिसाइल जरूरी

केंद्र सरकार ने बुधवार को एक अहम फैसले में केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में डोमिसाइल लागू कर दिया है। अब जम्मू-कश्मीर में 15 साल से रह रहे नागरिक डोमिसाइल के हकदार होंगे। जिन बच्चों ने सात वर्ष तक केंद्र शासित प्रदेश के स्कूलों में पढ़ाई की है और दसवीं या बारहवीं कक्षा की परीक्षा दी है, वे भी डोमिसाइल होंगे। केंद्र सरकार ने गजट अधिसूचना जारी कर डोमिसाइल के नियम और शर्तें भी तय कर दी हैं। लेवल-चार तक की नौकरियों के लिए डोमिसाइल होना जरूरी होगा। इससे स्थानीय युवाओं को राहत मिलेगी।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन आर्डर 2020 जारी कर दिया है। जम्मू-कश्मीर सिविल सर्विस विकेंद्रीयकरण और भर्ती कानून 16 ऑफ 2010 में बदलाव किया गया है। उसमें नौकरियों व डोमिसाइल के नियम व शर्तें तय की गई हैं। राहत व पुनर्वास आयुक्त के साथ पंजीकृत विस्थापित भी डोमिसाइल होंगे। जिन बच्चों के अभिभावक राज्य में 15 साल से रह रहे हैं या विस्थापित के तौर पर पंजीकृत हैं, वे भी डोमिसाइल होंगे।

दस साल तक काम करने वाले केंद्र के अधिकारी भी हकदार: केंद्र सरकार के अधिकारी, ऑल इंडिया सर्विस व सार्वजनिक उपक्रमों के अधिकारी, केंद्र सरकार की स्वायत इकाइयां, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, केंद्रीय विश्वविद्यालयों और पंजीकृत रिसर्च संस्थानों में दस साल तक काम करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों के बच्चे भी डोमिसाइल के हकदार होंगे।

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के बच्चे जो बाहरी राज्यों में नौकरियां, बिजनेस कर रह रहे हैं, लेकिन उनके अभिभावक नियम व शर्तें पूरी करते हैं तो वे भी जम्मू-कश्मीर के डोमिसाइल कहलाएंगे।

पूर्व मुख्यमंत्रियों को अब नहीं मिलेंगी सरकारी सुविधाएं

श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्रियों को अब सरकारी खर्च पर आवास, टेलीफोन, बिजली, पेट्रोल, वाहन चालक और स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिलेंगी। केंद्र सरकार ने पूर्व मुख्यमंत्रियों के लिए इन सुविधाओं को सुनिश्चित करने वाले संवैधानिक प्रावधानों को समाप्त कर दिया है। (पेज-12)

डोमिसाइल जारी करने का अधिकार तहसीलदार को : कानून के तहत डोमिसाइल जारी करने का अधिकार तहसीलदार को होगा या सरकार इसके लिए कोई भी अधिकारी नियुक्त कर सकती है। अगर किसी को कोई समस्या होगी तो वह डिप्टी कमिश्नर के पास अपील कर सकता है।

स्टेट कैडर अब केंद्र शासित प्रदेश कैडर कहलाएगा : सरकारी नौकरियों में लेवल-चार तक के पदों में आवेदन करने के लिए डोमिसाइल जरूरी होगा। कैंटोनमेंट बोर्ड पर यह लागू नहीं होगा। स्टेट कैडर अब केंद्र शासित प्रदेश कैडर कहलाएगा। इसी तरह स्टेट सर्विस सेलेक्शन बोर्ड का नाम सर्विस सेलेक्शन बोर्ड होगा। राज्य के स्थायी नागरिक शब्द को केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के डोमिसाइल से बदला गया है।

डोमिसाइल लागू करने की मांग बना हुआ था मुद्दा : जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पांच और छह अगस्त को जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन कानून 2019 लागू करते हुए जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को अलग-अलग केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया था। पिछले काफी समय से विपक्षी पार्टियां जम्मू-कश्मीर में डोमिसाइल लागू करने की मांग कर रहीं थीं। पीएमओ में राज्यमंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कई बार आश्वासन दिया था कि जम्मू-कश्मीर में डोमिसाइल कानून जल्द आएगा, जिसमें स्थानीय लोगों के नौकरियों के हक सुरक्षित रहेंगे।

बढ़ता कद

ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी और अमेरिका जैसे देशों के कांप रहे हाथ, जनता को आर्थिक मदद देने की अमेरिकी योजना में भारत की झलक, अर्थव्यवस्था को सहारा देने की योजना में भी भारत अगुआ

कोरोना काल में भारत ने दिखाई वैश्विक नेतृत्व क्षमता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना महामारी के बीच जहां वैश्विक अर्थव्यवस्था को लेकर अनिश्चितता है। हर देश अपनी समस्या से पार पाने की कोशिशों में जुटा है, वहीं भारत ने नेतृत्व क्षमता दिखाई है। ऐसे वक्त में जब ब्रिटेन, फ्रांस, इटली व जर्मनी जैसे देशों के हाथ कांप रहे हैं और अमेरिका ने यह कहते हुए हाथ खड़े कर दिए है कि हालात बिगड़े तो 20 लाख अमेरिकियों की भी मौत हो सकती है। ऐसे वक्त में 21 दिन के देशव्यापी लॉकडाउन जैसे साहसिक निर्णय के कारण भारत अब तक ऐसे स्थान पर खड़ा है कि जहां भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) आशावादी भरोसा जता रही है। परिषद कह रही है कि लोगों ने पूरा साथ दिया तो स्थिति बिगड़ने नहीं दी जाएगी। वहीं, इस बुरे दौर में सामाजिक हालात और अर्थव्यवस्था को सहारा देने की योजना में भी भारत ने नेतृत्व क्षमता दिखाई है।

1.7 लाख करोड़ रुपये की राहत योजना की घोषणा की थी मोदी सरकार ने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर ही पहले जी-7 और फिर जी-20 देशों की बैठक में यह बात सामने आई कि हमें सामूहिक रूप से इस आपदा से निपटना चाहिए तथा मानवीय मूल्यों पर पहले गौर करना चाहिए। जब देश के अंदर गरीबों की मदद की बात आई तो भारत ने ही पहल की। मोदी सरकार की ओर से 1.70 लाख करोड़ रुपये की राहत योजना की घोषणा की गई। उसके दूसरे दिन अमेरिका में ट्रंप सरकार ने भी दो ट्रिलियन डॉलर की योजना घोषित की जो आकार में भारत से बहुत बड़ी दिख सकती है। दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं में फर्क के लिहाज से यह अंतर लाजिमी है, पर सोच की बात करें तो ट्रंप की घोषणा में मोदी की सोच झलकती है।

ट्रंप ने उसी तरह डायरेक्ट ट्रांसफर की बात की है जिसकी आधारशिला मोदी ने 2014 में

02 लाख करोड़ डॉलर के पैकेज का ट्रंप सरकार ने एलान किया है

पहली बार सरकार बनाने के साथ ही रख दी थी। यूं कहा जा सकता है कि भारत में जनधन खाता, आधार व मोबाइल के जरिये एक ऐसा दूरगामी ढांचा खड़ा कर दिया गया था जिसके जरिये लोगों तक सीधी और तत्काल मदद पहुंचाने का रास्ता तैयार था। अमेरिकी पैकेज में सालाना 75 हजार डॉलर कमाने वाले व्यक्ति को 1200 डॉलर की मदद सीधे खाते में ट्रांसफर की जाएगी। अगर पति-पत्नी की कमाई डेढ़ लाख डॉलर से कम है तो उन्हें 2,400 डॉलर की मदद मिलेगी। प्रति बच्चा भी 500 डॉलर दिए जाएंगे।

यह सब कुछ सोशल सिक्योरिटी नंबर से जुड़ा होगा और उनके आयकर रिटर्न और आमदनी के आधार पर तय होगा, जबकि भारत में महिलाओं के 20 करोड़ जनधन खाते में तीन माह के लिए 1,500 रुपये जाएंगे। मनरेगा मजदूरों की रोजाना मजदूरी में 20 रुपये की वृद्धि, तीन करोड़ वरिष्ठ नागरिकों, विधवा, दिव्यांगों के खाते में हजार रुपये, लगभग नौ करोड़ किसानों के खाते में दो-दो हजार रुपये देने का प्रावधान है। आधार और जनधन खाते के कारण यह मदद सीधे बैंक में पहुंचेगी। एक बड़ी मानवीय सोच उन डॉक्टरों व नर्सों को लेकर दिखाई गई है जो कोरोना से सीधे जंग लड़ रहे हैं। उनके लिए 50-50 लाख के बीमे का इंतजाम किया गया है। अमेरिका में भारतीय दूतावास के अधिकारियों की तत्काल प्रतिक्रिया यही थी कि ट्रंप सरकार भारत की तर्ज पर ही योजना लेकर आई है। सरकार की पहल पर ही रिजर्व बैंक ने मध्यम वर्ग को भी ईएमआइ, लोन ब्याज दर में राहत दी है और उद्योग जगत को राहत देकर कोरोना से लड़ते हुए अर्थव्यवस्था को बचाने की तैयारी शुरू हुई है। अंकटाड ने अनुमान जताया है कि भारत-चीन ही अपनी अर्थव्यवस्था बचाने में कामयाब होंगे।

पाकिस्तान में भेदभाव की हद, हिंदुओं को नहीं दिया जा रहा सरकारी राशन

कराची, एएनआइ : कोरोना महामारी के खिलाफ दुनिया भले ही एकजुट हो, लेकिन संकट के इस दौर में भी पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों से भेदभाव हो रहा है। पांच लाख की आबादी वाले सिंध प्रांत में लॉकडाउन के दौरान हिंदुओं और ईसाइयों को तो राशन तक नहीं दिया जा रहा। पूछने पर अधिकारी कहते हैं कि राशन केवल मुसलमानों के लिए है। ज्ञात हो, पाकिस्तान में हिंदू कुल आबादी का चार फीसद हैं, लेकिन पाकिस्तान में हिंदुओं से बड़े पैमाने पर भेदभाव किया जाता है। उन्हें बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित रखा जाता है।

सिंध निवासी एक हिंदू ने कहा, 'लॉकडाउन के दौरान अधिकारी हमारी मदद नहीं कर रहे। हिंदू या ईसाई समुदाय से ताल्लुक रखने वालों को राशन की दुकानों से लौटा दिया जाता है।' एक अन्य व्यक्ति ने कहा, 'हम सिर्फ यह सुनते हैं कि हमारे पड़ोस में रहने वाले लोग राशन लाए हैं। हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है। जब हम राशन वितरण केंद्रों पर जाते हैं तो अधिकारी हमें आश्वासन देते हैं कि वे अलग-अलग ट्रकों में जरूरी वस्तुएं भेजेंगे, लेकिन कोई सामान नहीं आता।''आखिर हमारे साथ भेदभाव क्यों कोई भी हमारी मदद नहीं कर रहा। ज्ञात हो, सिंध सरकार ने दैनिक मजदूरों और कामगारों को स्थानीय एनजीओ व प्रशासन के माध्यम से राशन वितरित करने का आदेश दिया है। ईसाई समुदाय के एक सदस्य ने कहा,' लॉकडाउन का दूसरा हफ्ता है और हमारे घर में खाने को कुछ नहीं है। नेता सिर्फ वोट मांगने आते हैं।'

पीएम मोदी से मदद की अपील : राजनीतिक कार्यकर्ता अमजद अयूब मिर्जा ने कहा, अल्पसंख्यकों को गंभीर खाद्य संकट झेलना पड़ रहा है। मिर्जा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से राजस्थान के जरिये सिंध में खाद्य सामग्री भेजने की अपील भी की है।

नवम्

सिद्धिदात्री

वासंतिक नवरात्र की नौवें दिन भगवती दुर्गा के नवम् स्वरूप सिद्धिदात्री के दर्शन-पूजन की मान्यता है। देवी की कृपा प्राप्ति के लिए 'सिद्ध गंधर्व यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि, सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी' मंत्र का जाप करने का विधान है। 'श्री' वृद्धि के लिए यह बीज मंत्र माना जाता है, इसलिए इसे श्रीमंत्र भी कहते हैं। जैसा इनका नाम वैसा ही इनका गुण और संदेश है। इनकी आराधना से साधक कभी निर्धन नहीं रहता, लेकिन इसके लिए कर्म महत्वपूर्ण है। इससे हर सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। सिद्धिदात्री महात्रिपुर सुंदरी रूप में विद्यमान हैं।

गौरी दर्शन यात्रा : गौरी दर्शन यात्रा के क्रम में नौवें दिन महालक्ष्मी गौरी के दर्शन- पूजन का विधान है।

आज का संदेश : देवी का स्वरूप संदेश देता है कि श्रेष्ठ कर्मों से कुछ भी असंभव नहीं है।

-पं. ऋषि द्विवेदी

होम क्वारंटाइन में भेजे गए 25 हजार लोग

सख्त रुख ▶ मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा, मोबाइल से लोकेशन पर रखेंगे नजर

बुधवार सुबह तक आए 120 केस, स्थिति नियंत्रण में

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को डिजिटल पत्रकार वार्ता कर बताया कि बुधवार सुबह तक दिल्ली में कोरोना वायरस के कुल 120 केस आए हैं। कोरोना संक्रमण की वजह से कुल 776 लोग दिल्ली के अस्पतालों में भर्ती हैं। इनमें से 112 पॉजिटिव हैं, बाकी संक्रमित हो सकते हैं और उनका टेस्ट किया गया है। हालांकि स्थिति नियंत्रण में है। केजरीवाल ने कहा कि निजामुद्दीन मरकज से बाहर लाए गए 536 कोरोना संदिग्धों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 1810 लोगों को आइसोलेशन में रखा गया है। कुल 2346 लोगों को मरकज से बाहर लाया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि दिल्ली में ऐसे 25 हजार से ज्यादा लोगों पर उनके मोबाइल लोकेशन के जरिये हर वक्त नजर रखी जा रही है। इससे पता चलेगा कि संबंधित व्यक्ति क्वारंटाइन के निर्देशों का पालन कर रहा है या नहीं।

केजरीवाल ने कहा कि कोरोना वायरस का फैलाव रोकने के लिए सभी संदिग्धों को सेल्फ आइसोलेशन या क्वारंटाइन में भेजा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सिंगापुर जैसे देशों में तकनीक के जरिये संदिग्धों की निगरानी की गई। इसके लिए मोबाइल फोन का इस्तेमाल किया गया। अब हम भी पुलिस की मदद लेकर मोबाइल के जरिये उन लोगों को ट्रेस करेंगे, जिन्हें घर में आइसोलेशन/ क्वारंटाइन में रहने के लिए कहा गया था। केजरीवाल ने बताया कि मंगलवार को 11,084 लोगों के मोबाइल नंबर दिल्ली पुलिस को दिए थे। बुधवार को 14,345 फोन नंबर और दिए गए।

उन्होंने बताया कि कोरोना वायरस की वजह से कुल 766 लोग दिल्ली के अस्पतालों में भर्ती हैं। इनमें से 112 पॉजिटिव केस हैं। बाकी संदिग्ध हैं। 112 मरीजों में से सिर्फ एक वेंटिलेटर पर है। दो ऑक्सीजन पर हैं और 109 की हालत स्थिर है यानी दिल्ली में तीन मरीजों की स्थिति को गंभीर कहा जा सकता है। दिल्ली के कुल 120 मरीजों में से 112 अभी अस्पताल में हैं। पांच को अस्पताल से छुट्टी मिल चुकी है। दो लोगों की मौत हो चुकी है और एक व्यक्ति शुरू में ही सिंगापुर चला गया था।

डॉक्टर, पैरा मेडिकल स्टाफ की गई जान तो देंगे 1-1 करोड़

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा, कोरोना का इलाज कर रहे डॉक्टर और पैरा मेडिकल स्टाफ भी आज सैनिकों की तरह देश सेवा कर रहे हैं। ऐसे में अगर कोरोना मरीजों का इलाज कर रहे किसी डॉक्टर, स्वास्थ्यकर्मी या चिकित्साकर्मी की मौत होती है तो दिल्ली सरकार उसके परिवार को भी एक-एक करोड़ की सम्मान राशि देगी। केजरीवाल ने कहा, उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये डॉक्टरों, नर्सों और सैनिटरी कर्मचारियों के साथ बातचीत की। सभी की ओर से उन्हें धन्यवाद दिया गया। वे हमारे लिए अपने जीवन को खतरे में डाल रहे हैं। भगवान न करे, अगर उनके साथ कुछ भी होता है तो उनके परिवार को अनुग्रह राशि के रूप में एक करोड़ रुपये दिए जाएंगे। केजरीवाल ने यह भी बताया कि हमने दैनिक आधार पर फाइव स्टार होटलों से डॉक्टरों व चिकित्सा कर्मचारियों के लिए भोजन की व्यवस्था की है, जो लोग घर लौटने में असमर्थ हैं, उनके लिए फाइव स्टार होटलों में ही ठहरने के लिए कमरों की व्यवस्था भी की गई है।

केजरीवाल ने बताया कि निर्माण क्षेत्र से जुड़े मजदूरों के खाते में पैसा जाना शुरू हो चुका है। करीब 35 हजार मजदूरों के खाते में पांच-पांच हजार रुपये डाले जा चुके हैं। कंपनियां सैलरी के बारे में कह रही हैं कि जब दफ्तर खुलेंगे और सैलरी का हिसाब होगा, तभी तो इसे दिया जाएगा। इसलिए कंपनियों के प्रतिनिधियों को दो दिनों के लिए पास देने का फैसला हुआ है। इस दौरान ये दफ्तर जाएंगे और सैलरी के लिए जरूरी कागजी औपचारिकता पूरा करेंगे। कंपनियों के मालिकों से कहा गया है कि किसी की सैलरी न काटें। शेष नौ हजार निर्माण मजदूरों के खाते में भी रकम जल्द भेज दी जाएगी। केजरीवाल ने कहा कि राशन कार्ड धारकों को साढ़े सात किलो राशन बांटने का काम शुरू हो चुका है। जिनका राशन कार्ड नहीं है, उन्हें भी हम राशन देंगे। ऐसे लोगों की तादाद 10 लाख के करीब हो सकती है। दिक्कत यह है कि बिना राशन कार्ड वालों को राशन कैसे देंगे? कोई दो या तीन बार तो नहीं लेगा? ऐसे कई सवाल थे। इसका एक रास्ता निकाला गया है। ऐसे लोग दिल्ली सरकार की वेबसाइट पर जाकर राशन कार्ड के लिए आवेदन कर दें, इससे राशन कार्ड मिलेगा ही, नहीं कह सकते, लेकिन इस दौरान राशन जरूर मिलेगा।

सरकारी अस्पताल के तीन डॉक्टर कोरोना की चपेट में

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

- दो सफदरजंग और एक आंबेडकर अस्पताल में हैं भर्ती
- दिल्ली में अब तक छह डॉक्टर हुए कोरोना से पीड़ित

कोरोना का संक्रमण बढ़ता जा रहा है। इसकी चपेट में सरकारी अस्पतालों के तीन रेजिडेंट डॉक्टर भी आ गए हैं। इनमें से दो डॉक्टर सफदरजंग अस्पताल में भर्ती हैं। दोनों पति-पत्नी हैं। इनके अलावा एक डॉक्टर को इलाज के लिए आंबेडकर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वह दिलशाद गार्डन स्थित दिल्ली राज्य कैंसर संस्थान में डॉक्टर हैं। इनकी जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। वह प्रिवेंटिव आंकोलॉजी विभाग में कार्यरत हैं। 23 मार्च को उन्होंने ओपीडी में मरीजों को भी देखा था। इसके अलावा 22 को उनकी वार्ड में ड्यूटी थी।

जहां कैंसर के कई मरीज भर्ती हैं। उन मरीजों को उन्होंने देखा भी था। उन्हें कोरोना का संक्रमण होने के बाद अस्पताल में ओपीडी सेवा बंद कर दी गई है। इसके अलावा वार्ड से मरीजों को भी हटाने की तैयारी है ताकि अस्पताल को सैनिटाइज किया जा सके।

पत्नी व दो माह का बच्चा भी भर्ती

कोरोना से पीड़ित दिल्ली राज्य कैंसर संस्थान के डॉक्टर की पत्नी और उनका दो माह का बच्चा भी भर्ती है। पत्नी व बच्चे को भी बुखार है। उन्हें संक्रमण कैसे हुआ यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। लेकिन बताया जा रहा है कि उनके बड़े भाई और भाभी इंग्लैंड से लौट कर आए हैं, लेकिन उन्हें यहां आए हुए एक माह से अधिक समय हो गया।

ऐसे में अंदेशा है कि किसी दूसरे के संपर्क में आने से उन्हें संक्रमण हुआ है। पीड़ित डॉक्टर के संपर्क में आए सभी कर्मचारियों व मरीजों को क्वारंटाइन करने का निर्देश दिया गया है।

वहीं, सरदार पटेल अस्पताल में कार्यरत एक रेजिडेंट डॉक्टर को भी कोरोना होने की पुष्टि हुई है। मंगलवार को उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई। उनकी पत्नी सफदरजंग अस्पताल में कार्यरत हैं। वह भी कोरोना से पीड़ित हैं। इन दोनों का इलाज सफदरजंग अस्पताल में चल रहा है। वे हाल ही में दुबई से लौट कर आए हैं। इससे पहले मोहल्ला क्लीनिक के दो डॉक्टर भी संक्रमित हैं। इसके अलावा मौजपुर में एक निजी डॉक्टर भी पीड़ित हैं। इस तरह अब तक छह डॉक्टर कोरोना से पीड़ित हो चुके हैं।

न्यूज गैलरी

दानिक्स अफसरों ने राहत कोष में दिया तीन दिन का वेतन

नई दिल्ली: कोरोना से निपटने के लिए दानिक्स अफसर भी आगे आए हैं। अफसरों ने कोरोना से लड़ने के लिए अपने तीन दिन का वेतन उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री राहत कोष में दान किया है। दानिक्स ऑफिसर एसोसिएशन के अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह परिहार ने इस बारे में दिल्ली सरकार के पे एंड एकाउंट विभाग को पत्र लिखकर मार्च माह के वेतन से तीन दिन का वेतन काट कर उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री राहत कोष में भेजने के लिए कहा है। (जासं)

जरूरतमंदों के लिए कांग्रेस ने किया टास्क फोर्स का गठन

नई दिल्ली : लॉकडाउन के दौरान प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अनिल चौधरी ने पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी के आदेश पर दिल्ली में जरूरतमंदों की मदद के लिए 21 सदस्यों की टास्क फोर्स का गठन किया है। पूर्व मंत्री किरण वालिया को इस टास्क फोर्स का अध्यक्ष बनाया गया है, जबकि पूर्व मंत्री नरेंद्र नाथ को संयोजक नियुक्त किया गया है। हारून युसूफ व अभिषेक दत्त को सह संयोजक बनाया गया है। इनके अलावा टीम में मुदित अग्रवाल, शिवानी चोपड़ा, मुकेश गोयल, तरुण कुमार, अमृता धवन आदि को भी शामिल किया गया है। (जासं)

संदीप बने वित्त सचिव, गीतांजलि की जगह संजीव की तैनाती

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

आनंद विहार में भीड़ जुटने के मामले में हटाए गए वित्त सचिव की जगह वरिष्ठ आइएएस संदीप कुमार की तैनाती की गई है। संजीव खैरवार को मंडलायुक्त की जिम्मेदारी सौंपी गई है। आनंद विहार मामले की जांच गृह मंत्रालय द्वारा कराई जा रही है। इसमें दिल्ली पुलिस से लेकर परिवहन विभाग तक के अधिकारियों की भूमिका की जांच की जा रही है।

उपराज्यपाल ने बुधवार को 1997 बैच के आइएएस संदीप कुमार को वित्त सचिव नियुक्त कर दिया। इस पद पर पहले राजीव वर्मा थे, जिन्हें 29 मार्च को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने निलंबित कर दिया था। वर्मा मंडलायुक्त की जिम्मेदारी भी संभाल रहे थे। मंडलायुक्त के पद पर मंगलवार को 1996 बैच की आइएएस गीतांजलि गुप्ता की तैनाती की गई थीं, लेकिन बुधवार को जारी नए आदेश में अब यह जिम्मेदारी 1994 बैच के आइएएस संजीव खिरवार को दे दी गई। वहीं उपराज्यपाल के निर्देश पर बुधवार को जारी आदेश में जी नरेंद्र को प्रधान सचिव कोऑपरेशन की जिम्मेदारी दी गई है। वह डीएससीएससी के सीएमडी का कार्यभार संभाल रहे थे। शहरी विकास विभाग के सचिव एच राजेश प्रसाद अब डीएससीएससी के सीएमडी की अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इससे पहले मंगलवार को जारी आदेश में शिक्षा विभाग के सचिव की जिम्मेदारी देख रहीं 1995 बैच की आइएएस मनीषा सक्सेना को परिवहन आयुक्त बनाया गया था। इस पद पर कार्यरत रेणु शर्मा को 29 मार्च को निलंबित कर दिया गया था।

परिवहन विभाग के अफसरों के खिलाफ केस दर्ज

जासं, नई दिल्ली : लॉकडाउन के बीच आनंद विहार बस अड्डे पर दूसरे राज्यों में जाने वाले लोगों की भीड़ जुटने के मामले में पुलिस ने परिवहन विभाग के अधिकारियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। हालांकि आरोपितों में किसी का नाम नहीं दिया गया है। आरोप है कि विभाग के अधिकारियों के इशारे पर काफी संख्या में लोग बसों से लाए गए थे। शकरपुर थाने के एसआइ मुकेश की शिकायत पर यह केस दर्ज किया गया है।

सोशल मीडिया के जरिये भाजपा सांसद कर रहे मदद की अपील

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : लॉकडाउन में लोगों की परेशानी कम करने के लिए भाजपा सांसद सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं। वे वाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर व अन्य माध्यमों के जरिये जरूरमदों की सहायता के लिए लोगों को आगे आने और पीएम केयर में सहयोग राशि देने की अपील कर रहे हैं।

भाजपा सांसदों ने सोशल मीडिया और वीडियो संदेश के जरिये लोगों से पीएम केयर फंड में 100-100 रुपये जमा करने की अपील की है। वे इसे देश हित में जरूरी बता रहे हैं। सांसदों ने अपने वीडियो संदेश में कहा है कि लोग अधिक से अधिक संख्या में पीएम केयर फंड में पैसे जमा करने के साथ ही अपने आसपास रहने वालों की मदद करें। पार्टी का दावा है कि उसके नेता, सांसद, विधायक व पार्षद अपने स्तर पर लोगों की सहायता कर रहे हैं। इसके साथ ही सेवा भारती के साथ मिलकर भी लोगों तक भोजन व अन्य जरूरी सुविधाएं पहुंचाई जा रही हैं। इसके लिए हेल्पलाइन नंबर 8010066066 जारी किया गया है। पार्टी के नेताओं का कहना है सोमवार दोपहर तक इस हेल्पलाइन नंबर पर 17941 कॉल आ चुकी हैं।

संवदेनशील स्थलों को सैनिटाइज करने के लिए फायर ब्रिगेड की मदद लें : एलजी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस और लॉकडाउन की स्थिति को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते उपराज्यपाल अनिल बैजल (दाएं)। सौ. राजनिवास

उपराज्यपाल अनिल बैजल ने दिल्ली के संवेदनशील सार्वजनिक स्थानों, क्वारंटाइन सेंटरों, अस्पतालों, कोरोना के रोगियों/ संदिग्ध रोगियों के आसपास के स्थानों को सैनिटाइज करने के लिए फायर ब्रिगेड की मदद लेने का निर्देश दिया है। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि सैनिटाइजेशन का यह कार्य जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की निगरानी में किया जाए।

बैजल ने बुधवार सुबह मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, मुख्य सचिव, स्वास्थ्य सचिव और अन्य अधिकारियों के साथ वीडियो कांफ्रेंस के जरिये दिल्ली में कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन के हालातों की समीक्षा बैठक की। बैठक में अतिरिक्त गृह सचिव, पुलिस आयुक्त, निदेशक (आइएलबीएस)/अध्यक्ष, एसटीएफ कोविड-19 और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

उपराज्यपाल ने कोविड-19 के मद्देनजर चिकित्सा तैयारियों, चिकित्सा उपकरणों की खरीद, (व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण- पीपीई, वेंटिलेटर, नेबुलाइजर, दवाएं, मास्क, परीक्षण किट आदि) मरीजों/होम क्वारंटाइन संबंधी दिशा-निर्देशों के पालन की भी समीक्षा की। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए कि क्वारंटाइन के बाद अपनाए जाने वाले नियमों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) बनाई जाए। उपराज्यपाल ने कोरोना से प्रभावित लोगों के व्यापक संपर्क की पहचान/ट्रैकिंग का भी आदेश दिया। उन्होंने होम क्वारंटाइन के अनुपालन और इसकी निगरानी के लिए टेक्नोलॉजी के उपयोग करने की सलाह दी। साथ ही होम क्वारंटाइन की निगरानी, शारीरिक दूरी का पालन, निराश्रितों के भोजन अथवा आश्रय भी सुनिश्चित करें।

बैजल ने जिला प्रशासन और दिल्ली पुलिस को यह निर्देश भी दिए कि होम शेल्टर/नाइट शेल्टर/खाद्य वितरण केंद्रों एवं इलाके के एटीएम इत्यादि का दौरा कर शारीरिक दूरी के मानदंडों का पालन सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान पुलिस आयुक्त ने बताया कि सड़कों पर घूम रहे अथवा बिना उचित कारण घर से बाहर निकले लोगों को आश्रय घरों तक पहुंचाने के लिए सभी थानों में डीटीसी बसों को तैनात किया गया है।

गुरुद्वारा में फंसे 205 लोग स्कूल में किए गए क्वारंटाइन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

गुरुद्वारा मजनूं का टीला में फंसे हुए 205 लोगों को बुधवार को वहां से निकालकर नेहरू विहार स्कूल में क्वारंटाइन कर दिया गया है। सभी लोग पंजाब के रहने वाले हैं। पंजाब सरकार ने दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (डीएसजीपीसी) से संपर्क किया है जिससे इन लोगों को सुरक्षित उनके घर पहुंचाया जा सके। वहीं, दिल्ली के सिख नेताओं ने डीएसजीपीसी के अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा की आलोचना की है। उनका कहना है कि पिछले दिनों सिरसा ने दिल्ली में फंसे हुए पंजाब के लोगों को बस के जरिये उनके घर तक पहुंचाने का आश्वासन दिया था। इसके बाद लोग यहां पहुंचे। गुरुद्वारा के जिस हॉल में इन्हें ठहराया गया था, उसे सील कर दिया गया है।

जग आसरा गुरु ओट (जागो) के अध्यक्ष मनजीत सिंह जीके का कहना है कि लोगों को घर पहुंचाने का काम प्रशासन का है न कि कमेटी का। झूठी शोहरत के लिए लोगों को खतरे में डालना ठीक नहीं है। वहीं, पार्टी के महासचिव परमिंदर पाल सिंह का कहना है कि डीएसजीपीसी ने 28 मार्च को यहां फंसे लोगों को पंजाब भेजने की घोषणा की थी। 29 मार्च को दो बसें रवाना भी हुईं। इसी बीच निजामुद्दीन का मामला सामने आने से कमेटी के अध्यक्ष सोशल मीडिया पर बयान जारी करके इन लोगों को यहां से निकालने की मांग करने लगे। यह संगत के साथ धोखा है।

इस बारे में मनजिंदर सिंह सिरसा का कहना है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पिछले दिनों दो बसें भेजकर यहां से कुछ लोगों को निकाला था। इस वजह से नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद आदि से चलकर कई लोग यहां पहुंच गए। इनमें से कोई भी व्यक्ति गुरुद्वारा में माथा टेकने नहीं आया था और न ही कोई कमेटी का कर्मचारी या उसका रिश्तेदार है। गुरुद्वारा के डॉक्टर इनकी रोज जांच करते थे। किसी में कोरोना के लक्षण नहीं पाया गया है। प्रशासन के कहने पर इन सभी लोगों को गुरुद्वारा से भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।

जेएनयू सुरक्षाकर्मी व छात्र आमने-सामने

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: लॉकडाउन के दौरान जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) ने अपने कैंपस के सभी गेटों को बंद कर रखा है। बुधवार रात विश्वविद्यालय के तापसी छात्रावास में रह रहे एक छात्र और सुरक्षाकर्मी में जेएनयू कैंपस से बाहर जाने को लेकर धक्का-मुक्की हो गई। इस पूरे प्रकरण का वीडियो वामपंथी छात्र संगठन आइसा की कार्यकर्ता मधुरिमा ने छात्रों के वाट्सएप ग्रुप में शेयर किया। मधुरिमा ने आरोप लगाया कि जेएनयू के छात्रावास में सही तरह का खाना नहीं मिल रहा है और व्यवस्था भी खराब है।

उन्होंने कहा कि जेएनयू के स्कूल ऑफ सोशल साइंस से लॉ एंड गवर्नेंस के शोधार्थी प्रणव को विश्वविद्यालय से बाहर जाना था। इस छात्र के पास अपने छात्रावास के वार्डन की अनुमति थी। फिर भी इसे बाहर जाने से रोका गया। छात्र जेएनयू कैंपस में अपने एक मित्र के पास जा रहा था। इसी बीच छात्र के साथ सुरक्षाकर्मी ने मारपीट की। वहीं जेएनयू के सुरक्षाकर्मियों का आरोप है कि आइसा से जुड़े छात्रों और इस छात्र ने बेहद ही असंवेदनशील रवैया अपनाया।

लॉकडाउन के उल्लंघन पर चार हजार लोग हिरासत में

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

लॉकडाउन के दौरान बुधवार को बिना कारण के घर से निकले चार हजार से अधिक लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया है। लॉकडाउन का उल्लंघन करने पर 249 एफआइआर दर्ज की गई। दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल के मुताबिक लॉकडाउन के बावजूद घरों से बाहर निकलने पर 4053 लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। इनमें बिना किसी जरूरी काम के घर से निकले 515 लोगों के वाहनों को जब्त कर लिया गया। मंगलवार देर रात से लेकर बुधवार शाम पांच बजे तक दिल्ली पुलिस ने सड़कों पर घूमते लोगों पर कार्रवाई की। लोगों को उनके घरों में रहने की सलाह भी दी जा रही है, लेकिन लोग मानने को तैयार नहीं हो रहे हैं।

उधर, दिल्ली पुलिस ने आवश्यक सेवा से जुड़े 1022 जरूरतमंद लोगों को मूवमेंट पास जारी किए। पास बनवाने वालों की भीड़ को देखते हुए ऑनलाइन पास भी जारी किए जा रहे हैं। मंगलवार को दिल्ली पुलिस की तरफ से 1254 लोगों को मूवमेंट पास जारी किए गए थे।

कोविड पेट्रोल बाइक से गश्त के लिए जाते दिल्ली पुलिस के जवान। एएफपी

40 कोविड पेट्रोल बाइक से लोगों को जागरूक करेगी पुलिस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से लोगों को बचाने के लिए लागू किए गए लॉकडाउन का पालन कराने और लोगों को जागरूक करने के लिए दिल्ली पुलिस ने 40 कोविड पेट्रोल बाइक लांच की हैं। ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने बुधवार को इन बाइकों को लांच किया। उन्होंने कहा कि दक्षिणी जिले में 40 कोविड पेट्रोल बाइक से पुलिसकर्मी लोगों को कोरोना वायरस से बचाव के लिए जागरूक करेंगे। इसके साथ ही मुनादी कर लोगों को लॉकडाउन का पालन करने और अपने घर में रहने की अपील की जाएगी। इस दौरान जो लोग बिना किसी खास कारण के सड़कों पर घूमते मिलेंगे, उन्हें निकट के शेल्टर होम में पहुंचाया जाएगा। पुलिस पिकेट सड़क व शहरी क्षेत्र में कहीं भी लोगों को एकत्र न होने देना सुनिश्चित करेगी।

खाने के साथ लोगों को राशन भी उपलब्ध करा रही पुलिस

जासं, नई दिल्ली: लॉकडाउन के दौरान दिल्ली पुलिस लोगों को खाना उपलब्ध कराने के साथ ही राशन भी बांट रही है। बुधवार को पुलिस ने एनजीओ के सहयोग से एक लाख 85 हजार से अधिक लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की। वहीं 6123 लोगों को राशन भी उपलब्ध कराया गया। इसके अलावा लोगों को सब्जी, आटा और सैनिटाइजर भी बांटे गए।

दिल्ली पुलिस ने सभी 15 जिलों में 250 स्थानों पर दोपहर और रात के भोजन की व्यवस्था की है। इसके लिए 400 एनजीओ की मदद ली जा रही है। वहीं नए पुलिस मुख्यालय से शुरू की गई हेल्पलाइन के जरिये अब तक आठ हजार से अधिक लोगों की मदद की जा चुकी है। दिल्ली पुलिस के हेल्पलाइन नंबर 23469526 पर अब तक 8303 कॉल मिली हैं। बुधवार को दोपहर दो बजे तक हेल्पलाइन नंबर पर 1053 कॉल आई। कंट्रोल रूम को 160 कॉल दिल्ली के बाहर से मिली। इन सभी कॉल को संबंधित राज्यों की हेल्पलाइन नंबरों पर भेजा गया है।

पहल

लॉकडाउन के चलते लोगों ने घर में ही हवन कर किया अष्टमी पूजन, उपहारों पर खर्च होने वाले रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष में करेंगे जमा

कन्या पूजन से किनारा, गरीबों की मदद कर रहे लोग

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

हर साल नवरात्र में अष्टमी और नवमी के दिन लोग श्रद्धापूर्वक कन्या पूजन करते थे, लेकिन इस बार कोरोना संकट के चलते लोग कन्या पूजन करने से बचते नजर आए। इसके स्थान पर वे गरीबों, गोशाला और प्रधानमंत्री राहत कोष में मदद करना ज्यादा उचित समझ रहे हैं। लोगों का कहना है कि वे लॉकडाउन का पूरी तरह से पालन कर रहे हैं। वहीं, मंदिर के पुजारियों का कहना है कि लोग घर में पूजन कर गरीबों को कन्याओं के नाम का भोजन करा सकते हैं।

दिल्ली के रहने वाले लोगों का कहना है कि बच्चियों को संक्रमण का खतरा हो सकता है। इससे बच्चियों को बचाने के लिए ही लोग कन्या पूजन करने से बच रहे हैं। अधिकतर लोग इसके स्थान पर गरीबों को खाने के पैकेट देने का विचार कर रहे हैं। साथ ही लोगों का कहना है कि वे कन्याओं के लिए हर साल दिए जाने वाले उपहारों के बदले प्रधानमंत्री राहत कोष में राशि जमा करेंगे। वहीं, मंदिर के पुजारियों की माने तो लोग मां भगवती की सच्चे मन से घर में पूजा करें और उनसे प्रार्थना करें कि भीषण बीमारी से लोगों की रक्षा करें। ऐसा पहली बार हो रहा है कि जब किसी बीमारी के कारण कन्या पूजन नहीं हो रहा है। लोग इसके स्थान पर जरूरतमंदों की मदद कर सकते हैं।

अष्टमी पर घर में ही हवन और पूजन किया है। साथ ही पहली बार ऐसा हुआ कि कन्या पूजन नहीं किया। इसके स्थान पर प्रधानमंत्री राहत कोष में मदद की है।
शिशुपाल सिंह, मयूर विहार

कोरोना के संक्रमण को देखते हुए इस बार कन्या पूजन नहीं करेंगे। साथ ही कॉलोनी के लोग भी पूजन के स्थान पर गरीबों और गोशाला में जाकर मदद करेंगे। वहीं, कन्याओं के उपहार के खर्च होने वाले रुपये को प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा करेंगे।
मुकेश शर्मा, चांदनी चौक

कोरोना के कारण मंदिर बंद हैं। ऐसे में लोग घर में ही मां अंबिका की पूजा कर कन्या पूजन के बजाय गरीबों और गोशाला में मदद कर सकते हैं। लोग चाहे तो प्रधानमंत्री राहत कोष में कन्याओं पूजन के नाम पर खर्च होने वाले रुपये जमा करा सकते हैं।
सुरेंद्र नाथ अवधूत, पीठाधीश्वर कालकाजी मंदिर

हमारे घर में नवमी की पूजा होती है। कोरोना वायरस के कारण इस बार कन्या पूजन नहीं करेंगे। इसके बदले गरीबों को भोजन कराया जाएगा।
विजय रस्तोगी, दरियागंज

सचिव स्तर के अफसर ने की डॉक्टर से अभद्रता

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमित मरीजों के उपचार में जुटे डॉक्टरों में सचिव स्तर के एक अफसर के व्यवहार को लेकर नाराजगी है। डॉक्टरों ने पुलिस को अनौपचारिक जानकारी देने के साथ ही अब गृह मंत्रालय और उपराज्यपाल से शिकायत करने की तैयारी कर ली है। डॉक्टरों का कहना है कि दिन-रात की मेहनत के बावजूद दिल्ली सरकार के अफसर ने जिस तरह का व्यवहार किया है, उसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है।

पुलिस अधिकारी के मुताबिक तब्लीगी मरकज में ठहरे लोगों का इलाज कर रहे चिकित्सकों में दिल्ली सरकार के सचिव स्तर के एक अधिकारी के खिलाफ नाराजगी है। डॉक्टरों का आरोप है कि अफसर ने 27 मार्च को स्वास्थ्य विभाग की उच्चाधिकारी से कहा था कि वह डॉक्टरों को तब्लीगी मरकज भेजकर बीमार लोगों को बाहर निकालकर अस्पताल में भर्ती कराएं। दूसरी तरफ मरकज में ठहरे लोग डॉक्टरों की बात मानने को तैयार नहीं थे। यही नहीं, वे हमलावर भी हो रहे थे। ऐसे में डॉक्टरों ने जब पर्याप्त सुरक्षा के बिना अंदर जाने से इन्कार कर दिया तो अफसर भड़क गए।

आरोप है कि उन्होंने डॉक्टरों से अभद्र भाषा का प्रयोग भी किया। इसे लेकर कोरोना के इलाज में जुटे चिकित्सकों में अफसर के प्रति नाराजगी है। उन्होंने पुलिस को औपचारिक सूचना देने के बाद इस मामले की शिकायत गृह मंत्रालय और उपराज्यपाल अनिल बैजल से करने की बात कही है। मामला हाई प्रोफाइल होने की वजह से फिलहाल सभी इस पर चुप्पी साधे हुए हैं।

214 लोगों को उत्तराखंड में बुधवार को गिरफ्तार किया गया है लॉकडाउन का उल्लंघन करने पर। यहां पिछले 10 दिनों में 2524 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है, जबकि 2449 वाहन सीज किए गए हैं।

चिकित्साकर्मियों को डब्ल्यूएचओ मान्य सुरक्षा किट पर सरकार से जवाब तलब

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- नागपुर के डॉक्टर की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में हुई अर्जेंट सुनवाई
- सॉलिसिटर जनरल के अनुरोध पर कोर्ट ने औपचारिक नोटिस नहीं किया जारी

सुप्रीम कोर्ट ने देश में कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए गंभीर परिस्थितियों में काम कर रहे डॉक्टर, नर्स और अन्य चिकित्साकर्मी को विश्व स्वास्थ संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा मान्य सुरक्षा किट और उपकरण उपलब्ध कराने की मांग वाली याचिका पर केंद्र सरकार से जवाब मांगा है।

जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एमआर शाह की पीठ नागपुर डॉक्टर जेरेल बैनेट की याचिका पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए सुनवाई कर रही थी। पीठ ने केंद्र सरकार की तरफ पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से अगले हफ्ते तक जवाब देने को कहा है। हालांकि कोर्ट ने याचिका पर कोई औपचारिक नोटिस नहीं जारी किया है।

याचिका में कहा गया है कि कोरोना संक्रमण के चलते चिकित्साकर्मी बहुत ही खतरनाक और गंभीर परिस्थितियों में काम कर रहे हैं। ऐसे में उनकी सुरक्षा का ख्याल रखा जाना चाहिए। डॉक्टरों, नर्सों व अन्य चिकित्साकर्मियों को डब्ल्यूएचओ द्वारा मान्य सुरक्षा किट जैसे सुरक्षा सूट व अन्य उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए। मेहता ने पीठ से कहा कि कोर्ट इस याचिका पर फिलहाल कोई नोटिस जारी न करे वे स्वयं मामले को देखेंगे। मेहता ने कहा कि एक दिन पहले भी ऐसी एक याचिका आई थी। इस पर कोर्ट ने याचिकाकर्ता के वकील से कहा कि वह याचिका की कापी सॉलिसिटर जनरल को दें।

पीपीई पर पीआइएल दाखिल : सुप्रीम कोर्ट में डॉक्टरों और अन्य चिकित्साकर्मियों के साथ ही सुरक्षाकर्मियों के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) की उपलब्धता सुनिश्चित करने की मांग को लेकर भी एक जनहित याचिका (पीआइएल) दायर की गई है। इसमें केंद्र के साथ ही सभी राज्य सरकारों को यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया है कि वो अपने यहां पीपीई की कमी की समस्या को जल्द से जल्द दूर करें।

मास्क-सैनिटाइजर की कालाबाजारी रोकने की मांग पर नोटिस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने कोरोना के चलते मास्क व सैनिटाइजर को तय कीमत पर ही बेचे जाने और इन चीजों की कालाबाजारी रोकने की मांग वाली जनहित याचिका पर केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। केंद्र को तीन अप्रैल तक जवाब देना है। मामले पर तीन अप्रैल को फिर सुनवाई होगी।

कोर्ट ने बुधवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये मामले पर तत्काल सुनवाई की। यह याचिका जस्टिस फॉर राइट्स फाउंडेशन संस्था के अध्यक्ष सत्यम सिंह ने दाखिल की है। याचिका में कहा गया है कि कोरोना महामारी के चलते मास्क और सैनिटाइजर जरूरी वस्तुओं में आते हैं। सरकार ने जरूरी वस्तु कानून के तहत उनकी कीमतें तय कर दी हैं ऐसे में उनकी बिक्री उन्हीं कीमतों पर सुनिश्चित कराई जाए और मास्क व सैनिटाइजर की कालाबाजारी रोकी जाए। याचिका में यह भी मांग की गई है कि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए मास्क और सैनिटाइजर मुफ्त में बंटा जाए। इसके लिए जगह-जगह वितरण केंद्र स्थापित किए जाएं।

याचिकाकर्ता का कहना है कि अगर किसी व्यक्ति को ये चीजें निर्धारित कीमत पर नहीं मिलती और दुकानदार ज्यादा कीमत मांगता है तो व्यक्ति उनकी संस्था की वेबसाइट पर सूचित कर सकता है। याचिका में कहा गया है कि सरकार द्वारा निर्धारित कीमत का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित कराए जाने की जरूरत है ताकि इस मुश्किल समय में लोगों को सही कीमत पर ये चीजें उपलब्ध हो सकें।

वित्तीय आपातकाल की मांग पर शीर्ष अदालत ने नहीं दिया कोई आदेश

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के खतरे को देखते हुए पूरे देश में समान व्यवस्था लाने के लिए वित्तीय आपातकाल लागू करने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कोई आदेश नहीं दिया। कोर्ट ने कुछ देर बहस सुनने के बाद मामले की सुनवाई अदालत के नियमित कामकाज शुरू होने तक स्थगित कर दी।

सेंटर फॉर अकाउंटैबिलिटी एंड सिस्टेमिक चेंज (सीएएससी) संस्था ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर कोर्ट से कोरोना महामारी के चलते देश में पैदा हुई स्थितियों को देखते हुए संविधान के अनुच्छेद 360 (3) के तहत वित्तीय आपातकाल घोषित करने की मांग की थी। बुधवार को न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली पीठ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये मामले पर सुनवाई की। वकील विराग गुप्ता ने याचिका पर पक्ष रखते हुए कहा कि कोरोना संकट के चलते पूरे देश में एक समान व्यवस्था लागू करने की जरूरत है। ऐसे में केंद्र सरकार राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए जो भी आदेश जारी कर रही है, उन्हें संविधान के अनुच्छेद 360 (3) के तहत जारी किया जाए। इस अनुच्छेद में वित्तीय आपातकाल घोषित करने का प्रावधान है। ऐसा करने से केंद्र के आदेश राज्यों पर बाध्यकारी होंगे।

पीठ विराग गुप्ता के तर्कों से बहुत सहमत नहीं दिखी। कोर्ट ने कहा कि वे जो बातें कहना चाहते हैं, उसके बारे में सरकार को ज्ञापन दे सकते हैं। वकील ने कहा कि कोर्ट उनकी याचिका को ज्ञापन की तरह सरकार को भेज दे। बाद में कोर्ट ने बगैर कोई आदेश दिए मामले की सुनवाई तबतक स्थगित कर दी, जबतक कि अदालत का कामकाज सामान्य नहीं हो जाता।

बाबा साहब और जगजीवन राम जयंती के कार्यक्रम स्थगित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना के खतरे को देखते हुए सरकार ने बाबा साहब भीमराव आंबेडकर और बाबू जगजीवन राम की जयंती पर होने वाले आयोजनों को स्थगित कर दिया है। साथ ही स्वयंसेवी संस्थाओं से भी भीड़-भाड़ वाले आयोजनों से परहेज करने को कहा है। सरकार ने यह फैसला तब लिया है, जब इसी माह पांच अप्रैल को बाबू जगजीवन राम और 14 अप्रैल को बाबा साहब का जन्मदिन है। खास बात यह है कि इस आयोजनों को धूमधाम से मनाने के लिए सरकार की ओर से हर साल निजी संस्थानों और स्वयंसेवी संगठनों को वित्तीय मदद भी दी जाती है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास आठवले ने लोगों से इस मौके पर भीड़भाड़ भरे आयोजन न करने की सलाह दी है। साथ ही कहा कि सभी लोग घर पर रहकर ही बाबा साहब को श्रद्धांजलि दे। उन्होंने पार्टी के पदाधिकारियों को इस पर गंभीरता से अमल करने को कहा है। बता दें कि रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आरपीआइ) देश भर में बाबा साहब के जन्मदिन पर कार्यक्रम आयोजित करती है। आंबेडकर फाउंडेशन व बाबू जगजीवन राम फाउंडेशन से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक, कोरोना संक्रमण के चलते गृह मंत्रालय की ओर जारी एडवाइजरी को देखते हुए जयंती पर बड़े स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को स्थगित किया गया है।

कोरोना पीड़ितों के इलाज के लिए सेना तैनात करेगी 8,500 डॉक्टर

रणनीति ▶ सैन्य प्रमुखों के साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की समीक्षा बैठक

अपने अस्पतालों के नौ हजार बेड भी वायरस से पीड़ित लोगों के लिए किए आरक्षित

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से थल सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवाने से कोरोना वायरस के रोकने के उपायों पर चर्चा की। एएनआइ

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना के संक्रमण को बढ़ते देखकर सेना ने अपने 8,500 से अधिक डॉक्टरों व चिकित्साकर्मियों को इस संक्रमण से निपटने के काम में लगा दिया है। साथ ही अपने अस्पतालों के नौ हजार से अधिक बेड भी केवल कोरोना पीड़ितों के लिए रखे हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बुधवार को इस वैश्विक महामारी से मुकाबले के लिए कई गई तैयारियों की समीक्षा के बाद अधिकारियों ने बताया कि प्रशासन की मदद के लिए 25 हजार से अधिक एनसीसी कैडेटों को भी बतौर स्वयंसेवकों तैनात किया जा रहा है। ऐसा संक्रमण से प्रभावित लोगों की तादाद के बढ़ते जाने के चलते किया जा रहा है। राजनाथ सिंह ने वीडियो क्रांफ्रेंसिंग के जरिये सशस्त्र बलों के सर्वोच्च अधिकारियों के साथ बैठक करके तीनों सेनाओं और रक्षा मंत्रालय के विभिन्न विभागों के योगदान की गहन समीक्षा की। रक्षा मंत्रालय की ओर से जारी बयान के अनुसार, सिंह ने इस वैश्विक महामारी से निपटने के लिए सशस्त्र सेनाओं को नागरिक प्रशासन की मदद को दोगुना करने को कहा है। केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों और संगठनों से तालमेल बढ़ाकर इस दिशा में हर कठिनाई को दूर करने को कहा है। बैठक में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत, नौसेना प्रमुख करमबीर सिंह, वायुसेना प्रमुख आरकेएस भदौरिया, थलसेना प्रमुख जनरल एमएम नरवाने और रक्षा सचिव अजय कुमार समेत कई वरिष्ठ अफसर मौजूद थे। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि बैठक में जनरल रावत ने कहा कि कोरोना से संक्रमित लोगों के इलाज के लिए अलग अस्पतालों की व्यवस्था की गई है। इसमें 9 हजार से अधिक बेड होंगे।

जनरल नरवाने ने रक्षामंत्री को बताया कि 8500 से अधिक डॉक्टर और चिकित्सा स्टाफ को केवल कोरोना पीड़ितों के इलाज में लगाया जाएगा। यह लोग नागरिक प्रशासन की पूरी सहायता करेंगे।

इसी तरह नौसेना प्रमुख ने बताया कि जरूरत पड़ने पर स्टैंडबाइ के तौर पर नौसैनिक जहाज भी तैयार रखे गए हैं। स्थानीय प्रशासन की नौसेना भी सहायता कर रही है। वायुसेना के मुखिया एयरचीफ मार्शल भदौरिया ने कहा कि वायुसेना ने चिकित्सकी वस्तुओं और उपकरणों की आपात आपूर्ति के लिए पिछले पांच दिनों से कई विमान तैयार रखे हैं। रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के चेयरमैन सतीश रेड्डी ने बताया कि संगठन ने वेंटिलेटर में मामूली बदलाव करके उसे एक मशीन में एक ही समय में चार मरीजों की देखरेख की व्यवस्था की है। सुरक्षा बलों के लिए 1.5 लाख लीटर सैनिटाइजर बनाया है। पांच लेयर वाले दस हजार मास्क तैयार किए हैं। जल्द ही 20 हजार मास्क और तैयार किए जाएंगे।

कोरोना पर आज मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक करेंगे प्रधानमंत्री

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- लॉकडाउन के बाद पहली बार वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये होगी बैठक
- इससे पहले 20 मार्च को भी पीएम ने की थी मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। फाइल

कोरोना वायरस की चेन तोड़ने के लिए लागू किए गए लॉकडाउन का एक हफ्ता बीतने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ विचार-विमर्श करेंगे। माना जा रहा है कि गुरुवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये होने वाली बैठक में कोरोना वायरस के खिलाफ जंग की मौजूदा स्थिति, विभिन्न राज्यों में फंसे घर लौट रहे लोगों के लिए चलाए जा रहे राहत कार्यों के साथ-साथ तब्लीगी जमात के लोगों के विभिन्न राज्यों में जाने से उत्पन्न खतरे पर भी चर्चा होगी।

लॉकडाउन लागू होने के बाद पहली बार प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों की बैठक होने जा रही है। इससे पहले 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दो दिन पहले 20 मार्च को प्रधानमंत्री ने राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग की थी। उस समय उन्होंने कोरोना के वैश्विक खतरे के प्रति मुख्यमंत्रियों को आगाह करते हुए पूरे देश को एकजुट होकर इसका सामना करने की जरूरत बताई थी। 24 मार्च की मध्य रात्रि से पूरे देश में लॉकडाउन लागू होने के बाद राज्यों को घर-गांव लौट रहे लोगों से लेकर कई तरह की समस्याओं से जूझना पड़ा। वैसे कैबिनेट सचिव और गृह सचिव लगातार राज्यों के मुख्य सचिवों और डीजीपी के साथ बातचीत कर हालात की समीक्षा कर रहे हैं। साथ ही स्थिति से निपटने के लिए हर दिन नए कदम उठाए जा रहे हैं। लेकिन कोरोना के खिलाफ सामूहिक लड़ाई में राजनीतिक नेतृत्व की एकजुटता ज्यादा जरूरी है। इसे देखते हुए प्रधानमंत्री की मुख्यमंत्रियों के साथ होने वाली यह बैठक अहम मानी जा रही है। सबसे बड़ी बात यह है कि सभी मुख्यमंत्री केंद्र सरकार के साथ एकजुटता दिखाते हुए कोरोना के खिलाफ लड़ाई को सफल बनाने की कोशिश में जुटे हैं। उम्मीद है कि सभी मुख्यमंत्री पिछले एक हफ्ते के लॉकडाउन के अपने अनुभवों को साझा करते हुए राज्यों के सामने आ रही दिक्कतों को भी प्रधानमंत्री के साथ साझा करेंगे।

भारत-चीन के बीच राजनयिक रिश्तों के 70 वर्ष पूरे

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- पीएम मोदी और राष्ट्रपति चिनफिंग ने दिए बधाई संदेश, कोरोना के कारण नहीं हो पा रहा समारोहों का आयोजन

भारत और चीन के बीच कूटनीतिक संबंधों को 70 वर्ष पूरे हो गए हैं। दोनों देशों ने पहली अप्रैल, 2020 को कूटनीतिक संबंध स्थापित होने की 70वीं वर्षगांठ मनाई। इस अवसर पर दोनों देशों के शासनाध्यक्षों ने एक-दूसरे को बधाई दी। दोनों देशों के विदेश मंत्रियों ने भी एक-दूसरे को संदेश भेजा। हालांकि कोरोना संकट के चलते इस वर्षगांठ के मौके पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों पर असर दिख रहा है।

पीएम नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच चेन्नई के मामल्लपुरम में हुई मुलाकात में इस वर्षगांठ के मौके पर 70 तरह के कार्यक्रमों के आयोजन पर सहमित बनी थी। मोदी ने चीन के प्रधानमंत्री ली कछ्यांग को भेजे संदेश में लिखा, भारत-चीन सिर्फ दो पुरानी सभ्यताएं ही नहीं हैं बल्कि एक-दूसरे को मदद करने का हमारा काफी लंबा इतिहास रहा है। आज हम दोनों दो बड़े विकासशील देश हैं जो वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दोनों देशों के बीच शांतिपूर्ण रिश्ते इस क्षेत्र व समूचे विश्व में शांति व सद्भाव के लिए जरूरी हैं। मोदी ने कहा, कोविड-19 के कारण आज दुनिया पहले से ज्यादा जुड़ी हुई है और हमें इसका सामना करने के लिए सही मायने में वैश्विक रणनीति बनानी चाहिए। मोदी ने कहा, वह दोनों देशों के रिश्तों को नई ऊंचाई पर ले जाने को तैयार हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी चीनी विदेश मंत्री वांग यी को बधाई संदेश भेजा चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को भेजे संदेश में कहा, दोनों देशों ने 70 वर्षों में ऐतिहासिक रास्ता तय किया है। शांति व विकास के साथ एक रणनीतिक साझेदारी स्थापित हुई है। विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और तेज हो रहा है। उन्होंने कहा है कि वह भारत के साथ रिश्तों को बहुत ज्यादा महत्व देते हैं और इस रिश्ते को नई मंजिल की तरफ ले जाने को तैयार हैं।

अस्पताल से लेकर आर्थिक मोर्चे के इंतजामों ने खोला आगे का रास्ता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- सरकार की तरफ से 1.7 लाख करोड़ के राहत पैकेज का किया गया एलान
- आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई बनाए रखने के लिए अलग तंत्र बना
- मजदूरों-कामगारों को रोकने के लिए की गई कई घोषणाएं
- नकदी के इस्तेमाल को कम करने के लिए ई-ट्रांजेक्शन चार्ज खत्म किया गया

पिछले एक सप्ताह में सरकार की तरफ से किए गए व्यापक इंतजाम की बदौलत ही लॉकडाउन के आगे का रास्ता कामयाबी की ओर बढ़ता दिख रहा है। लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए सरकार ने अस्पताल लेकर आर्थिक मोर्चे पर कई व्यापक इंतजाम किए। आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई निर्बाध गति से जारी रखने के लिए एक अलग तंत्र विकसित किया गया। श्रमिकों को घर लौटने से रोकने के लिए उन्हें हर प्रकार की मदद का भरोसा दिया गया और उस दिशा में कई घोषणाएं की गईं। हालांकि, इस दौरान कुछ मजदूर, कामगार और छोटी-छोटी कंपनियों के कर्मचारी अपने घरों को भी लौटे।

लोगों को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए ई-कॉमर्स कंपनियों के साथ सभी जरूरी सामान के विक्रेताओं को विशेष छूट दी गई। आवश्यक वस्तुओं की बिक्री के दौरान भी प्रसार-प्रचार के माध्यम से एक प्रणाली विकसित की गई ताकि संपर्क से होने वाली इस महामारी को फैलने से रोका जा सके। नकदी के कम से कम इस्तेमाल के लिए ई-ट्रांजेक्शन के चार्ज को समाप्त किया गया और सीमित तरीके से बैंकिंग प्रणाली को जारी रखा गया।

सरकार ने लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए कई नियम बदल डाले तो 31 मार्च को समाप्त होने वाले कई नियमों की तारीख को तीन महीने का विस्तार दे दिया। इनमें इनकम टैक्स से लेकर जीएसटी रिटर्न तक शामिल है। कंपनियों को अपने कार्यकलापों के लिए समय सीमा में विस्तार दे दिया गया। महामारी से लड़ने के लिए मास्क, सैनिटाइजर के पर्याप्त इंतजाम के साथ 22 लाख स्वास्थ्य सेवाकर्मियों के लिए 50-50 लाख रुपए के इंश्योरेंस की घोषणा की गई, ताकि उनका मनोबल कायम रहे। श्रमिकों को घर लौटने से रोकने के लिए सरकार की तरफ से सामूहिक स्तर पर खाने-रहने की व्यवस्था की गई ताकि आगामी 14 अप्रैल तक दिहाड़ी मजदूर अपना जीवनयापन कर सकें। सभी गरीबों को तीन-तीन महीने के लिए मुफ्त में चावल-दाल और गेहूं देने की घोषणा की गई। खाना बनाने के लिए मुफ्त में गैस सिलेंडर देने के साथ उनके खाते में 500-500 रुपए भी देने का एलान किया गया। इन सब के लिए सरकार की तरफ से 1.7 लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज का एलान किया गया। लोगों को घरों तक सीमित रखने के लिए पुलिसिया अंदाज को बिल्कुल नए कलेवर में पेश किया गया। रौब के लिए मशहूर पुलिस वाले जरूरत पड़ने पर हर प्रकार की मदद के लिए तत्पर दिख रहे हैं।

जेईई-एडवांस्ड की परीक्षा टली

- मौजूदा हालात को देखते हुए टाली गई परीक्षा, 17 मई को देशभर में होना था आयोजन

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना के कारण उपजी परिस्थितियों में देश की 23 आइआइटी के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा जेईई-एडवांस्ड को फिलहाल टाल दिया गया है। आइआइटी दिल्ली के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। यह परीक्षा 17 मई को आयोजित होनी थी। कोरोना के कारण जेईई-मेन की परीक्षा को पहले ही टाला जा चुका है। अधिकारी ने बताया कि मौजूदा हालात को देखते हुए जेईई-एडवांस्ड की परीक्षा को टाल दिया गया है। इस परीक्षा की नई तारीख जेईई-मेन की तारीख निश्चित होने के बाद तय होगी। जेईई-मेन का आयोजन देशभर के इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश के लिए किया जाता है। इसे जेईई-एडवांस्ड के लिए क्वालिफाइंग एक्जाम भी माना जाता है। जेईई-मेन का आयोजन मई के आखिरी सप्ताह मे होने की बात कही गई है।

प्लेसमेंट पर असर न पड़ने दें : निशंक : इस बीच, मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने देश की विभिन्न आइआइटी को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि कोरोना के कारण छात्रों के प्लेसमेंट पर कोई प्रभाव नहीं पड़े। 23 आइआइटी प्रमुखों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग में निशंक ने इस संबंध में टास्क फोर्स बनाने का भी निर्देश दिया।

निशंक ने कहा, 'यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोरोना के चलते इस साल होने वाला प्लेसमेंट पिछले वर्षों की तुलना में कम नहीं हो। इस संबंध में कंपनियों से बात करने के लिए टास्क फोर्स का गठन किया जा सकता है। संस्थानों के अकादमिक कैलेंडर भी इस तरह से तैयार किए जाने चाहिए ताकि छात्रों को समर या विंटर इंटर्नशिप का नुकसान नहीं हो।' मंत्री ने कहा कि लॉकडाउन के कारण बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को भी संस्थान ध्यान में रखें। उन्होंने इस संबंध में हेल्पलाइन स्थापित करने का भी सुझाव दिया।

विरोध

चिदंबरम ने कहा- 30 जून तक बहाल की जाएं पुरानी दरें, कोरोना संकट में जीडीपी की चिंता के बजाय लोगों की जिंदगी बचाना अहम

बचत ब्याज दरें घटाने पर कांग्रेस ने सरकार पर साधा निशाना

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

पी चिदंबरम। फाइल

पीपीएफ और एनएससी समेत तमाम सरकारी छोटी बचत योजनाओं के ब्याज दर में कटौती को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कटौती को वापस लेने की मांग की है। पार्टी ने कहा है कि कोरोना से गहराए आर्थिक संकट में इन बचत योजनाओं के ब्याज दरों में कटौती से आमलोगों की मुश्किलें और बढ़ेंगी। साथ ही यह भी कहा है कि संकट के इस दौर में आर्थिक विकास की गति से ज्यादा अहम लोगों की जिंदगी बचाना है।

कांग्रेस नेता और पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदंबरम ने पीपीएफ, सुकन्या, वरिष्ठ नागरिक बचत योजना, एनसीसी समेत सभी सरकारी बचत योजनाओं के ब्याज दर में एक फीसद से अधिक तक की कटौती पर ट्वीट के जरिये प्रतिक्रिया जाहिर की है। उन्होंने कहा कि छोटी बचत योजनाओं पर ब्याज दर कम करना तकनीकी रूप से सही हो सकता है। पर मौजूदा वक्त ऐसा करने की बिल्कुल इजाजत नहीं देता। उनके मुताबिक, अनिश्चित आय और गंभीर संकट के समय में लोग अपनी बचत पर मिलने वाले ब्याज पर निर्भर करते हैं। ऐसे में सरकार को तुरंत पुनर्विचार करना चाहिए और मौजूदा हालत को देखते हुए 30 जून तक पुरानी ब्याज दरों को बहाल करना चाहिए। सरकार पर कटाक्ष करते हुए चिदंबरम ने कहा, 'मुझे पता है कि कभी-कभी सरकार बेवकूफी भरी सलाह पर काम करती है, लेकिन मैं हैरान हूं कि यह सलाह कितनी बेवकूफी भरी है।' कोरोना और लॉकडाउन से बढ़ी आर्थिक चुनौतियों से वाकिफ होने का संकेत करते हुए चिदंबरम ने कहा, 'मेरे विचार में हमें अब विकास की चिंता नहीं करनी चाहिए। किसी भी कीमत फोकस लोगों के जीवन को बचाने पर होना चाहिए।' कोरोना की आर्थिक चुनौती के लिए राहत सहायता के 1.70 लाख करोड़ रुपये के पैकेज को अपर्याप्त बताते हुए कांग्रेस नेता ने दो दिन पहले सरकार से दूसरे बड़े आर्थिक पैकेज की मांग की थी। आर्थिक पैकेज की दूसरी किस्त की घोषणा नहीं करने के सरकार के रुख पर उन्होंने अपनी निराशा भी जताई।

कांग्रेस प्रवक्ता जयवीर शेरगिल ने भी प्रेस कांफ्रेंस कर ब्याज दरों के घटाने के फैसले की आलोचना करते हुए कहा, इससे 30 करोड़ लोगों की बचत प्रभावित हुई है। इस कटौती से मध्यम वर्ग, पेंशनर, किसान, महिलाएं, वरिष्ठ नागरिक समेत सभी लोगों को मुश्किल होगी। वहीं, कपिल सिब्बल ने सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, यहां दो भारत हैं। एक में लोग घर में बैठकर योग कर रहे, अंताक्षरी खेल रहे और रामायण देख रहे हैं। दूसरे में लोग अपने घर पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं और अस्तित्व को बचाने का संघर्ष कर रहे हैं।

भाजपा का जवाब, यह नियमित आलोचनाओं का समय नहीं

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र सरकार के फैसलों पर कांग्रेस की आलोचनाओं पर तंज करते हुए सत्तारूढ़ दल भाजपा ने कहा कि यह रोजमर्रा के राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का समय नहीं है। उन्होंने कहा कि कोरोना की वैश्विक महामारी का सबको एकजुट होकर मुकाबला करना चाहिए। भाजपा के प्रवक्ता नलिन कोहली ने बुधवार को कहा कि जब कोरोना की वैश्विक महामारी को परास्त करने के लिए सबको एकजुट होने का समय आया है तो कांग्रेस पार्टी केंद्र सरकार की रोजमर्रा की आलोचना करने में व्यस्त है।

नलिन कोहली। फाइल

कह के रहेंगे माधव जोशी

कोरोना संकट बढ़ाने वाली तब्लीगी जमात

भारत में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच जिस नाम की सबसे ज्यादा चर्चा है, वो है तब्लीगी जमात। निजामुद्दीन के तब्लीगी मरकज में आयोजित धार्मिक जलसे में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इसके बाद कई लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हुए और अब तक कई लोगों की मौत हो चुकी है। इसके बाद से ही तब्लीगी जमात प्रशासन के निशाने पर है और इसमें शामिल होने वाले लोगों की तलाश जारी है। तब्लीगी जमात ऐसे लोगों का समूह है, जो मुस्लिम धर्म का प्रचार-प्रसार के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं। यह पहली बार नहीं है जब यह चर्चा में है। इससे पहले भी कई बार तब्लीगी जमात विवादों में रही है। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि इसका मकसद क्या है? किसने इसकी स्थापना की और किन विवादों के चलते यह पहले भी विरोध झेल चुकी है।

मोहम्मद इलियास कांधलवी

तब्लीगी जमात की स्थापना

तब्लीगी जमात की स्थापना 1927 में हुई। उस दौर में यह सुधारवादी धार्मिक आंदोलन के रूप में अस्तित्व में आई और इसकी स्थापना करने वाले मोहम्मद इलियास कांधलवी थे। यह सुन्नी मुसलमानों का संगठन है। 1941 में जमात के पहले जलसे में करीब 25 हजार लोग शामिल हुए थे। उस वक्त भारत का बंटवारा नहीं हुआ था। पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी बड़ी संख्या में लोग जमात से जुड़े हैं। तब्लीगी जमात दुनिया के 20 करोड़ मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है।

मुजफ्फरनगर से जुड़ा इतिहास

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के कांधला गांव में मोहम्मद इलियास कांधलवी का जन्म हुआ था। कांधला गांव का होने के कारण नाम में कांधलवी लगाया जाता है। शुरुआत में स्थानीय मदरसे में पढ़ाई की और उसके बाद दिल्ली के निजामुद्दीन आ गए। जहां पर उन्होंने कुरान को कंठस्थ किया और अरबी-फारसी की किताबों को पढ़ा। इस्लाम का अध्ययन कर नामचीन इस्लामिक हस्ती रशीद अहमद गंगोही के साथ ही रहने लगे। कांधलवी देवबंदी विचारधारा से प्रभावित थे। 1908 में उन्होंने दारुल उलूम में दाखिला लिया। काफी सालों बाद उन्होंने दिल्ली की बंगलावाली मस्जिद में जमात की स्थापना की।

मेवात को बनाया कार्यक्षेत्र

इलियास कांधलवी ने हरियाणा के मेवात को सबसे पहले अपना कार्यक्षेत्र बनाया। सहारनपुर के मदरसा मजाहिरुल उलूम में पढ़ाना छोड़कर वे मेवात के मुसलमानों के बीच जा पहुंचे। जहां पर इस्लाम के प्रचार प्रसार में जुट गए। मेवात को कार्यक्षेत्र बनाने के पीछे उनका मकसद यहां के मुसलमानों का मिशनरी के प्रभाव में आकर के मुस्लिम धर्म को छोड़ने से रोकना था। 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में कई मुसलमानों ने मुस्लिम धर्म छोड़ दिया था, जिसके कारण कांधलवी ने यहां पर कार्य करना शुरू किया।

मरकज बिल्डिंग • जागरण

निजामुद्दीन में है मरकज

निजामुद्दीन में स्थित तब्लीगी मरकज जमात का मुख्यालय है। मरकज का शाब्दिक अर्थ केंद्र होता है। देश के जमातियों के एकत्रित होने के स्थान को मरकज कहा जाता है। यहां पर देश-विदेश से जमातें आती हैं। मरकज के अध्यक्ष मौलाना साद हैं। यहां पर हर गुरुवार को दीनी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसमें दिल्ली के साथ ही अन्य जगहों से भी लोग आते हैं। यहां तक कि बहुत से लोग विदेश से भी आते हैं।

कहां-कहां केंद्र

तब्लीगी जमात को जानने वालों के अनुसार इसके 140 देशों में सेंटर हैं। आजादी के बाद यह दुनिया के दूसरे हिस्सों तक फैला। भारत के साथ पाकिस्तान और बांग्लादेश में इससे जुड़े लोगों की बहुत बड़ी संख्या है। वहीं अमेरिका और ब्रिटेन तक में लोग इससे जुड़े हैं। वहीं मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया जैसे देशों में भी लोग जमात के अनुयायी हैं। हालांकि सऊदी अरब में जमात पर प्रतिबंध है।

ऐसे काम करती है जमात

जमात समूह को कहते हैं। इस संगठन से जुड़ी जमात में पांच या पांच से ज्यादा लोग होते हैं और धर्म प्रचार के लिए किसी खास क्षेत्र को चुना जाता है। इसके बाद ये लोग अलग-अलग अवधि के लिए धर्म प्रचार करने के लिए दूसरी जगहों पर जाते हैं। यह अवधि तीन दिन, 40 दिन, चार महीने की होती है। इस तरह की यात्रा को गश्त कहा जाता है। वहीं जमात के मुखिया को अमीर ए जमात कहा जाता है। ये लोग मस्जिदों में ही रुकते हैं। दुनिया के दूसरे देशों में भी जमात जाती है। धर्म प्रचार के कार्य में जुटे ये लोग खुद को पूरी तरह से तब्लीगी जमात को सौंप देते हैं। जमात की अवधि पूरी होने पर वह तब्लीगी मरकज जाते हैं। तब्लीगी जमात का शाब्दिक अर्थ निकाला जाए तो यह धर्म के प्रति आस्था और विश्वास को लोगों में फैलाने वाला समूह होता है।

छह हैं सिद्धांत

तब्लीगी जमात के छह सिद्धांत होते हैं। इनकी शिक्षाओं में ऐसी ही बातें होती हैं। इनमें अल्लाह पर भरोसा करना, नमाज पढ़ना, धर्म से संबंधी बातों को बढ़ावा देना, मुसलमानों द्वारा एक दूसरे की मदद करना, हमेशा अपनी नीयत को साफ रखना और रोजमर्रा के कामों से दूर रहना जैसे सिद्धांत पेश किए गए हैं। जमात का मकसद मुसलमानों तक पहुंचकर उनकी आस्था को इस्लाम और उसकी परंपराओं को खासतौर पर आयोजन, पोशाक और व्यवहार के स्तर पर बनाए रखना है।

ऐसे होता है संचालन

तब्लीगी जमात के संचालन का कोई परिभाषित ढांचा नहीं है। हालांकि मूल रूप से इसका नेतृत्व अमीर द्वारा किया जाता है, जो कि शूरा (परिषद) की अध्यक्षता करते हैं। यह संगठन का केंद्र है और महत्वपूर्ण मामले इन्हीं द्वारा देखे जाते हैं। 1965 से 1995 तक तीसरे अमीर रहे मौलाना इनामुल हसन कंधालवी के बाद अमीर की पदवी को समाप्त कर दिया गया। इसके बाद आलमी शूरा(अंतरराष्ट्रीय सलाहकार परिषद) को नियुक्त किया गया।

विवादों में जमात

भारत में जमात के जलसे में शामिल हुए कई लोगों में कोरोना वायरस के संक्रमण की पुष्टि हुई है। वहीं पाकिस्तान के रायविंड में 10-12 मार्च को जमात का जलसा हुआ था। जलसे में शामिल कुछ लोगों के कोरोना की पुष्टि हुई थी। कई लोगों ने पाकिस्तान में भी जमात पर प्रतिबंध की मांग की है। भारत में कई संगठनों ने जमात की आलोचना की है और इस पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। हालांकि यह हालिया विवाद हैं, जिसने जमात की कार्यशैली पर सवालिया निशान लगाया है। इससे पहले, आतंकी संगठनों के साथ जुड़ाव के आरोप भी जमात पर लगते रहे हैं।

कोरोना संक्रमितों की संख्या 19 सौ के पार

प्रकोप ▸ देशभर में एक दिन में 310 नए मामले सामने आए, तब्लीगियों की संख्या 186

उत्तर प्रदेश में पहली मौत, गोरखपुर में युवक और मेरठ में बुजुर्ग ने तोड़ा दम

नई दिल्ली, एजेंसियां : दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके के मरकज में जमा हुए तब्लीगी जमात के सदस्यों ने देश में कोरोना वायरस के संक्रमण की रफ्तार को बेकाबू कर दिया है। एक दिन में तीन सौ से ज्यादा नए मामले सामने आए हैं, जिनमें अकेले पौने दो सौ से ज्यादा तब्लीगी ही हैं। देशभर में संक्रमितों की संख्या 19 सौ को पार कर गई है। तीन लोगों की मौत हुई है, जिसमें दो लोग उत्तर प्रदेश के हैं। उत्तर प्रदेश में कोरोना से ये पहली मौतें हैं। महाराष्ट्र में एक महिला ने दम तोड़ दिया है। मरने वालों का आंकड़ा 49 पर पहुंच गया है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्यों के स्वास्थ्य विभागों के मुताबिक संक्रमितों की संख्या में तेजी से जो बढ़ोत्तरी देखने को मिल रही है वो तब्लीगी जमात में शामिल लोगों के चलते है। एक दिन के भीतर संक्रमण के 310 मामले आए हैं, जिनमें से 186 तब्लीगी जमात के सदस्य हैं। देश में अभी तक संक्रमितों की संख्या 1903 हो गई है। इनमें 47 विदेशी, 49 मृतक और 132 स्वस्थ हो चुके लोग भी शामिल हैं।

तमिलनाडु में 110 नए मामले सामने आए हैं। एक दिन में देश के किसी भी राज्य में अब तक मिले नए मामलों की यह सबसे बड़ी संख्या है। ये सभी तब्लीगी जमात में शामिल हुए थे। इनको मिलाकर राज्य में 234 संक्रमित हो गए हैं।

आंध्र प्रदेश में 43 नए संक्रमित पाए गए हैं। ये भी तब्लीगी जमात से लौटे थे। इनको मिलाकर राज्य में संक्रमितों की संख्या 87 हो गई है। दिल्ली में 32 नए मामले सामने आए हैं, जिनमें 29 तब्लीगी हैं। इनको मिलाकर संक्रमितों की संख्या 152 हो गई है। असम में चार नए मामले सामने आए हैं। इनको मिलाकर राज्य में संक्रमितों की संख्या पांच हो गई है और ये सभी भी तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल होकर लौटे थे।

महाराष्ट्र में 33 नए मामले सामने आए हैं और राज्य में संक्रमितों की संख्या 335 पहुंच गई है। नए मामलों में मुंबई से 13 केस शामिल हैं। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने संक्रमितों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई है, उनका कहना है कि पांच हजार से ज्यादा लोग अत्यधिक जोखिम की श्रेणी में हैं। इन सभी लोगों को क्वारंटाइन किया गया है।

मध्य प्रदेश में भी 21 नए मामले मिले हैं और राज्य में संक्रमितों का आंकड़ा 87 पर पहुंच गया है। केरल में 24 नए केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 265 हो गई है। गुजरात में आठ नए मामले सामने आए हैं और राज्य में कुल 82 संक्रमित हो गए हैं। इसी तरह बंगाल में 10 नए केस मिले हैं और 37 संक्रमित हो गए हैं। कर्नाटक में चार नए केस सामने आए हैं और संख्या 105 हो गई है। एक नए मरीज के साथ बिहार में संक्रमितों की संख्या 23 हो गई है। 15 नए केस के साथ राजस्थान में 108 संक्रमित और तीन नए मामले के साथ उत्तर प्रदेश में अभी तक कुल 107 संक्रमित पाए गए हैं, इनमें अकेले गौतमबुद्धनगर में 48 मामले हैं। प्रदेश में पहली दो मौतें हुई हैं। गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में बस्ती के रहने वाले 25 साल के युवक की मौत हुई है, जबकि मेरठ में 72 साल के व्यक्ति ने दम तोड़ दिया है। यह व्यक्ति महाराष्ट्र के अमरावती से लौटे अपने दामाद के संपर्क में आने पर संक्रमित हुआ था। चंडीगढ़ में दो नए केस मिले हैं।

नई दिल्ली के निजामुद्दीन में स्थित उस मस्जिद के आसपास के क्षेत्र को बुधवार को सैनिटाइज किया गया, जिसमें तब्लीग-ए-जमात के मरकज में हिस्सा लेने वाले लोग ठहरे थे। प्रेट्र

कोरोना का प्रसार

राज्य	संक्रमित	राज्य	संक्रमित
महाराष्ट्र	335	बंगाल	37
केरल	265	बिहार	23
तमिलनाडु	234	लद्दाख	13
दिल्ली	152	चंडीगढ़	15
उप्र	107	अंडमान-निकोबार	10
कर्नाटक	105	छत्तीसगढ़	9
राजस्थान	108	उत्तराखंड	7
तेलंगाना	77	गोवा	5
गुजरात	82	असम	5
मप्र	87	हिमाचल प्रदेश	3
जम्मू-कश्मीर	55	ओडिशा	3
पंजाब	46	पुडुचेरी	1
आंध्र प्रदेश	87	मणिपुर	1
हरियाणा	29	मिजोरम	1
		झारखंड	1

निजामुद्दीन मरकज के अब तक 53 लोग पाए गए संक्रमित

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : निजामुद्दीन तब्लीगी मरकज से निकाले गए अब तक 53 लोग कोरोना से पीड़ित पाए गए हैं। इनमें 29 लोगों की रिपोर्ट बुधवार को पॉजिटिव आई। यहां से निकाले गए 2346 लोगों में से 1810 लोग सात क्वारंटाइन केंद्रों में रखे गए हैं, जबकि अन्य 536 विभिन्न अस्पतालों में भर्ती हैं। इनमें 483 संदिग्ध हैं। बुधवार को इन जमातियों में शामिल मलेशिया के एक बुजुर्ग की मौत हो गई है।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार पहले 24 लोग पॉजिटिव पाए गए थे। बुधवार को यह संख्या बढ़कर 53 पहुंच गई। इनमें से छह मरीज एम्स के झज्जर स्थित राष्ट्रीय कैंसर संस्थान (एनसीआइ) में हैं। बाकी सभी मरीज राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में भर्ती हैं। क्वारंटाइन में रखे गए लोगों में कोरोना के लक्षण आने पर अस्पताल में स्थानांतरित किया जाएगा। नरेला में फ्लैट में बने क्वारंटाइन केंद्र में 987 लोगों को रखा गया है। द्वारका में 200, सुल्तानपुरी डीडीए फ्लैट में 170, बक्करवाला डीडीए फ्लैट में 120, होटल में सात व स्कूल में 157 लोगों को रखा गया है। हालांकि दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने ट्वीट कर कहा कि करीब 36 घंटे में वहां से 2,361 लोगों को निकाला गया है। इनमें 617 अस्पताल में भर्ती हैं।

जमात के साथ यात्रा करने वाले हजारों की हो रही निगरानी

नई दिल्ली, प्रेट्र : रेलवे ने तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल होने वाले लोगों के साथ पांच ट्रेनों में सफर करने वाले हजारों यात्रियों के बारे में सूचनाएं जुटानी शुरू कर दी है। दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम में शामिल होने आए तब्लीगी जमात के लोगों में से कई में कोरोना वायरस की पुष्टि हो चुकी है।ये ट्रेनें 13 से 19 मार्च के बीच दिल्ली से अन्य स्थानों के लिए रवाना हुई थीं। इनमें आंध्र प्रदेश के गुंटूर जाने वाली दूरंतो एक्सप्रेस, चेन्नई जाने वाली ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस, नई दिल्ली-रांची राजधानी एक्सप्रेस, चेन्नई जाने वाली तमिलनाडु एक्सप्रेस और आंध्र प्रदेश संपर्क क्रांति एक्सप्रेस शामिल हैं।

हालांकि, रेलवे के पास इन ट्रेनों में यात्रा कर रहे जमातियों के संपर्क में आने वाले लोगों के बारे में सटीक जानकारी नहीं है, लेकिन सूत्र बताते हैं कि एक ट्रेन में 1000-1200 यात्री व कर्मचारी सफर करते हैं। राज्यों के अधिकारी बताते हैं कि रेलवे की तरफ से जिला प्रशासन को उपलब्ध कराई गई यात्रियों की सूची का जमात की सूची से मिलान किया जा रहा है, ताकि उनके संपर्क में आए यात्रियों के बारे में जानकारी जुटाई जा सके। जिन यात्रियों के बारे में पता लगाया जा रहा है, उनमें एक मामला 10 इंडोनेशियाई से संबंधित है जो 13 मार्च को आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस से करीमनगर गए थे और कोरोना संक्रमित पाए गए हैं।

इसके अलावा नई दिल्ली-रांची राजधानी एक्सप्रेस के बी-1 बोगी में यात्रा करने वाले 60 यात्रियों की निगरानी करते हुए उनके मौजूदा ठिकाने के बारे में जानकारी हासिल की जा रही है। 16 मार्च को इसी बोगी में यात्रा कर रही एक इंडोनेशियाई महिला कोरोना संक्रमित पाई गई है। उसके साथ 23 यात्री भी सफर कर रहे थे। माना जा रहा है कि महिला जमात के कार्यक्रम में शामिल हुई थी।

सूचना के अनुसार, जमात के कार्यक्रम में शामिल होकर 18 मार्च को दूरंतो एक्सप्रेस में अपने दो सहयोगियों के साथ यात्रा करने वाले दो लोग कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। इसी प्रकार ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस में दो नाबालिगों के साथ यात्रा करने वाले दो और तमिलनाडु एक्सप्रेस से यात्रा करने वाली एक जोड़ी संक्रमित पाई गई है।

मरकज में जुटे थे देश के तब्लीगी

राज्य	संख्या (लगभग)
तमिलनाडु	1500
गुजरात	1500
तेलंगाना	1200
हिमाचल प्रदेश	700
उत्तर प्रदेश	569
हरियाणा	500
राजस्थान	500
असम	456
कर्नाटक	350
महाराष्ट्र	250
बिहार	162
मध्य प्रदेश	107
छत्तीसगढ़	100
बंगाल	70
उत्तराखंड	48
ओडिशा	4
अरुणाचल प्रदेश	1

मौलाना साद सहित सात लोग नामजद

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज में लॉकडाउन के दौरान जमात को ठहराने के मामले में दर्ज मुकदमे की जांच पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने क्राइम ब्रांच को सौंप दी है। पुलिस ने इस मरकज के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद समेत सात मौलानाओं को नामजद करते हुए अज्ञात लोगों के खिलाफ भी केस दर्ज किया है। नामजद मौलानाओं में मुहम्मद अशरफ, मुफ्ती शरजाद, डॉ. जीशान, मुरसलीन सैफी, यूनुस व मु. सलमान भी शामिल हैं। ये सभी अलग-अलग राज्यों के मस्जिदों में मौलाना हैं। जांच में जिनकी भूमिका सामने आएगी उन्हें आरोपित बनाया जाएगा। दबाव बढ़ने पर 28 मार्च से ही फरार मौलाना साद की तलाश में छापेमारी हो रही है।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक बार-बार चेतावनी देने के बावजूद मौलाना साद ने जब मरकज को खाली नहीं कराया तब 25 मार्च को एसडीएम और पुलिस ने मेडिकल टीम बुलाकर वहां ठहरे लोगों की जांच कराई थी। उस दिन एक भी कोरोना संक्रमित नहीं मिला था। 26 मार्च को मेडिकल टीम नहीं आई। 27 मार्च को दोबारा मेडिकल टीम ने जांच की तब छह लोग कोरोना संक्रमित पाए गए। इसके बाद पुलिस का दबाव बढ़ने पर मुहम्मद साद ने यूट्यूब पर ऑडियो संदेश वायरल कर पुलिस और प्रशासन पर आरोप लगाया कि कोरोना के बहाने मुस्लिमों को नमाज पढ़ने से रोका जा रहा है। बताया जाता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने टेलीफोन पर साद से बात की और सुरक्षा कारणों से मरकज को खाली कराने का अनुरोध किया। फिर भी मरकज के मौलानाओं पर कोई असर नहीं हुआ। 28 मार्च की शाम को मौलाना साद मरकज से फरार हो गया।

मूलरूप से मुजफ्फरनगर (उप्र) के कांधला के रहने वाले मौलाना साद का दिल्ली में जाकिर नगर, निजामुद्दीन बस्ती और एक अन्य जगह पर घर है। पुलिस इन तीनों जगहों पर छापेमारी कर चुकी है, लेकिन वह नहीं मिला। पुलिस की एक टीम ने कांधला में भी छापेमारी की। पुलिस को शक है कि वह भूमिगत हो गया है। संभव है उसने खुद को क्वारंटाइन कर रखा हो।

वायरल ऑडियो में कहा, एक साथ पढ़ें नमाज

जासं, नई दिल्ली : तब्लीगी मरकज के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद का एक कथित ऑडियो वायरल हो रहा है। इसमें वह सरकार के शारीरिक दूरी बनाए रखने के आदेश को मुस्लिम समुदाय के खिलाफ एक साजिश बता रहा है। कह रहा है कि यह अल्लाह पर यकीन न रखने वालों की चाल है।

आडियो में साद कह रहा है कि बीमारी से बचाने के बहाने मुसलमानों को रोकने और बिखेरने की तरकीब ढूंढ ली गई है, ताकि उनके दिल में हमेशा के लिए यह बात बैठ जाए कि किसी के पास मत जाओ, किसी के पास मत बैठो, नहीं तो बीमारी लग जाएगी। आज अगर इस बीमारी की वजह से मुसलमानों की अकीदा (आस्था) बदल जाती है तो बीमारी तो खत्म हो जाएगी, लेकिन अकीदत (भक्ति) खत्म नहीं होगी। यह तो मुसलमानों के बीच शक पैदा करने और मोहब्बत खत्म करने के लिए एक प्रोग्राम तैयार किया गया है।

योगी बोले-मानवता के खिलाफ साजिश बर्दाश्त नहीं

जेएनएन, नई दिल्ली

उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उन तब्लीगी जमातियों पर नजरें टेढ़ी की हैं, जिन्होंने लॉकडाउन का अनुशासन भंग कर देश-प्रदेश में संकट बढ़ा दिया। योगी ने कहा कि मानवता के खिलाफ साजिश बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बुधवार को योगी ने कहा कि जमात से वापस आए लोगों की युद्ध स्तर पर तलाश करके उनकी पड़ताल की जाए। जिन लोगों ने तथ्यों को छुपाया है, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। बता दें निजामुद्दीन के तब्लीगी जमात में शिरकत कर कई लोग देश के कई राज्यों में पहुंच चुके हैं। कुछ की पहचान कर ली गई है, तो कुछ अभी तक अनट्रेस हैं। जो मिले गए हैं उन्हें क्वारंटाइन या आइसोलेट किया जा रहा है।

569 लोग उप्र में क्वारंटाइन : तब्लीगी जमात में शामिल लोगों में कोरोना संक्रमण और उनमें कई संदिग्ध के उप्र में आने की सूचनाओं के बाद हड़कंप है। ऐसे लोगों की तलाश में दो हजार से अधिक ऐसे जमाती भी सामने आए हैं जो विभिन्न जिलों में ठहरे हुए थे। इनमें बड़ी संख्या में विदेशी थे। इस बीच तब्लीगी जमात में शरीक हुए 569 लोगों को विभिन्न जिलों में क्वारंटाइन किया गया है। अब तक की कार्रवाई में जो 218 विदेशी नागरिक सामने आए हैं, वे अलग-अलग समय पर टूरिस्ट वीजा पर प्रदेश में आए थे। इनमें कई जमात में भी शरीक हुए हैं।

झारखंड के मंत्री का बेटा भी हुआ था शामिल : झारखंड के मंत्री हाजी हुसैन अंसारी के बेटे मुहम्मद तनवीर के भी इस जमात में शामिल होने की खबर से सनसनी फैल गई है। पुलिस तनवीर के घर पहुंची और तनवीर को क्वारंटाइन कर दिया। हालांकि तनवीर ने जमात में शामिल होने से इन्कार किया है। मंत्री और उनके बेटे समेत उनके पूरे परिवार को क्वारंटाइन कर दिया गया है। झारखंड के अलग-अलग हिस्सों से 36 लोग इस जमात में शामिल हुए थे।

बिहार में एटीएस का अभियान : तब्लीगी मरकज से बिहार लौटकर यहां-वहां फैल गए लोगों को खोजने के लिए बुधवार को बिहार पुलिस की स्पेशल ब्रांच और एटीएस की टीम ने विशेष जांच अभियान चलाया। यहां आने वाली जमात में बिहार के निवासियों के अलावा 32 बांग्लादेश के, चार मलेशिया, चार थाईलैंड, 13 इंडोनेशिया, दो किर्गीस्तान, एक ऑस्ट्रेलिया और एक म्यांमार के नागरिक हैं। 86 की पहचान के बाद क्वारंटाइन करने के लिए सभी सिविल सर्जन को नाम-पता मोबाइल नंबर उपलब्ध कराए गए हैं। बिहार आने वाले लोगों की कुल संख्या अब 162 बताई जा रही थी। पड़ताल के दौरान अररिया में 60 और लोगों के बारे में पता चला। वहीं, औरंगाबाद में पुलिस ने एक मस्जिद में छापेमारी कर 10 लोगों को हिरासत में लिया है।

बंगाल में 54 का पता चला : बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि तब्लीगी जमात में शामिल होने वाले 54 लोगों को मंगलवार को ही होम क्वारंटाइन में भेज दिया गया है। इन 54 में से 40 विदेशी हैं, जो म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया से आए थे। ये सभी कोलकाता और आसपास के मस्जिदों में रह रहे थे। तब्लीगी जमात में बंगाल से 71 लोगों के शामिल होने के बारे में राज्य सरकार को इनपुट मिला था।

हिमाचल से 701 लोग गए : दिल्ली के निजामुद्दीन में हिमाचल के 701 लोगों के होने की सूचना है। गृह मंत्रालय से मिली इनकी सूची के बाद हिमाचल सरकार हरकत में आ गई है। ये लोग तब्लीगी जमात से संबंधित हैं। इनके मोबाइल फोन की टावर लोकेशन निजामुद्दीन के आस-पास की है। इनके मोबाइल फोन नंबरों को सर्विलांस पर रखा गया है।

हरियाणा में भी पहुंचे 503 जमाती : मंगलवार तक हरियाणा सरकार के पास करीब 200 जमातियों के हरियाणा में इंट्री करने की सूचना थी, लेकिन गृह विभाग को बुधवार को पता चला कि यह संख्या 503 है। इनमें अधिकतर तमिलनाडु और नेपाल से हैं, जबकि 72 लोग विदेशी हैं।

राजस्थान के 13 जिलों में 500 से ज्यादा लोग : मरकज में शामिल लोगों में से 538 के राजस्थान में पहुंचने की सूचना है। सरकार इन सबकी स्क्रीनिंग करा रही है।

उत्तराखंड में 18 पर मुकदमा : विभिन्न जमातों से बिना प्रशासन को सूचित किए बीते उत्तराखंड में एक सप्ताह में आने वाले 18 लोगों पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। वहीं जमात में शामिल होने गए थे 26 लोगों की पहचान कर ली गई है और सभी दिल्ली में ही क्वारंटाइन किए गए हैं।

अल्पसंख्यक आयोग ने कहा, निजामुद्दीन सम्मेलन ने किया नुकसान: राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सैयद घायोरुल हसन रिजवी ने जोर देकर कहा है कि निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के सम्मेलन से कोविड-19 महामारी के खिलाफ सरकार के प्रयासों को बड़ा नुकसान पहुंचा है।

तब्लीगी जमात के जबरन अमीर बने थे मौलाना साद

मनीष शर्मा, मुजफ्फरनगर

तब्लीगी जमात के निजामुद्दीन मरकज के साथ एक शख्स और सुर्खियों में है। यह हैं मौलाना साद। पूरा नाम मौलाना मुहम्मद साद वल्द मौलाना हारुन मूल निवासी कांधला जिला-शामली (पूर्व में मुजफ्फरनगर) उप्र। जिस देवबंदी विचारधारा से प्रेरित होकर तब्लीगी जमात की बुनियाद पड़ी, मौलाना साद और उनके विचार इसके ही विरोध में खड़े हो गए। यही कारण रहा कि दारुल उलूम देवबंद ने भी माना कि मौलाना साद की कुरान और हदीस से जुड़े भाषणों में उनकी निजी राय शामिल रहती है। इतना ही नहीं तब्लीगी जमात का अमीर (मुखिया) बनने की खातिर मौलाना साद ने सारे नियम-कायदे ध्वस्त कर दिए।

कांधला के मुहम्मद इस्माइल के घर जन्मे मौलाना इलियास कांधलवी ने देवबंदी विचारधारा से प्रेरित होकर 1927 में तब्लीगी जमात की स्थापना की। उनके इंतकाल के बाद उनके बेटे मौलाना यूसुफ तब्लीगी जमात के अमीर बने। मौलाना यूसुफ के बाद जमात की अमीरीयत उनके बेटे मौलाना हारुन को मिलनी थी, लेकिन उनका बेवक्त इंतकाल हो गया। ऐसे में मौलाना कांधलवी के भांजे मौलाना इनाम उल हसन को जमात की बागडोर मिली। बाद में उनके बेटे मौलाना जुबैरउल हसन अमीर बने। यहीं से तब्लीगी जमात का सिरमौर बनने का असल द्वंद्व शुरू हुआ।

दरअसल, मौलाना हसन ने जमात के संचालन के लिए एक दस सदस्यीय शूरा कमेटी गठित कर दी। 1995 में मौलाना असन का इंतकाल हो गया। सूरा कमेटी काम करती रही, लेकिन मौलाना साद को यह मंजूर नहीं था। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के रायविंड मरकज के मौलाना मुहम्मद अब्दुल वहाब की बनाई 13 सदस्यीय शूरा को दरकिनार कर संस्थापक मौलाना इलियास के पड़पोते मौलाना साद ने 2015 में खुद को तब्लीगी जमात का अमीर घोषित कर दिया।

मुखिया होने को लेकर उठते रहे सवाल, विवादित रहे साद : तब्लीगी जमात का अमीर बनने को लेकर मौलाना साद हमेशा कटघरे में रहे हैं। दारुल उलूम नदवातुल उलमा के जैद मजाहिरी ने इस पर तब्लीगी जमात का 'बहम इख्तिलाफ और इत्तेहाद ओ इत्तेफाक' (किताब का नाम-विवाद और भाईचारा) में विस्तार से इस बारे में लिखा है। इतना ही नहीं दारुल उलूम देवबंद ने छह दिसंबर 2016 और दो मार्च 2018 को मौलाना साद के विरोध में बयान जारी किए। ऑनलाइन जारी बयान में स्पष्ट लिखा गया कि जांच में यह सिद्ध हो चुका है कि कुरान और हदीस का व्याख्यान मौलाना साद अपने नजरिए से करते हैं।

कहीं पश्चिम उत्तर प्रदेश में तो नहीं छिपे हैं साद

तब्लीगी जमात के अमीर मौलाना साद। सौ : सोशल मीडिया

तब्लीगी जमात की पुख्ता पैठ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिलों में है। गृह जनपद होने के कारण शामली और मुजफ्फरनगर में तब्लीगी जमात की जड़ें बेहद गहरी हैं। निजामुद्दीन मरकज में तब्लीगी जमात में जिले से गए 28 लोग इसका पुख्ता प्रमाण हैं। पुलिस सूत्रों की मानें तो मौलाना साद की खोजबीन अंदरखाने यहां भी जारी है।

मंडल के जिलों से निजामुद्दीन मरकज में गए जमातियों को तलाशा जा रहा है। पुलिस पूरी तरह सतर्क है। मौलाना साद के संबंध में अभी दिल्ली पुलिस ने संपर्क नहीं किया है। यदि दिल्ली पुलिस सूचित करती है तो पूरी सहायता की जाएगी।
-उपेंद्र अग्रवाल, डीआइजी सहारनपुर रेंज

जमात का काम मौलाना इलियास कांधलवी ने भटके हुए लोगों को सही राह पर लाने के लिए शुरू किया था। इस मिशन में लोग निस्वार्थ भाव से जुड़ते थे, लेकिन 2013 के बाद इस जज्बे में कमी आने से समाज का जिम्मेदार तबका व ज्यादातर उलमा इकराम मौजूदा जमात प्रबंधन से कन्नी काटने लगे हैं।
-मौलाना खालिद जाहिद, इमाम व शायर

तब्लीगी जमात की बुनियाद लोगों को इस्लाम और दीन की शिक्षा देने के लिए हुई थी। मौलाना इनाम उल हसन साहब के अमीर रहने तक सब सही चलता रहा। बाद में अमीरीयत को लेकर तब्लीगी जमात में विवाद शुरू हो गए। देवबंदी विचारधारा से जमात की पैदाइश हुई और दारुल उलूम ने ही इनके खिलाफ बयान दिया था। **-मुफ्ती जुल्फिकार, प्रदेश अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश इमाम संगठन**

जमात देवबंदी विचारधारा की, लेकिन उलूम से जोड़ना गलत

जेएनएन, लखनऊ

उप्र में इस्लामी शिक्षा के प्रमुख केंद्रों की निजामुद्दीन मरकज के तब्लीगी जमात को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। दारुल उलूम, देवबंद यह तो मानता है कि तब्लीगी जमात देवबंदी विचारधारा वाली है लेकिन वे इसे उलूम से जोड़ने को भी गलत मानते हैं। वहीं लखनऊ में नदवा के सचिव हालात के लिए दिल्ली सरकार को जिम्मेदार ठहराते हैं। वहीं बरेली मसलक ने मस्जिद में बड़ी संख्या में जमात के लोगों के ठहरने को गलत ठहराया है।

बरेलवी मसलक ने मस्जिदों में ठहरने को गलत ठहराया : बरेलवी मसलक के जिम्मेदार तब्लीगी जमात के मस्जिदों में ठहरने को गलत ठहराते हैं। विरोध की वजह यह भी थी कि जमात के लोग दारुल उलूम देवबंद के करीबी माने जाते थे। बरेली में जमात का केंद्र शहर में बांस मंडी की एक मस्जिद है। दरगाह आला हजरत से जुड़े बड़े लोग फिलहाल विवाद पर चुप्पी साधे हैं लेकिन दरगाह प्रमुख मौलाना सुब्हान रजा खां के छोटे भाई कारी तसलीम रजा खां का कहना है कि तब्लीगी जमात के लोग पैसा कमाने में लगे हैं। उन्हें मुल्क की फिक्र नहीं है।

दारुल उलूम के मोहतमिम मुफ्ती अबुल कासिम नौमानी ने कहा कि कोरोना की लड़ाई किसी वर्ग या धर्म की नहीं बल्कि पूरी इंसानियत की लड़ाई है। जिन लोगों ने कोरोना संक्रमण फैलने के बाद एक राज्य से दूसरे राज्य या फिर एक जिले से दूसरे जिले की यात्रा की है और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कोई शिकायत है तो वे तुरंत अपनी जांच कराएं। जिस तरह से हाल में मरकज निजामुद्दीन का मसला उठाया जा रहा है, वह गैर मुनासिब है। जिस प्रकार दारुल उलूम को जमात मामले से जोड़ा जा रहा है, वह भी गलत है।

भारत में कोरोना के 10 हॉटस्पॉट

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सरकार इस समय 10 जगहों पर ध्यान केंद्रित कर रही है। हाल के दिनों में इन जगहों से कोरोना के सबसे ज्यादा मामले सामने आए हैं। इनमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश, केरल और महाराष्ट्र की दो-दो जगहें और गुजरात व राजस्थान की एक-एक जगह है। आइए कोरोना संक्रमण का हॉटस्पॉट बनी इन जगहों पर डालते हैं एक नजर :

दिल्ली

निजामुद्दीन : दक्षिणी दिल्ली का निजामुद्दीन इलाका पिछले कुछ दिन से बहुत चर्चा में है। यहां तब्लीगी जमात के मरकज में शामिल होने आए लोगों में बड़े पैमाने पर कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई है। इनके कारण अकेले दिल्ली में 24 कोरोना पॉजिटिव मिले हैं, जबकि 441 लोगों को लक्षण दिखने के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मरकज में हिस्सा लेकर लौटे तेलंगाना के छह लोगों की मौत हो चुकी है।

दिलशाद गार्डन : उत्तर पूर्वी दिल्ली के दिलशाद गार्डन में सऊदी अरब से लौटी एक महिला कोरोना पॉजिटिव पाई गई थी। उससे उसकी बेटी और दो रिश्तेदारों को भी कोरोना हो गया। महिला मोहल्ला क्लीनिक भी गई थी, जहां डॉक्टर संक्रमित हो गया। डॉक्टर से उसकी पत्नी को भी संक्रमण हो गया। पुष्टि होने से पहले डॉक्टर ने कई अन्य मरीजों का भी इलाज किया था। ऐसे में और भी मामले आने की आशंका है।

उत्तर प्रदेश

नोएडा : उत्तर प्रदेश में कोरोना के सबसे ज्यादा मामले गौतमबुद्ध नगर जिले से सामने आए हैं। यहां तीन दर्जन से ज्यादा लोग पॉजिटिव पाए गए हैं। इनमें से करीब दो दर्जन मामले नोएडा की एक निजी कंपनी से जुड़े हैं। फिलहाल इस कंपनी को सील कर दिया गया है और इसके संचालकों पर लोगों की जान खतरे में डालने का मामला दर्ज किया गया है। नोएडा व ग्रेटर नोएडा में इस समय करीब दो हजार लोग निगरानी में हैं।

मेरठ : उत्तर प्रदेश में मेरठ दूसरा हॉटस्पॉट बनकर सामने आया है। यहां करीब 20 मामले पॉजिटिव पाए गए हैं। यहां सोमवार को 17 सैंपल जांचे गए थे, जिनमें से छह पॉजिटिव पाए गए। इनमें से चार एक ही परिवार के हैं।

महाराष्ट्र

मुंबई : मुंबई में अब तक करीब 200 पॉजिटिव केस आए हैं। यहां कोरोना के कारण आठ लोगों की जान भी जा चुकी है। यहां राज्य स्वास्थ्य विभाग ने वर्ली के कोलीवाड़ा और गोरेगांव को हॉटस्पॉट घोषित किया है। महाराष्ट्र में पॉजिटिव मामलों की कुल संख्या 300 पार हो गई है।

पुणे : मंगलवार तक पुणे में करीब चार दर्जन पॉजिटिव केस आ चुके थे। महाराष्ट्र के पहले दो मामले पुणे में ही सामने आए थे। यहां विदेश से लौटे और उनके करीबियों को मिलाकर 3,500 से ज्यादा लोगों को होम क्वारंटाइन किया गया है।

केरल

कासरगोड : केरल का कासरगोड देश में कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित इलाकों में से है। यहां अब तक करीब 100 लोगों में वायरस की पुष्टि हो चुकी है। करीब 8,000 लोग निगरानी में हैं और डेढ़ सौ से ज्यादा लोगों को आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है।

पतनमथिट्टा : केरल के इस इलाके में पॉजिटिव मामले तो अभी कम हैं, लेकिन यहां 7,000 से ज्यादा लोगों को निगरानी में रखा गया है। ऐसे में यहां अगले कुछ दिनों में कोरोना के पॉजिटिव मामले सामने आने की आशंका है।

गुजरात

अहमदाबाद: गुजरात में अब तक सबसे ज्यादा मामले अहमदाबाद से आए हैं। यहां अब तक दो दर्जन लोगों में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई है। यहां अब तक कोरोना से तीन लोगों की जान भी जा चुकी है। इसे हॉटस्पॉट घोषित करते हुए स्थानीय प्रशासन ने पॉजिटिव पाए गए मरीजों के घर के तीन किलोमीटर तक के दायरे को पूरी तरह बंद कर दिया है। यहां स्वास्थ्य कर्मियों के अलावा किसी को भी आने-जाने की जरूरत नहीं है।

राजस्थान

भीलवाड़ा : भीलवाड़ा में अब तक दो दर्जन से ज्यादा लोगों में संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है। पॉजिटिव पाए गए दो लोगों की जान भी जा चुकी है। यहां सबसे पहले एक निजी अस्पताल के डॉक्टर में संक्रमण का पता चला था। अब जितने मामले सामने आए हैं, उनके से ज्यादातर अस्पताल के स्टाफ या डॉक्टर के संपर्क में आए मरीज हैं।

न्यूज गैलरी

मप्र में लापरवाही पर हटाए गए आयुक्त स्वास्थ्य सेवाएं

भोपाल: कोरोना संक्रमण से बचाव में दिन-रात एक कर रही मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार ने लापरवाही बरतने पर बड़ा कदम उठाते हुए आयुक्त, स्वास्थ्य सेवाएं प्रतीक हजेला को हटा दिया है। उनकी जगह मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव फैज अहमद किदवई को यह प्रभार अतिरिक्त रूप से सौंपा गया है। सीएम ने कोरोना वायरस से बचाव की समीक्षा बैठक के बाद हजेला को तत्काल हटाने के निर्देश दिए थे। (नईदुनिया)

वायुसेना ने की 25 टन चिकित्सा सामग्री की आपूर्ति

नई दिल्ली : कोरोना वायरस को हराने के लिए जारी लॉकडाउन के बीच भारतीय वायुसेना ने पिछले तीन दिनों में दिल्ली, सूरत और चंडीगढ़ से मणिपुर, नगालैंड व केंद्रशासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख में आवश्यक चिकित्सा सामग्री की आपूर्ति की है। वायुसेना ने एक बयान में बताया कि जिन चिकित्सा सामग्री की आपूर्ति की है, उनमें निजी सुरक्षा उपकरण (पीपीई), सैनिटाइजर, सर्जिकल गलव्स व थर्मल स्कैनर शामिल हैं। इसके चिकित्साकर्मियों को भी एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा रहा है। बयान के अनुसार, 'वायुसेना कोरोना के टेस्ट सैंपलों को भी नियमित रूप से लद्दाख से दिल्ली ला रही है। इस काम में वायुसेना के सी-17, सी-130, एएन-32, एव्रो और डोर्नियर विमानों को लगाया जा रहा है।' (प्रेट्र)

विदेश से बिहार आए लोगों ने बढ़ाई मुसीबत, 24 संक्रमित

कोरोना संकट ▶ खाड़ी देशों से लौटे हैं इनमें से ज्यादातर लोग

बुधवार को अबूधाबी से नालंदा लौटा युवक मिला संक्रमित, दुबई से लौटी गया की महिला भी पॉजिटिव

जागरण टीम, पटना

- कतर से आए मुंगेर के युवक की वजह से राज्य के 11 लोग संक्रमित हुए, अन्य 9 संक्रमित भी खाड़ी देश से लौटे हैं
- एक स्कॉटलैंड और एक गुजरात से लौटा युवक संक्रमित, नेपाल से लौटी महिला संक्रमण के बाद स्वस्थ हुई

बिहार में खाड़ी देशों से आए लोग ही कोरोना संक्रमित मिल रहे। अभी तक 24 संक्रमित मिले हैं। इनमें से 10 खाड़ी देशों से आए। कतर से आए मुंगेर के युवक की कोरोना की वजह से मौत हो गई और उसकी वजह से अन्य 11 लोग संक्रमित हुए हैं। इनमें उसके रिश्तेदार और अस्पताल कर्मी शामिल हैं। बुधवार को नालंदा के सिलाव निवासी युवक की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव मिली है। यह युवक अबूधाबी से लौटा था। पूर्व में मिले तीन मरीजों में एक युवक गुजरात से, एक स्कॉटलैंड और एक महिला नेपाल से लौटी थी।

राजेंद्र मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरएमआरआइ) के निदेशक डॉ प्रदीप दास ने बताया कि मंगलवार देर रात 46 नमूनों की जांच की गई जिसकी रिपोर्ट बुधवार सुबह प्राप्त हुई है। इनमें से 45 की रिपोर्ट नेगेटिव है जबकि नालंदा का युवक संक्रमित पाया गया। दोपहर बाद गया की एक 40 वर्षीया महिला भी संक्रमित पाई गई, जो हाल में दुबई से लौटी है। बता दें कि राज्य में कोरोना के संक्रमितों की संख्या पर लगाम लगाने के लिए प्रशासन प्रयासरत है।

बिहार में संक्रमण की स्थिति

सिवान	05 (खाड़ी देश)
गोपालगंज	01 (खाड़ी देश)
बेगूसराय	01 (खाड़ी देश)
नालंदा	01 (खाड़ी देश)
गया	01 (खाड़ी देश)
पटना	03 (एक स्कॉटलैंड, एक गुजरात और एक नेपाल से लौटे)
मुंगेर	01 (खाड़ी देश से लौटा, पटना में मौत)

मुंगेर - से लौटे मृत कोरोना रोगी के संपर्क में आने से - 11 जो पटना, मुंगेर, नालंदा और गया के हैं।

नए सिरे से रणनीति तैयार कर रही राज्य सरकार

राज्य के मुख्य सचिव दीपक कुमार ने बुधवार को बताया कि रविवार तक राज्य में कोरोना की स्थिति काफी नियंत्रण में थी, परंतु अब जबकि विदेश से सीधे बिहार आए करीब साढ़े तीन हजार लोगों की जांच शुरू हुई है तो पॉजेटिव मामले बढ़ने लगे हैं। यह राज्य के लिए खतरे की बात है। विदेश से जितने लोग भी देश लौटे हैं और बिहार आए हैं, उनमें से तमाम लोगों की जांच शुरू कर दी गई है। अब तक करीब 1650 लोगों के सैंपल लिए गए हैं। सभी जिलाधिकारियों सिविल सर्जन, मुखिया और वार्ड सदस्य को नए सिरे से निर्देश दिए गए हैं कि विदेश से लौटे हर व्यक्ति पर नजर रखें। जब तक इनके सैंपल नहीं ले लिए जाते तब तक इन्हें क्वारंटीन में रखना सुनिश्चित किया जाए।

आइसीएमआर ने कहा, हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन हर किसी के लिए नहीं

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रमन आर. गंगाखेडकर ने कहा है कि हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवा सिर्फ डॉक्टरों और कोविड-19 मरीजों के संपर्क में आने वालों को दी जा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इसे हर किसी को नहीं लेना है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोविड-19 महामारी से उत्पन्न किसी आपात स्थिति से निपटने के लिए हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन को आवश्यक दवा करार दिया है। साथ ही इसकी बिक्री और वितरण को भी प्रतिबंधित कर दिया है। इस पर आइसीएमआर की आधिकारिक स्थिति के बारे में पूछे जाने पर परिषद में महामारी विज्ञान और संचारी रोग विभाग के प्रमुख डॉ. गंगाखेडकर ने कहा, 'हमने बार-बार कहा है कि इसका इस्तेमाल हर किसी को नहीं करना है। इसे डॉक्टरों और कोरोना संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में आने वालों को दिया जा रहा है। जब उनके आंकड़ें संकलित हो जाएंगे, उसके बाद ही कहा जा सकता है कि इसे हर किसी (जिनमें संक्रमण का खतरा है) के लिए अनुशंसित किया जाए अथवा नहीं।'

मालूम हो कि आइसीएमआर पहले ही कोविड-19 के पुष्ट या संदिग्ध मरीजों की देखभाल में लगे स्वास्थ्य कर्मियों के लिए प्रिवेंटिव मेडिकेशन के तौर पर हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन के इस्तेमाल की सिफारिश कर चुका है। लेकिन यह सभी मरीजों के लिए असरदार नहीं है।

ईरान में फंसे 250 भारतीयों में कोविड-19 की पुष्टि

- केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट को बताया, 500 से ज्यादा भारतीयों को लाया गया

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि ईरान में फंसे 250 भारतीय तीर्थयात्रियों में कोरोना वायरस के संक्रमण की पुष्टि हुई है और उन्हें नहीं निकाला गया है। पांच सौ से ज्यादा दूसरे भारतीयों को वापस लाया जा चुका है। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि वह भारतीय दूतावास को स्थिति पर लगातार निगाह रखने और ईरान में फंसे भारतीय के संपर्क में बने रहने का निर्देश देने के बारे में विचार कर रहा है।

जस्टिस धनंजय वाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एमआर शाह की पीठ ने कहा कि वह इस मामले में याचिकाकर्ताओं के पक्ष में आदेश देगी और भारतीय दूतावास से कहेगी कि इनकी नई जांच कराई जाए और उन्हें जब भी संभव हो स्वदेश लाने की संभावना पर गौर करे। पीठ ने टिप्पणी की कि सरकार इस मामले को गंभीरता से ले रही है।

इससे पहले, सुनवाई शुरू होते ही केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ईरान में फंसे अधिकांश भारतीयों को वापस लाया जा चुका है। याचिकाकर्ता मुस्तफा एमएच की ओर से वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा कि ईरान में फंसे सभी भारतीयों को वापस नहीं लाया गया है। अभी भी करीब 250 भारतीय, जिनमें कोरोना वायरस के संक्रमण की पुष्टि हो गई है, वहीं हैं और वे ईरानी अधिकारियों की रहम पर हैं। उन्होंने कहा कि कोर्ट को सॉलिसिटर जनरल को इन 250 भारतीयों को वापस लाने के बारे में आवश्यक निर्देश लेने के लिए कहें।

मेहता ने कहा कि इस समय सारी अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद हैं और संबंधित अधिकारियों को विदेश मंत्रालय के फैसले का इंतजार है। उन्होंने कहा, 'ईरान में हमारा दूतावास वहां फंसे 250 भारतीयों के संपर्क में है। वे जब भी संभव होगा उन्हें वापस लाएंगे।'

मेहता ने कहा कि यह याचिका अब निरर्थक हो चुकी है। इस पर पीठ ने हेगड़े से कहा कि ईरान में फंसे लोगों का ध्यान रखा जा रहा है और इस मामले को अब सरकार पर छोड़ देना चाहिए। पीठ ने कहा, 'आप इस मामले को आवश्यकता पड़ने पर फिर से उठा सकते हैं।'

उल्लेखनीय है कि ईरान कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से एक है। यहां अब तक 47 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित हो चुके हैं। पिछले 24 घंटों में 138 लोगों की मौत के बाद इसका आंकड़ा तीन हजार पार कर गया है और संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। ऐसे में वहां से आए लोगों ने चिंता बढ़ा दी है।

भारत में कोरोना महामारी के कम मामलों के पीछे बीसीजी का टीका!

- अमेरिकी शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में जताई संभावना
- हालांकि भारतीय वैज्ञानिकों ने कहा कि इस पर और शोध की जरूरत

नई दिल्ली, प्रेट्र: दूसरे देशों की तुलना में भारत में कोरोना के कम मामले होने के पीछे क्या बीसीजी का टीका जिम्मेदार है। भले ही इसका कोई और कारण हो लेकिन अमेरिकी शोधकर्ता मान रहे हैं कि इसके पीछे बीसीजी टीके की अहम भूमिका है। अगर यह बात सिद्ध हो जाती है तो यह टीका कोरोना से लड़ाई में गेम चेंजर साबित हो सकता है।

कोरोना का प्रकोप फैलने पर अमेरिका सहित दुनिया के कई देशों को आशंका थी कि विशाल आबादी वाले भारत में बड़े पैमाने पर मौतें होंगी। लेकिन अभी तक जो पैटर्न है इससे उनकी आशंका गलत साबित हो गई है। अमेरिकी वैज्ञानिकों का मानना है कि भारत में नवजात बच्चों को बैसिलस कैलमेट गुयरिन (बीसीजी) टीका देने की जो परंपरा है उसके कारण कोरोना का इतना प्रभाव नहीं हो रहा है। जबकि इटली, नीदरलैंड्स और अमेरिका जहां बच्चों को यह टीका नहीं दिया जाता वहां संक्रमितों व मरने वालों की संख्या बेतहाशा बढ़ती जा रही है। न्यूयार्क इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालाजी बायोकेमिकल साइंसेज के असिस्टेंट प्रोफेसर गोंजालो ओताजू ने कहा कि इस संबंध में किये गये अध्ययन में हमने पाया कि कोविड-19 से निपटने में बीसीजी कारगर हो सकता है। इस अध्ययन की रिपोर्ट अभी प्रकाशित होनी है।

अमेरिका में कोरोना के अब तक 190,000 से अधिक मामले सामने आ चुके हैं जबकि 4000 से अधिक की मौत हो चुकी है। जबकि इटली में105,000 सामने आये हैं और 12 हजार से अधिक मौतें हो चुकी हैं। इसी तरह नीदरलैंड्स में 12,000 से अधिक मामले आने के साथ एक हजार से अधिक मौतें हो चुकी हैं। अध्ययन के मुताबिक बीसीजी भारत के राष्ट्रीय टीकाकरण अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मवेशियों में टीबी रोग के लिए जिम्मेदार बैक्टीरिया माइकोबक्टीरियम बोविस के कमजोर स्वरूप से तैयार किया जाता है। यह मनुष्यों में टीबी के लिए जिम्मेदार बैक्टीरिया से भिन्न होता है।

भारत में बीसीजी टीके का चलन 1948 में शुरू हुआ था। तब भारत में टीबी (ट्यूबर कोलोसिस) के मामले दुनिया में सबसे ज्यादा होते थे। इस संबंध में भारतीय विशेषज्ञों का कहना है कि हम लोग इस बात से आशांवित हैं लेकिन अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगा।

लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब के एप्लाइड मेडिकल साइंसेज फैकल्टी की सीनियर डीन मोनिका गुलाटी ने बताया कि ऐसे मौकों पर छोटी सी बात भी उम्मीद बंधाती है। खास बात यह है कि सार्स के संक्रमण में बीसीजी वैक्सीन प्रभावी साबित हुई है। सार्स का वायरस भी मूलतः कोरोना परिवार का वायरस है। गाजियाबाद के कोलंबिया एशिया हास्पिटल के इंटरनल मेडिसिन विभाग के दीपक वर्मा ने बताया कि कोविड-19 के लिए अभी तक कोई वैक्सीन उपलब्ध नहीं है। ऐसे में बीसीजी के टीके से उम्मीद बंधी है। हैदराबाद के सेंटर फार सेल्युलर एंड मालीक्युलर बायोलाजी के निदेशक राकेश मिश्रा ने बताया कि ये निष्कर्ष आकर्षित करने वाला है लेकिन इसके लिए अभी और शोध की जरूरत है।

आवश्यक दवाओं के दाम पर सरकार ने लगाई लगाम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली, : कोरोना वायरस महामारी से जंग के बीच कुछ कंपनियों द्वारा चिकित्सा उपकरणों की कीमत में बढ़ोतरी के खिलाफ सरकार ने सख्त कदम उठाया है।

नेशनल फार्मा प्राइसिंग अथॉरिटी (एनपीपीए) ने नया नोटिफिकेशन जारी करते हुए 24 तरह के चिकित्सा उपकरणों को आवश्यक दवाओं की सूची में शामिल कर दिया है। साथ ही उसने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को आदेश जारी कर पर्सनल प्रेटेक्टिव इक्विपमेंट्स (पीपीई), मास्क, ग्लव्स, टेस्टिंग किट और वेंटिलेटरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

एनपीपीए की तरफ से लागू किए गए नए नोटीफिकेशन में साफ कर दिया गया है कि इन चिकित्सा उपकरणों की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आनी चाहिए और उनकी खुदरा कीमत में 10 फीसद से अधिक इजाफा नहीं किया जा सकता। यह 10 फीसद इजाफा पिछले 12 महीने के अधिकतम कीमत पर ही हो सकता है। इसका उल्लंघन करने वाले निर्माताओं और वितरकों पर जुर्माने के साथ-साथ अधिक ली गई राशि भी वसूली जाएगी।

मजदूरों को दिखा रहे फिल्में

राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के कारण चेन्नई में फंसे मजदूरों को एक जगह रोक कर रखने के लिए प्रोजेक्टर के सहारे फिल्में दिखाने जैसे तरीके अपनाए जा रहे हैं। यह गुरुनानक कॉलेज की तस्वीर है। इसमें मजदूरों को ठहराया गया है। प्रेट्र

पीएम केयर्स फंड

जस्टिस एनवी रमना पहले ही दान कर चुके हैं एक लाख रुपये, अधिकारी और चतुर्थ श्रेणी के कर्मी भी देंगे योगदान

सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीशों ने दिए 50-50 हजार रुपये

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

कोरोना महामारी से जंग के लिए प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे सहित सुप्रीम कोर्ट के सभी 33 न्यायाधीशों ने 50-50 हजार रुपये प्राइम मिनिस्टर्स सिटीजन असिस्टेंस एंड रिलीफ इन इमरजेंसी सिचुएशंस (पीएम-केयर्स) फंड में दान दिए हैं।

सुप्रीम के न्यायाधीश एनवी रमना ने पिछले ही सप्ताह प्रधानमंत्री राहत कोष में एक लाख रुपये और एक-एक लाख रुपये तेलंगाना व आंध्र प्रदेश मुख्यमंत्री राहत कोष में दान दिए थे। जस्टिस रमना सुप्रीम कोर्ट में दूसरे सबसे वरिष्ठ जज हैं और जस्टिस बोबडे के बाद उन्हीं का नंबर प्रधान न्यायाधीश बनने का है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों के अलावा शीर्ष कोर्ट की रजिस्ट्री के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी तीन दिन तक का अपना वेतन पीएम केयर्स फंड में दान दिया है। सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री के राजपत्रित अधिकारी तीन दिन का, गैर-राजपत्रित अधिकारी दो दिन का और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी एक दिन का वेतन पीएम केयर्स फंड में दान करेंगे।

कोरोना महामारी से जूझ रहे देश को इस संकट से बचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी नागरिकों से पीएम केयर्स फंड में दान देने की अपील की थी। जिसके बाद से देशभर की हस्तियों, उद्योगपतियों और आम जनता ने पीएम केयर्स फंड में दान देना शुरू किया है।

विदेश से भी दिया जा सकता है पीएम केयर्स में योगदान

केंद्र सरकार ने पीएम-केयर्स फंड में विदेशी योगदान भी स्वीकार करने का फैसला किया है। सूत्रों ने बताया कि महामारी की अभूतपूर्व स्थिति और सरकार के प्रयासों में योगदान देने की इच्छा दर्शाए जाने के मद्देनजर यह फैसला किया गया है।

इस अनुकरणीय और प्रेरणादायी पहल के लिए मैं सुप्रीम कोर्ट के माननीय जजों को धन्यवाद देता हूं। पीएम-केयर्स में उनका योगदान कोविड-19 के खिलाफ लड़ने की कोशिशों को मजबूती देगा।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

नवीन जिंदल ने कोविड-19 से जंग के लिए दिए 25 करोड़

जासं, हिसार : कुरुक्षेत्र के पूर्व सांसद एवं जिंदल स्टील एंड पावर लिमिटेड के चेयरमैन नवीन जिंदल के नेतृत्व वाली कंपनी ने कोविड-19 से लड़ने के लिए पीएम केयर्स फंड में 25 करोड़ रुपये दिए हैं। एक प्रेस विज्ञप्ति में नवीन जिंदल ने कहा कि पूरा विश्व कोरोना के संकट से घिर गया है। यह अभूतपूर्व घटना है, जिससे न सिर्फ सामाजिक बल्कि आर्थिक जगत भी भारी दबाव में आ गया है। जिंदल ने कोरोना पर नियंत्रण के लिए पीएम द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना करते हुए कहा कि इसके खिलाफ एकजुटता और जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है।

लोस सचिवालय कर्मी देंगे एक दिन का वेतन

लोकसभा सचिवालय के 2,400 से ज्यादा कर्मियों ने पीएम केयर्स फंड में अपना एक दिन का वेतन देने की घोषणा की है। यह रकम करीब 45 लाख रुपये होती है। स्पीकर ओम बिरला ने उनके इस योगदान की सराहना की है।

सीएसएस फोरम ने दिए 21 लाख रुपये

केंद्रीय सचिवालय सेवा (सीएसएस) फोरम ने पीएम केयर्स फंड में 21 लाख रुपये का योगदान दिया है। सीएसएस केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में कार्यरत करीब 12,500 अधिकारियों की प्रतिनिधि फोरम है। यह रकम फंड में दिए जाने वाले एक दिन के वेतन से अतिरिक्त है।

सिने वर्कर्स की मदद के लिए अजय देवगन ने दिए 51 लाख

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई

दिहाड़ी पर काम करने वाले सिने वर्कर्स की मदद के लिए सितारे लगातार आगे आ रहे हैं। बुधवार को अपने जन्मदिन की पूर्व संध्या पर अजय देवगन ने फिल्मोद्योग के दिहाड़ी मजदूरों की मदद के लिए 51 लाख रुपये का योगदान दिया है। उन्होंने फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने इंप्लाइज (एफडब्ल्यूआइसीई) संस्था को योगदान दिया है। फिल्ममेकर रोहित शेट्टी भी इस संस्था को 51 लाख रुपये दान कर चुके हैं। इससे पहले सलमान खान द्वारा पच्चीस हजार सिने वर्कर्स की मदद के लिए बैंक खाते मांगे थे।

उधर, फिल्म जगत की तरफ से बुधवार को भी पीएम केयर्स के लिए आर्थित योगदान देना जारी रहा। कंगना रनोट ने पीएम केयर्स फंड में 25 लाख रुपये का योगदान दिया। उनके साथ उनकी मां, बहन और परिवार के अन्य सदस्यों ने भी आर्थिक योगदान दिया है। कंगना की मां ने पीएम केयर्स में अपनी एक माह की पेंशन दी है। प्रिटी जिंटा ने अपनी आइपीएल फ्रैंचाइजी किंग्स इलेवन पंजाब की तरफ से पीएम केयर्स में योगदान किया है। हालांकि उन्होंने योगदान की राशि का खुलासा नहीं किया है। इसके अलावा अभिनेत्री माधुरी दीक्षित और उनके पति श्रीराम माधव नेने ने भी कोष में योगदान दिया है।

अजय देवगन। फाइल

शारीरिक दूरी का नया पैमाना, लोगों के बीच आठ मीटर का हो अंतर

शोध ▶ अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन के जर्नल में कोरोना पर नया दावा

जोर से सांस छोड़ने, छींकने या खांसने पर ड्रॉपलेट्स का विस्तार क्षेत्र बढ़ जाता है

नई दिल्ली, एजेंसियां : कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और यूएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रीवेंशन (सीडीसी) की ओर से जारी दिशा-निर्देश अब नाकाफी मालूम पड़ रहे हैं। एक ताजा शोध के मुताबिक कोरोना संक्रमित व्यक्ति के खांसने पर कफ के साथ जो मुंह से हवा निकलती है या छींक आती है, उसकी ड्रॉपलेट्स के जरिए वायरस आठ मीटर (27 फीट) की दूरी तक जाता है। इतना ही नहीं, यह वायरस मरीज के सांस छोड़ने भर से भी संक्रमित कर सकता है।

अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन की अमेरिकी शोध पत्रिका में प्रकाशित इस शोध में बताया गया है कि डब्ल्यूएचओ और सीडीसी की कोरोना को लेकर जारी गाइडलाइंस का आधार अभी तक 1930 के पुरातन मॉडल पर आधारित था। अभी तक लोगों को संक्रमण से बचने के लिए अधिकतम डेढ़ मीटर की दूरी बनाए रखने को कहा जाता रहा है। शोधकर्ता और एमआइटी की एसोसिएट प्रोफेसर लाइडिया बॉरॉबा ने चेताया है

गैस के गुबार से मिली नमी व गर्माहट से हवा में कई घंटे रह सकती हैं ड्रॉपलेट्स

प्रतीकात्मक।

कि सभी आकार की ड्रॉपलेट्स (छोटी बूंदें) हवा में 23 से 27 फीट या 7-8 मीटर दूर तक जा सकती हैं। कफ और छींकों के स्वरूप पर कई सालों तक शोध कर चुकी शोधकर्ता का कहना है श्वसन प्रणाली से होकर गुजरने वाले कफ और गैस के गुबार या फूंक में समाहित इन सूक्ष्म ड्रॉपलेट्स में सार्स, कोविड-19 के कोरोना वायरस हो सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि मौजूदा मानक के मुताबिक कोरोना के संक्रमण से बचाव में शारीरिक दूरी के लिए छह फीट (दो मीटर) की दूरी को उचित बताया गया है। शोधकर्ता के अनुसार मौजूदा गाइडलाइंस ड्रॉपलेट्स के आकार की मनमानी अवधारणा पर आधारित हैं। इसीलिए इस घातक वैश्विक महामारी का संक्रमण सीमित करने में असफल साबित हो रही हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि पुराने निर्देशों का आधार दो श्रेणियों में हैं- छोटी या बड़ी ड्रॉपलेट्स। लेकिन जब व्यक्ति छींकता, खांसता या जोर से सांस छोड़ता है तो इन ड्रॉपलेट्स का विस्तार क्षेत्र या प्रसार क्षेत्र बढ़ जाता है। खांसी या छींक सौ फीट प्रति सेकेंड की रफ्तार से भी आ सकती है।

एमआइटी की वैज्ञानिक ने कुछ हालिया शोधों का हवाला देते हुए बताया कि छींक और कफ में हवा का तीव्र झोंका होता है जिसमें शरीर के अंदर से निकली हवा के साथी ही विभिन्न आकार की सैकड़ों नन्ही बूंदें भी होती हैं। उन्होंने चेताते हुए कहा कि इस फूंक या मुंह या नाक से निकली हवा के झोंके में तीव्र गति से गैस भी निकलती है जो बूंदों को नमी और गरमाहट देती है। इससे ये नन्ही बूंदें बाहरी वातावरण में विलुप्त होने से बच जाती हैं।

इस गैस के गुबार में अटकीं बूंदें अधिक समय तक हवा में बनी रहती हैं। इस आधार पर इन ड्रॉपलेट्स का अस्तित्व हवा में इस आधार पर तय होता है कि वह उस गुबार में कैद हैं या वातावरण में अलग-थलग होकर विलुप्त हो गई हैं। इसलिए हवा में यह कुछ सेकेंड से लेकर कुछ मिनट तक बनी रह सकती हैं। कफ या छींक के साथ हवा में आने वाली यह सूक्ष्म बूंदें जब किसी सतह पर गिरती हैं तो उनके अंश हवा में कई घंटे तक बने रह सकते हैं।

एकांतवास की एकरसता से बचने के लिए करें समय का सदुपयोग

कोरोना से कैसे लड़ें मनोचिकित्सक

दिल्ली के ग्रीन पार्क निवासी कृति और आलोक के लिए लॉकडाउन की शुरुआत शॉकिंग जरूर थी, लेकिन कहीं न कहीं रिलैक्सिंग और एक्साइटिंग भी थी। दोनों ने घर से काम करना शुरू किया, परिवार के साथ वक्त बिताने की खुशी, बाहरी तनाव से राहत में शुरुआती दिन तो खुशी-खुशी कट गए। मगर अब धीरे-धीरे बोरियत हावी होने लगी है। दिनचर्या में एकरसता आने लगी और फिर एक अजीब सा तनाव, बाहर निकलने की अकुलाहट, काम करने और दिन को मैनेज करने में परेशानी आने लगी। बच्चे, बुजुर्ग, भरा पूरा परिवार है, लेकिन मन में बेचैनी, घबराहट, अनिश्चितता और अस्थिरता के बादल। न घर के कामों में मन लग रहा है और न ही ऑफिस के काम निपटा पा रहे हैं। दिन बोझिल होते जा रहे हैं और रातों को नींद नहीं आ रही है।

यह स्थिति किसी एक परिवार की नहीं है बल्कि लगभग हर दूसरा परिवार इसी तरह की अस्त-व्यस्त दिनचर्या और मानसिक परेशानी से दो-चार हो रहा है। होम आइसोलेशन के दूसरे हफ्ते में उपजी इन परेशानियों से कैसे निजात पाई जाए, इस बारे में मेदांता अस्पताल के साइकियाट्रिस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंसेज के वरिष्ठ मनोचिकित्सक और सलाहकार डॉ. सौरभ मल्होत्रा ने बताया कि परिस्थितियों के प्रति अपने नजरिये में बदलाव लाकर जीवनशैली को नए सिरे से व्यवस्थित करने से न केवल इन समस्याओं का समाधान हो सकेगा बल्कि जीवन को नई गतिविधियों और आदतों से भी जोड़ने का मौका भी मिलेगा।

सही मायने समझ परिस्थितियों को स्वीकारें

इस दौर में परिस्थितियों को सही तरीके से समझने और उसे स्वीकारने की जरूरत है। लोगों को इस बात को समझना होगा कि उन्हें अभी इसी परिस्थिति में रहना है। लोग इसे जितनी जल्दी और जितनी सकारात्मकता से स्वीकार कर लेंगे, दिनचर्या उतनी ही बेहतर और सुव्यवस्थित हो सकेगी। बदलाव को स्वीकार करने से तनाव कम होने लगेगा और संतुष्टि मिलेगी।

रिश्तों की धूल झाड़ने का समय

इस 24 गुणा 7 की लाइफस्टाइल की व्यस्तता में रिश्ते कुम्हलाने लगते हैं। उन्हें संवारने-सुधारने, खुले सिरों को तलाशने और रिश्तों पर पड़ी धूल झाड़ने का इससे बेहतर अवसर नहीं मिलेगा। क्वालिटी टाइम देकर जीवन को फिर से व्यवस्थित कर सकते हैं।

समय का करें अर्थपूर्ण उपयोग

इस समय मिलीजुली गतिविधियों को दिनचर्या में शामिल करें। सुबह शाम कम से कम दस मिनट का प्राणायाम करें, रुटीन में 45 मिनट की योग और कसरत को शामिल करें, बागवानी करें, बच्चों के साथ खेलें। शारीरिक गतिविधियों से ब्रेन से ऐसे कैमिकल निकलते हैं, जिससे स्ट्रेस लेवल कम होता है।

इस समय कुछ अच्छी आदतों को विकसित किया जा सकता है। इसे मेडिकल की भाषा में 'पॉजिटिव एडिक्शन' कहा जाता है। इस समय पुस्तकें पढ़ने की आदत डालें, इससे न केवल संतुष्टि मिलेगी और समय व्यतीत होगा, बल्कि ज्ञान और व्यक्तित्व विकास के नए क्षितिज खुलेंगे।

डॉ. सौरभ मल्होत्रा, वरिष्ठ मनोचिकित्सक व सलाहकार, साइकियाट्रिस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंसेज, मेदांता

भारत की द. कोरिया, जर्मनी व चीन की तकनीक पर नजर

नई दिल्ली, प्रेट्र : पिछले कुछ दिनों कोरोना वायरस के संक्रमण में एकाएक बढ़ोतरी को देखते हुए भारत अब उन तकनीकी प्रक्रियाओं को हासिल करने को लेकर दक्षिण कोरिया, जर्मनी और चीन की ओर नजरें जमाए हुए है। इन देशों ने ऐसे कदम उठाए हैं जिनके दम पर वह इस संक्रमण के प्रभाव को कम करने में कामयाब हो पाए हैं।

दक्षिण कोरिया, जर्मनी और चीन के भारतीय अभियानों को पहले से ही यह जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वह कोरोना से निपटने में इन देशों के साथ सहयोग

कोरिया की व्यापक टेस्टिंग नीति और डिजिटल ट्रैकिंग पर भरोसा

के संभावित क्षेत्रों की तलाश करें और संबंधित विभागों से चिकित्सा उपकरण और तकनीक हासिल कर सकें। हाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 130 देशों में भारतीय मिशनों के साथ हुई बैठक में पीएम ने वैश्विक महामारी से निपटने के लिए सर्वश्रेष्ठ कदमों, खोजों, वैज्ञानिक शोधों और चिकित्सा उपकरणों की आवश्यकताओं पर बल दिया था।

सरकारी अधिकारियों ने बताया कि भारत अब दक्षिण कोरिया की व्यापक टेस्टिंग नीति पर भरोसा करना चाहता है। संदिग्ध मामलों की डिजिटल ट्रैकिंग पर भी विचार चल रहा है। दक्षिण कोरिया की परीक्षण नीति और मरीजों की ट्रैकिंग के तरीके को दुनिया भर में सराहा गया है। दक्षिण कोरिया ने बाकी दुनिया की तरह कोई लॉकडाउन नहीं किया और उनका कारोबार हमेशा की तरह सामान्य रूप से चलता रहा।

दूसरी ओर चीन ने भी 80 हजार लोगों में संक्रमण और 3300 मौतों के बाद नए संक्रमणों को होने से रोक लिया है। भारत भी चीन की चंद दिनों में चिकित्सकीय उपकरणों और अस्पतालों को तैयार करने की क्षमता से प्रभावित है। एक अधिकारी ने कहा कि भारत को भी भविष्य की जरूरतों को देखते हुए चिकित्सा क्षेत्र में आधारभूत ढांचे की तैयारी करनी होगी। इसलिए भारत सरकार अंतरराष्ट्रीय बाजारों पर नजर जमाए हुए है। ताकि सर्वश्रेष्ठ तकनीकों और चिकित्सकीय उपकरणों को हासिल किया जा सके। बीजिंग में भारतीय दूतावास ने चिकित्सा उपकरणों के लिए चीन के संबंधित अधिकारियों से संपर्क बना रखा है।

अखबार नहीं है कोरोना का दोस्त

अखबार सुरक्षित है

जेएनएन नई दिल्ली

अखबार पढ़ने से कोरोना वायरस के संक्रमण की आशंका निर्मूल है। अखबार या किसी भी कागज से कोरोना के फैलने का कोई प्रमाण नहीं मिला है। लॉकडाउन का पालन करते हुए घरों में रहना ही इससे बचाव का सबसे अच्छा तरीका है। विशेषज्ञ भी इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

प्रो. प्रदीप श्रीवास्तव। फाइल

प्रो. प्रद्योत प्रकाश। जागरण

बीएचयू स्थित आइएमएस के वायरोलॉजिस्ट प्रो. प्रद्योत प्रकाश के मुताबिक, कोरोना के कम्युनिटी ट्रांसमिशन फेज से पहले इस प्रकार अखबारों से वायरस फैलने का खतरा नगण्य है। अभी तक विदेश से ही आए लोगों से यह संक्रमण फैल रहा है। हमारे कर्मयोगी ने अगर विदेश की यात्रा नहीं की है तो यकीन मानिए कि अखबार बिल्कुल सुरक्षित है।

बीएचयू के स्कूल ऑफ बायो केमिकल इंजीनियरिंग के पूर्व प्रमुख और टाइफेक के कार्यकारी निदेशक प्रो. प्रदीप श्रीवास्तव का कहना है कि दुनियाभर के चिकित्सकों और वैज्ञानिकों का मानना है कि अखबार से कोरोना का कोई खतरा नहीं है। इस घोर विपदा के समय अखबार आपको हर प्रकार से सुरक्षित और सजग बने रहने की समाग्री दे रहा है। ऐसे में तो अखबार कोरोना का नहीं, बल्कि हमारा-आपका मित्र है।

डॉक्टर का कहना है

डॉ. सुमिता प्रभाकर
वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसुति रोग विशेषज्ञ, कंबाइंड मेडिकल इंस्टीट्यूट (सीएमआइ) देहरादून

गर्भवती महिलाएं घबराएं नहीं सजग व सतर्क रहें

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के कारण लोगों में तनाव ज्यादा है। गर्भवती महिलाओं के जेहन में भी तमाम तरह के सवाल उठ हैं। देहरादून स्थित कंबाइंड मेडिकल इस्टीट्यूट (सीएमआइ) की वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. सुमिता प्रभाकर की सलाह गर्भवती महिलाओं के लिए काफी अहमियत रखती है। उनका कहना है कि यह वक्त घबराने का नहीं, बल्कि सजग एवं सतर्क रहने का है।

सेल्फ आइसोलेशन में रहें

गर्भावस्था बेहद महत्वपूर्ण एवं नाजुक समय होता है। इस दौरान महिला का इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है और इन्फेक्शन का खतरा ज्यादा होता है। लिहाजा, शारीरिक दूरी पर पूरी तरह अमल करें। अस्पताल तभी जाएं, जब बेहद जरूरी हो। ज्यादा बेहतर तो यह है कि वह सेल्फ आइसोलेशन में रहें।

व्यक्तिगत साफ-सफाई का ध्यान रखें

व्यक्तिगत साफ-सफाई पर ध्यान दें। यदि घर के किसी व्यक्ति का नियमित रूप से बाहर आना-जाना हो तो उनसे एक निश्चित दूरी बनाकर रहें। वह व्यक्ति भी अपने जूते, कपड़े बाहर उतारे और घर के भीतर दाखिल होने से पहले अच्छी तरह साफ हो ले।

ब्रेस्ट फीडिंग कराते समय भी मास्क पहनें

मेडिकल रिपोर्ट बताती हैं कि ब्रेस्ट मिल्क से वायरस संक्रमण का खतरा नहीं है। चूंकि यह वायरस रेस्पिरेट्री ड्रॉपलेट्स के जरिए फैलता है, इसलिए स्तनपान कराते वक्त मास्क पहनें। ब्रेस्ट फीडिंग और बच्चों को उठाने से पहले अच्छे से हाथ धो लें। ताकि नवजात में संक्रमण का खतरा न के बराबर रहे।

गर्भस्थ शिशु में नहीं होता संक्रमण

आज तक कोरोना का वायरस एमनियोटिक द्रव या ब्रेस्ट मिल्क के नमूनों में नहीं पाया गया है। भ्रूण में किसी तरह के संक्रमण का कोई प्रमाण नहीं है। ऐसा भी कोई डाटा नहीं है, जो सिद्ध करता हो कि कोरोना वायरस संक्रमण से गर्भपात या गर्भस्थ शिशु नुकसान की संभावना बढ़ जाती है।

श्वसन प्रणाली को स्वस्थ रखें

इस समय बाहर वॉक पर नहीं जाया जा सकता। इसलिए श्वसन प्रणाली को मजबूत बनाने के लिए योग एक अच्छा विकल्प है। प्राणायाम आपके फेफड़ों को मजबूत करने के साथ ही रक्त संचार बढ़ाने में भी मदद करेगा। पर्याप्त आराम लेना जरूरी है। साथ ही पानी भी खूब पीती रहें।

इम्यूनिटी पर दें ध्यान

विटामिन 'डी' और 'सी' से शरीर को मजबूती मिलेगी। विटामिन 'डी' के लिए बालकनी में बैठकर धूप ले सकती हैं। नींबू, आंवला, संतरा आदि से विटामिन 'सी' की पूर्ति होती है। इससे सर्दी-जुकाम से लड़ने में मदद मिलती है। हड्डियों के पोषण और रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए कैल्शियम भी बहुत जरूरी है। इसके लिए पालक खाएं। प्रोटीन के लिए दाल, हरी सब्जी, मौसमी फल आदि भरपूर लें।

वर्क फ्रॉम होम करें स्मार्टली

कोरोना को लेकर 14 अप्रैल तक का लॉकडाउन। सीमित दिनचर्या व शरीरिक दूरी का ख्याल, इसलिए कुछ लोगों को वर्क फ्रॉम होम करना पड़ रहा। इस बीच बच्चे और अन्य लोगों को भी इंटरनेट की जरूरत है। बच्चों से लेकर युवा, इंटरनेट का खूब इस्तेमाल कर रहे। इंटरनेट पर दबाव अधिक है, इसलिए रफ्तार सुस्त है। अत्याधिक लोड होने से फाइल ट्रांसफर से लेकर वीडियो कॉल और सर्फिंग में परेशानी हो रही। बच्चे ऑनलाइन गेम्स खेलते हैं, इससे भी अत्याधिक डाटा खर्च होता है। यूजर बढ़ने का प्रभाव इंटरनेट पर पड़ता है। इन परेशानियों को कम करने के लिए अपनाएं कुछ नए तरीके। स्मार्ट, सुरक्षित सर्फिंग के लिए आइटी एक्सपर्ट ई. प्रणव हरि कई टिप्स बताते हैं।

30%
तक बढ़ गई डाटा की खपत

गर्वमेंट पॉलीटेक्निक के आइटी के प्राध्यापक निखिल कुमार कहते हैं कि वर्तमान में इंटरनेट पर पहले से 30 फीसद अधिक लोड हो गया है। ऐसे में इसका धीमा होना स्वाभाविक है।

वर्क फ्रॉम होम की दिक्कतें

- सुबह और शाम में इंटरनेट पर अत्याधिक ट्रैफिक के कारण फाइल भेजने में परेशानी
- वीडियो कॉल में रूकावट
- स्लो इंटरनेट के कारण डाटा की अत्यधिक खपत

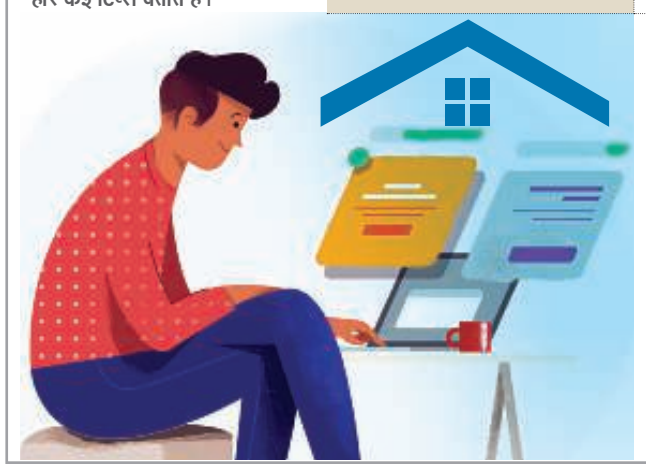

सही काम सही एप से

- वीडियो कॉल करना है तो ग्रुप वीडियो कॉल करें, ताकि एक ही बार में अधिसंख्य लोगों से बात हो जाए। व्यक्तिगत वीडियो कॉल से बचें। वाट्सएप, स्काइप, जूम जैसे एप इसके लिए अच्छे हैं।
- अनावश्यक वीडियो कॉलिंग से बचें, जिम्मेदार नागरिक होने का फर्ज निभाएं।
- फाइल भेजने के लिए एफटीपी (फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल) का प्रयोग करें।
- सिंगल-सिंगल फाइल सेंड करने के बजाय इसे कंप्रेस्ड कर भेजें। रार या जिप एप का प्रयोग करें।
- इससे फाइल छोटा हो जाता है और एक बार में कई फाइल एक ही साथ भेजे जा सकते हैं।
- सामान्य लोग पिकआवर में जैसे सुबह शाम डाटा का बिना मतलब प्रयोग नहीं करें।
- ऑनलाइन लर्निंग और डिजिटल सेवाओं के लिए निर्धारित साइट्स का ही प्रयोग करें।

फिर स्लो नही चलेगा इंटरनेट

- जिस साइट को ओपन कर रहे, उसका यूआरएल सही से फीड करें और सही साइट देखकर ही क्लिक करें।
- उस साइट के प्रयोग के समय यदि कोई दूसरा विज्ञापननुमा स्क्रॉल करे तो उसे क्लोज टैब से बंद कर दें। उसे क्लिक नहीं करें।
- फायरवॉल से हार्मफुल साइट्स को ब्लॉक कर दें।
- ऐसा करने से ये साइट्स दोबारा नहीं खुलेंगे।

ऐसे बचाएं डाटा

- एचडी मोड में वीडियो देखने से डाटा की खपत ज्यादा होती है। ऑप्सन को क्लिक कर वीडियो को कम डाटा खपत वाले मोड में प्ले करने से डाटा बचेगा।
- सोशल साइट्स पर वीडियो शेयर करने से बचें, उपयोग नहीं होने पर मोबाइल का डाटा बंद कर दें।
- वाट्सएप पर वीडियो स्टेट्स नहीं डालें, इसमें काफी डाटा खपत होता है।

सुरक्षित सर्फिंग

जब हम इंटरनेट का प्रयोग करते हैं तो कुछ साइट्स अनावश्यक खुल जाते। उनपर क्लिक करते ही वह दूसरी जगह चला जाता है। इससे डाटा की बर्बादी होती ही है। साइबर अपराधियों के चंगुल में फंसने का भी खतरा रहता।

लॉकडाउन का सुनहरा पक्ष

भीड़ का कोलाहल थमा तो वर्षों पुराने दौर में लौट गई प्रकृति, सड़कों पर टहल रही नील गाय, कुलांचे मार रहे हिरण, पक्षियों की चहचहाहट करा रही सुखद सुबह का अहसास

हरे-हरे पत्ते, चहचहाते पक्षी और नीला आसमां

मनु त्यागी, नई दिल्ली

पत्तों की खरखराहट, चिड़ियों की चहचहाहट...आसमां की नीलिमा। सभी सुकून में हैं। ऊंची इमारतों के बीच किस्म किस्म की चिड़िया अपनी धुनों में गुनगुना रही हैं। आजकल घर में हैं, तो चिड़िया ही अलार्म की भूमिका निभा रही है। बालकनी में खड़े हो जाएं तो शहर बड़ा नजर आता है, मानो सुर्ख नीले आसमां का आलिंगन शहर से हो रहा है। सुर्ख नीला आसमां...आज की युवा पीढ़ी ने तो कभी नहीं देखा था। प्रकृति के इस रूप के साथ युवा अभिभूत हैं, सुखद अनुभूति में हैं। होना लाजिमी भी है क्योंकि प्रकृति भी तो बीसवीं सदी के सातवें दशक में लौट गई है। महानगरों से प्रकृति कैसी रूठी हुई थी, पशु, पक्षी विलुप्त थे। आसमान में सन्नाटा होता था, अब यही तोता, बुलबुल, कोयल करीब आ रहे हैं, नील गाय, हिरण सड़कों तक आ गए हैं।

यह कश्मीर की किसी झील का नही, दिल्ली में यमुना किनारे का नजारा है। कोरोना वायरस पर काबू पाने के लिए जारी राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की वजह से राजधानी में प्रदूषण खत्म हो गया है। ध्रुव कुमार

शरीर की ऊर्जा बढ़ा रही है प्रकृति : सारे उद्योग, फैक्ट्रियां बंद हैं, सड़कें खामोश हैं। एकाध बार बारिश भी हो गई तो आसमान में जो थोड़े दूषित पार्टिकल जमे थे वो भी खत्म हो गए। देखिए, अब महानगरों में तारे साफ दिखाई दे रहे हैं, आसमां तारों की चमचमाहट से जगमगाता है। और प्रफुल्लित कर देने वाली मंद-मंद भाव में बहती हवा मन को शीतलता और पर्यावरण की सुगंध के साथ शरीर को अलग ही तरीके से पोषित कर रही है। भले लॉकडाउन में बाहर नहीं जाना है, वॉक नहीं हो रही है, लेकिन प्रकृति आपके घर तक ऊंची इमारतों में रहने वालों तक के भी करीब आ रही है। निश्चित ही हर उम्र वर्ग के लोगों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी और जिससे कोरोना संक्रमण को हराने की ऊर्जा का संचार होगा।

मेदांता अस्पताल की डॉक्टर सुशीला कटारिया भी मानती हैं कि प्रकृति का ऐसा साथ लोगों को घरों में भी राहत दे रहा है। पक्षी प्रेमी व डिस्ट्रिक फॉरेस्ट ऑफिसर सुंदरलाल बताते हैं कि दफ्तर के काम से ही बाहर निकला था। इतने किस्म-किस्म के वाटर बर्ड आ रहे हैं। यही क्यों, मुंबई, बेंगलुरु, गुरुग्राम, चंडीगढ़, गाजियाबाद, नोएडा जैसे शहरों में लोग पक्षियों को अपने नजदीक महसूस कर रहे हैं। चंडीगढ़ में तो हिरण बकायदा सड़कों पर अठखेलियां करते हुए दिख रहे हैं। कभी जेब्रा क्रासिंग करते हैं तो कभी सड़क किनारे लगे पेड़ों के पीछे छिप जाते हैं।

भविष्य का संदेश दे रहे पशु-पक्षी

ऊंची इमारतों के बीच तो बहुत ज्यादा पेड़ भी नहीं हैं, उसके बावजूद बालकनियों तक पक्षी आ रहे हैं। बारबेट, फ्लेमबैट वुडपेकर, जैसे पक्षियों की आवाज आसपास सुनने को मिल रही है। गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन की तरफ ऊंची इमारतों के आसपास फैले जंगल और खामोश सड़कों तक जानवर बेफिक्र घूमते दिख रहे हैं। कुछ दिन पहले वहां जैकाल दिखा। यमुना एक्सप्रेस-वे पर हिरण ही आ गया और नोएडा में सर्वाधिक भीड़भाड़ वाली जगह जीआइपी मॉल के पास नील गाय घूम रही थी। ये पशु पक्षी लॉकडाउन से पहले भी हमसे दूर नहीं थे, लेकिन हम भागदौड़ में, प्रकृति के हरण में इतने मशगूल थे कि ये सब डरे छिपे दूर-दूर रहते थे।

दिल्ली चिड़ियाघर के क्यूरेटर रियाज खान भी मानते हैं कि पशु-पक्षियों को भी पर्यावरण में राहत का अहसास है, चारों तरफ कोई शोर नहीं है तो ऐसे में ये बाहर निकल कर आ रहे हैं। इससे लोगों को भविष्य के लिए भी संदेश है कि प्रकृति, पशु-पक्षी यह सब कितने प्यारे हैं, हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार के दाता हैं इनका हमेशा ख्याल रखें।

डीएम पहुंचे बीमार वृद्धा के घर, भिजवाया अस्पताल

जासं, जमुई : बिहार के जमुई जिले के खैरमा स्थित वार्ड संख्या चार में जिलाधिकारी धर्मेंद्र कुमार ने खुद पहुंचकर मंगलवार को एक वृद्धा को एंबुलेंस से अस्पताल भिजवाया। उन्हें राशन भी उपलब्ध कराया। उन्होंने एक समाजसेविका से सूचना मिलते ही यह तत्परता दिखाई। रामप्रभा देवी बीमार थीं और उनके घर में राशन भी नहीं था। इसकी जानकारी मिलने के बाद समाजसेविका साधना सिंह ने मुखिया से बात की। मुखिया द्वारा असमर्थता जताने के बाद कॉल सेंटर व सदर बीडीओ पुरुषोत्तम तिवारी से मदद मांगी गई। बीडीओ ने शाम तक कुछ व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। इधर, वृद्धा की तबीयत बिगड़ती जा रही थी। तब साधना ने डीएम को वाट्सएप पर इसकी जानकारी दी। सूचना मिलते ही वे आरक्षी अधीक्षक डॉ. इनामुल हक मेगनू व बीडीओ के साथ खैरमा पहुंचकर वृद्धा के स्वास्थ्य की जानकारी ली। इसके बाद एंबुलेंस से इलाज के लिए सदर अस्पताल भेजा।

दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे हथियार डाल रहा कोरोना

जागरण विशेष

आकाश शुक्ला, रायपुर

कोरोना फाइटर्स...

- केरल के 93 वर्षीय थॉमस अब्राहम और 88 वर्षीय मरियम्मा के बाद अब रायपुर के 68 वर्षीय मनबोधन ने दी कोरोना को मात
- डॉक्टर बोले, यह सिद्ध हो गया कि हौसला और सकारात्मकता से बढ़ती है प्रतिरोधक क्षमता

प्रतीकात्मक।

केरल के 93 वर्षीय थॉमस अब्राहम और 88 वर्षीय मरियम्मा के बाद अब रायपुर के 68 वर्षीय मनबोधन साहू ने कोरोना को मात देकर इस बात की उम्मीद जगा दी है कि कोरोना का सामना 60 साल से ऊपर के बुजुर्ग भी भलीभांति कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यकता है तो केवल दृढ़ इच्छाशक्ति की।

रायपुर, छत्तीसगढ़ निवासी मनबोधन साहू राज्य में कोरोना पॉजिटिव के उन नौ मरीजों में एक थे, जिनको लेकर एम्स रायपुर के चिकित्सकों में बेचैनी ज्यादा थी। लेकिन डॉक्टर तब हैरान रह गए जब मनबोधन का हौसला, इच्छाशक्ति और जीने की ललक ने कमाल कर दिखाया। जो दवाएं सभी मरीजों को दी जा रही थीं, वही उनको भी दी गईं। लेकिन इन दवाओं ने उनपर तेजी से असर किया।

डॉक्टर कहते हैं कि दवाएं, एहतियात और लोगों की दुवाएं अलग, लेकिन यह केस उन्हें एक मेडिकल सिद्धांत का आंखों देखा प्रैक्टिकल भी दे गया। सिद्ध हो गया कि हौसला और सकारात्मक ऊर्जा शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को कई गुना बढ़ा देते हैं। शायद यही कारण है कि बुजुर्ग से पहले भर्ती रायपुर के ही तीन युवा अब भी कोरोना से उबरने को संघर्ष कर रहे हैं और ये बुजुर्ग स्वस्थ होकर घर लौट आए हैं।

समान्य परिवार के बुजुर्ग मनबोधन राम साहू बताते हैं कि जब शहर में कोरोना का पहला मरीज मिला तब स्वास्थ्य अधिकारियों ने मोहल्ले का सर्वे किया। उनका भी सैंपल लिया गया। मनबोधन ने बताया कि 25 मार्च को डॉक्टर आए और एम्स में भर्ती करा दिया। तब तक मुझे कुछ समझ में नहीं आया। जब पता चला कि मुझे किसी गंभीर वायरस ने बीमार किया है तो मेरे मुंह से यही निकला कि ये कहां से आ गया। वे बताते हैं कि डॉक्टर जिस सक्रियता से मेरी देखभाल कर रहे थे, उससे लग रहा था कि जरूर कोई बड़ी बीमारी है। लेकिन मैं घबराया नहीं। दिमाग में हमेशा ये बना रहा कि जरा सा वायरस इतने बड़े शरीर का क्या बिगाड़ेगा। मुझे पहले दिन से ही पता था कि बस दो-चार दिन की बात है, मैं ठीक हो जाऊंगा। वायरस को लेकर मेरे मन में कभी डर का भाव नहीं आया। हमेशा की तरह हंसी मजाक करता रहा। डॉक्टरों से भी चुहलबाजी की और उन्होंने भी मेरी बात का बुरा नहीं माना। छह दिन बाद ही 31 मार्च को मुझे जानकारी मिली की मैं पूरी तरह स्वस्थ हूं और घर जा सकता हूं।

उनका इलाज करने वाले एम्स के एक चिकित्सक कहते हैं कि बुजुर्ग को देखकर एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि कोरोना का वायरस उन पर हावी हो पाएगा। उनकी जीने की इच्छाशक्ति इतनी प्रबल थी कि कोरोना का हारना तय था। वे बताते हैं कि अमूमन लोग डॉक्टरों को आसपास देखकर आशंकित हो जाते हैं, लेकिन बुजुर्ग के मामले में ऐसा कभी नहीं दिखा। यही स्थिति 25 साल के इमरान की रही। दृढ़ इच्छाशक्ति के बूते वह भी अब स्वस्थ होकर घर लौट गया है।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/
jagran-special

ऐसे व्यक्ति जो खुश रहते हैं, सकारात्मक सोच रखते हैं और अनुशासित जीवन व्यतीत करते हैं, उनमें दृढ़ इच्छाशक्ति होती है। जीवन में पॉजिटिविटी बनी रहती है तो हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है। जब इम्यून सिस्टम मजबूत होता है तो किसी भी उम्र में संक्रमण या अन्य रोगों से लड़ने के लिए हमारा शरीर तैयार रहता है। देखा गया है कि ऐसे लोग जो अंदरूनी रूप से खुश रहते हैं और सकारात्मक सोच रखते हैं, बीमारी उनसे दूर रहती है। कोरोना संक्रमण इस सिद्धांत का अपवाद नहीं है।

– प्रो. पीके दलाल, अध्यक्ष, मनोरोग विभाग, किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ

आत्मा, परमात्मा का ही स्वरूप होती है, इसलिए वह असीम शक्तियों से युक्त ईश्वर का अंश है, इच्छाशक्ति-आत्मबल का पुंज है। जो कोई व्यक्ति स्वयं के सत्य के परिचित हो अपने इसे जागृत कर लेता है, अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण कर लेता है, वह असाधारण कार्य करने में समर्थ हो जाता है। आत्मा में निहित ईश्वर की समस्त क्षमताएं-शक्तियां उसकी सहयोगी हो जाती हैं।

–बाबा रामदेव, योगगुरु

लॉक डाउन में शारीरिक सक्रियता घट चुकी है इसलिए अब प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए मानसिक सक्रियता को जगाना बेहद आवश्यक है। आध्यात्मिक बातें और साहित्य पढ़ें और यह मंत्र कि आज जो होगा अच्छा होगा, आज जो होना है बहुत अच्छा होना है, को अगर पांच बार पढ़े, तो मन में सकारात्मक दीप्ति पैदा कर पाएंगे। इससे हमारे मष्तिष्क में न्यूरोकेमिकल और न्यूरो हार्मोन्स की वृद्धि होती है जो कि प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ती है, और यह हमें हर प्रकार के इंफेक्शन से दूर रखते हैं।

–प्रो. संजय गुप्ता, विख्यात मनोचिकित्सक, बीएचयू मनोविज्ञान विभाग के पूर्व प्रमुख

ईश्वर की समस्त शक्तियां आत्मा में निहित हैं, आत्मानुशासन ही आत्मबल है, इससे आप सर्वशक्तिमान बन सकते हैं। अतुल्य तेज, असीम सामर्थ्य और असाधरण शक्तियों को उजागर करने की क्षमता रखने वाले बन जाते हैं। यह चमत्कार आत्म विश्वास और आत्मबल का ही परिणाम है।

–स्वामी अवधेशानंद गिरि, आचार्य महामंडलेश्वर, श्रीपंचदशनाम् जूना अखाड़ा, हरिद्वार

लॉकडाउन में भूख से हुए परेशान तो गृह जिले में चलवाया लंगर

जासं, बिहारशरीफ : यह कहानी उस ट्रक चालक की है, जो खुद लॉकडाउन के दौरान मुंबई में कई दिनों तक भूखा सोया। उसे ख्याल आया कि पूरे देश में यही स्थिति होगी, कुछ किया जाए। उसने अपने गृह जिले नालंदा में भूखों और लाचार लोगों की सेवा का मन बनाया। बीटेक की पढ़ाई कर रहे भतीजे को फोन किया और बिहारशरीफ में पहाड़ी के पास मामू-भगिना मोड़ पर लंगर चालू करा दिया।

ट्रक ड्राइवर वीरेंद्र कुमार बिहार के नालंदा जिले के वाजितपुर गांव के निवासी हैं। वह मुंबई से कोलकाता के बीच ट्रक चलाते हैं। जब लॉकडाउन की घोषणा की गई, उस समय वह मुंबई में थे। वहां वह कई दिन भूखे सोए। अभी वहीं हैं। इस वेदना को समझते हुए वीरेंद्र ने भतीजे गोपाल के बैंक खाते में मुंबई से रकम भेजकर लंगर चालू कराने को कहा। उनका भतीजा गोपाल कुमार बीटेक का छात्र है। उसने अपने मित्रों से चाचा की इच्छानुसार लंगर शुरू करने पर चर्चा की। सभी इस सेवा के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

मदद के पैकेट से जल रहा जरूरतमंदों के घरों का चूल्हा

बढ़े हाथ ▶ हर दिन 350 घरों को मिलजुलकर पहुंचा रहे राशन के पैकेट्स

उप्र के रतनपुर कलां गांव के युवा संकट की घड़ी में गरीबों और जरूरतमंदों के लिए बन गए मसीहा

शाहजेब शेरी, मुरादाबाद

कोरोना से लड़ने के लिए लॉक डाउन में मदद करने वाले हाथ बढ़ रहे हैं। मुरादाबाद, उप्र के गांव रतनपुर कलां में अनेक युवा संकट की घड़ी में गरीबों और जरूरतमंदों के लिए जिस तरह मसीहा बन गए हैं, वह अनुकरणीय है।

स्वस्थ समाज

यह सिलसिला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील के बाद ही शुरू हो गया था। गांव के युवाओं ने तय किया कि गरीब परिवारों को संकट की इस घड़ी में मदद पहुंचाने का जिम्मा उठाएंगे। उन्होंने सूझबूझ के साथ योजना बनाई। चीजें जुटाई और मदद का पैकेट तैयार कर चुपके से दरवाजा खटखटाकर जो घर में मिला, उसको सौंपकर आगे बढ़ गए। अब हर दिन गांव में 350 पैकेट्स पहुंचाते हैं। युवाओं की टीम के इस कदम की जमकर सराहना हो रही है।

मुरादाबाद में लोगों के घरों पर मदद का पैकेट देने पहुंचे मुहम्मद आरिफ(दाएं)। जागरण

मुरादाबाद जिले से लगभग 15 किमी दूर हाईवे से सटे पाकबड़ा के गांव रतनपुर कलां में मोबाइल की दुकान चलाने वाले मुहम्मद आरिफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जरूरतमंदों के लिए अपील पर प्रभावित हुए। अपने मन की बात दोस्तों के साथ शेयर की। शारीरिक दूरी बनाते हुए बैठक की और योजना तैयार की गई। ऐसे लोगों की लिस्ट को फाइनल किया गया, जो प्रतिदिन मजदूरी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। 350 लोगों की लिस्ट को फाइनल किया गया। इसके बाद गांव के ही थोक विक्रेता के मोबाइल एप पर धनराशि भेज दी गई, शर्त के मुताबिक राशन के पैकेट बनकर आ गए। घरों में राशन पहुंचा दिया गया। पैकेट में आटा, दाल, चावल आदि मिलने पर बुझ चुके चूल्हे जलने लगे।

एक घर के लिए राशन का पैकेट

5 किग्रा आटा, 5 किग्रा चावल, 3 किग्रा दाल, 3 किग्रा चीनी, तीन किग्रा प्याज, तीन किलो आलू, एक लीटर तेल, दो साबुन, 20 रुपये का सर्फ का पैकेट, नमक की थैली शामिल है।

गांव के युवाओं के इस कदम की क्षेत्र में तारीफ हो रही है। दूसरे गांव प्रेरणा ले रहे हैं। आरिफ बताते है कि लॉक डाउन की वजह से परेशानी तो पूरे देश को है। हमने सोचा कि इसे अपने स्तर पर कुछ कम किया जाए। उसके बाद हमने ऐसे घरों की तलाश की, जिनको राशन की बहुत जरूरत थी। 30 युवाओं की टीम अब इन घरों को राशन पहुंचा रही है। शुक्रवार पैकेट में एक या दो-तीन दिन का राशन होता है। युवा टीम की अगुआई करने वालों में आसिफ, मुईन, समीर, रजा इलाही, माजिद, अब्दुल शामिल हैं। सभी मिलजुल चंदा जुटाते हैं, वह भी एप पर।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/
positive-news

कोरोना पर विजय पाने वाले दिनेश बोले– डरें नहीं, लड़ें

कोरोना के विजेता

तरसेम सैनी, कांगड़ा

कोरोना वायरस से डरने की नहीं, बल्कि लड़ने की जरूरत है। डॉक्टरों की सलाह का पालन करें। घबराएं नहीं। दृढ़ निश्चय, पौष्टिक आहार, गर्म पानी का सेवन करें। यही इससे बचने का मंत्र है। एक-दूसरे से दूरी बनाकर रखें और स्वस्थ रहें। यह कहना है कि हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के लंज निवासी दिनेश का। दिनेश हिमाचल के उन तीन मरीजों में से एक हैं, जिनमें कोरोना वायरस का संक्रमण पाया गया था। दिनेश ने कोरोना को पटकर उस पर विजय पाई है।

जिन तीन में संक्रमण पाया गया था, उनमें से मैक्लोडगंज निवासी तिब्बती की मौत हो चुकी है, जबकि एक बुजुर्ग महिला डॉ. राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल कांगड़ा स्थित टांडा में उपचाराधीन है। दिनेश अब स्वस्थ हैं। इनके पिछले सप्ताह लिए गए दोनों सैंपल की रिपोर्ट नेगेटिव आई है। उन्हें अब जल्द अस्पताल से छुट्टी मिल सकती है।

दिनेश उन लोगों में शामिल हैं, जिन्होंने विदेश से लौटने के बाद अपनी ट्रैवल हिस्ट्री छिपाई नहीं बल्कि वह जांच करवाने के लिए खुद अस्पताल पहुंच गए। दैनिक जागरण से बातचीत में दिनेश ने बताया कि भारत के लोगों को कोरोना के बारे में देर से पता चला, इसलिए अभी लोगों में डर है। वह सिंगापुर में काम करते हैं और वहां जनवरी में ही इस वायरस से संक्रमित मरीज आने शुरू हो गए थे। सरकार के निर्देशों का पालन करने की जरूरत है।

खुद की जांच करवाएं विदेश से लौटे लोग

दिनेश। जागरण

दिनेश ने देशभर के उन लोगों से खुद की जांच करवाने की अपील की है, जो हाल ही में विदेश से लौटे हैं। उनका कहना है कि इससे वे लोग भी स्वस्थ रहेंगे और देशवासी भी सुरक्षित। नौजवानों को कोरोना वायरस से घबराने की जरूरत नहीं हैं। बुजुर्ग सावधानी बरतें और बच्चों को भी बचाएं।

दिनेश का कहना है कि वह नहीं चाहते थे कि उनकी वजह से किसी पर मुसीबत आए। पत्नी गर्भवती है इसलिए वह भारत लौटे हैं। उनके परिवार, गांव, प्रदेश व देश पर कोई आंच न आए इसी कारण स्वयं जांच करवाने अस्पताल पहुंच गए। इसका यही उद्देश्य था कि सब स्वस्थ रहें।

दिनेश का कहना है कि उन्हें टांडा मेडिकल कॉलेज में बेहतर इलाज मिला। समय-समय पर डॉक्टरों ने उनकी जांच की। नर्सिंग स्टाफ व अन्य कर्मचारी भी दिन-रात सेवा में जुटे रहे। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि टांडा में इतना बेहतर अस्पताल है। सरकार इसे और सुदृढ़ करे।

जयराम सरकार का आभार : वे कहते हैं कि कोरोना वायरस के संक्रमण से हिमाचल प्रदेश के लोगों को बचाने के लिए जयराम सरकार बेहतर कार्य कर रही है। लोग सरकार का साथ दें। निर्देशों का पालन करके ही इस वायरस को फैलने से रोका जा सकता है।

'पॉजिटिव' ठान लें कोरोना को हराना है, रिजल्ट जरूर आएगा 'निगेटिव'

जागरण संवाददाता, पटना : 5 मार्च को इटली से मेरा बड़ा बेटा पटना लौट आया था। 8 मार्च को मैं भी नेपाल से लौटने पर बेहतर अनुभव कर रही थी। सब बढ़िया चल रहा था। 15 मार्च को काफी थकावट के साथ जुकाम, खांसी और बुखार का अहसास हुआ। इटली से लौटे बेटे के साथ 20 मार्च को जांच के लिए पटना एम्स पहुंची। डॉक्टरों ने दोनों को आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कर लिया। इस बीच हम दोनों का कोरोना वायरस को लेकर सैंपल लिया गया। 22 मार्च को एक अच्छी और एक डराने वाली खबर मिली। डॉक्टर ने बताया कि बेटे की रिपोर्ट निगेटिव है। बहुत सुकून मिला। जब मेरी बारी आई तो रिपोर्ट पॉजिटिव बताई गई। पहले विश्वास नहीं हुआ। मैंने पूछा, एम आइ पॉजिटिव? थोड़ी देर शांत रहने के बाद जवाब मिला। मैम, यस यू आर पॉजिटिव...। हालांकि पॉजिटिव सुनना हमेशा अच्छा लगता है, लेकिन यह पॉजिटिव सुनकर आधे घंटे तक सन्न रही। डॉक्टर के एक जवाब से सब बदल गया। उसे बयां करने के लिए शब्द नहीं थे। परिवार और डॉक्टरों ने भरोसा दिलाया। ठीक हुए मरीजों के आंकड़े साझा किया तो थोड़ी तसल्ली मिली। यह कहना है बिहार की अनिता विनोद का। अनिता बिहार की पहली महिला हैं जिन्होंने कोरोना को मात दी है।

आइसोलेशन में थकावट के कारण पहले दो-तीन दिन ज्यादा सक्रिय नहीं रही। परिवार, मित्र, डॉक्टर और कर्मियों ने हौसला टूटने नहीं दिया। 25 मार्च से बेहतर अनुभव करने लगी। हर दिन परिवार के सदस्य, माता-पिता और मित्रों से फोन पर बात करती थी। सभी हौसला बढ़ाते। ईश्वर पर पूरी आस्था और विश्वास है। विश्वास था कि हम ठीक होंगे। दो दिन बाद रिपोर्ट निगेटिव आने के बाद थोड़ी राहत मिली। 29 मार्च को तीसरी रिपोर्ट भी निगेटिव आई। यह 'निगेटिव' सुनते ही मेरे शरीर में सकारात्मकता का संचार हो गया। 22 मार्च का 'पॉजिटिव' और 29 मार्च के 'निगेटिव' की फीलिंग कभी नहीं भूल पाऊंगी। इस विकट समय में दुआ करने वाले सभी लोगों को बहुत-बहुत आभार। पटना एम्स के डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मियों ने काफी सहयोग किया।

हाथ जोड़कर विनती है, निर्देशों का पालन कीजिए

कोरोना पॉजिटिव होने के बाद मैंने जो अनुभव किया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि किसी ओर को यह सब न झेलना पड़े। कोरोना से बचने के लिए देशवासियों को सरकार के सभी निर्देशों का पूरा-पूरा पालन जरूरी है। हम कुछ दिन घर में रहकर थोड़े एहतियात बरतकर खुद, परिवार और समाज को इस वैश्विक महामारी से बचा सकते हैं।

प्रवासी हैं अब एकांतवासी, अहर्निश मन में राष्ट्र कल्याण

ऐसे बिताया दिन

शिवा अवस्थी, चित्रकूट

- चित्रकूट से ज्यादातर समय बाहर रहने वाले जगद्गुरु रामभद्राचार्य हैं तुलसी पीठ में
- लाखों शिष्यों को घर में रहने की सीख, मोदी व योगी के प्रयासों को सराहा

साल के 365 दिन में चातुर्मास छोड़कर बाकी समय चित्रकूट तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्यजी महाराज प्रवासी ही रहते हैं। देश-दुनिया में घूमकर दिव्यांग सेवा के लिए प्रवचन सुनाते हैं। शिष्यों से घिरे रहते हैं। लेकिन, कोरोना के संक्रमण से उपजी संकट की घड़ी में वह राष्ट्र के साथ खड़े होकर तुलसी पीठ में एकांतवासी हैं। मन में श्रीराम, माता सीता की छवि व लोक कल्याण की कामना है। अहर्निश (दिन-रात) मन में राष्ट्र कल्याण का भाव है। लेखन, स्वाध्याय, भारत और विश्वदर्शन की सीख देकर लाखों शिष्यों को घर पर रहने को कहा है।

उत्तराधिकारी आचार्य रामचंद्रदासजी महाराज ने बताया कि जगद्गुरु सुबह चार बजे उठते हैं। नित्यक्रिया के बाद तीन घंटे लोक कल्याण के लिए जप व राम चरित मानस पाठ करते हैं। चार घंटे लेखन व स्वाध्याय, शाम को कथा सुनाते हैं। बाकी समय चिंतन, सबको आशीर्वाद और नींद में गुजरता है। स्वामी रामभद्राचार्यजी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कोरोना के खिलाफ जंग की सराहना करते हैं। उनका कहना है कि संकल्प, संयम, एकजुटता व संकट काल में जन-जन के सहयोग से भारत ने विकसित देशों की अपेक्षा बेहतर किया है। आगे भी अच्छा ही होगा।

चित्रकूट में तुलसी पीठ स्थित कक्ष में उत्तराधिकारी रामचंद्र दास (खड़े) के साथ तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज। जागरण

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा...का करें जप

जगद्गुरु कहते हैं कि राम चरित मानस की चौपाई– 'दैहिक, दैविक, भौतिक तापा..राम राज नहीं काहुहि ब्यापा' को संपुट बनाकर घर पर नित्य रामचरित मानस पाठ करता हूं और अन्य लोगों को भी ऐसा करना चाहिए। बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों व परिवार को शारीरिक दूरी बनाकर बैठाएं। मानस के आदर्श आत्मसात कर प्रेम बढ़ाएं। बच्चों में हनुमान चालीसा पाठ की आदत डालें। प्रतिदिन नवाह्नपारायण करें। आध्यात्म और शास्त्रीय कर्म से संकट दूर होगा। संकट की घड़ी में अदृश्य शत्रु से लड़ने को हर कोई घर पर रुके। बाहर निकलने की मूर्खता छोड़कर संजीदगी के साथ राष्ट्रधर्म निभाएं। बहुत काम किया है, कुछ स्वजन संग आराम भी करें। नवरात्र के नौ दिन की तरह लॉकडाउन के बाकी समय को भी व्रत समझ लें। 14 अप्रैल तक कोरोना भाग जाएगा।

भूखे लोगों के लिए राजनांदगांव के पुलिस अधीक्षक की पत्नी खुद बना रहीं भोजन

मदद को बढ़े हाथ

नईदुनिया, रायपुरः छत्तीसगढ़ में लॉकडाउन को सफल बनाने और भूखे लोगों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए तरह-तरह के उपाय किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में राजनांदगांव के पुलिस अधीक्षक जितेंद्र शुक्ला की पत्नी संगीता शुक्ला ने अपनी रसोई के दरवाजे खोल दिए हैं। वह घर में रोज 40 से 50 जरूरतमंदों के लिए खाना बना रही हैं। वह खुद भोजन बनाती हैं और बस्तियों में जाकर खुद ही पूड़ी-सब्जी का वितरण करती हैं।

संगीता ने बताया कि खाने के पैकेट में पूड़ी, सब्जी, चावल और दाल दिया जा रहा है। जरूरतमंदों तक पहुंचने के लिए बकायदा एक सूची तैयार की गई है। इस सूची के आधार पर सुबह से ही तैयारी शुरू हो जाती है। संगीता अभी महासमुंद में हैं और उनके पति राजनांदगांव में हैं। वह सुबह आठ बजे से तैयारी में जुट जाती हैं। सुबह करीब 11 से दोपहर 12 बजे तक 40-50 लोगों का खाना तैयार हो जाता है।

राजनांदगांव पुलिस अधीक्षक जितेंद्र शुक्ला की पत्नी संगीता शुक्ला अपनी रसोई में गरीबों के लिए भोजन तैयार करते हुए। (नईदुनिया)

परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर उसे बांटने के लिए निकल जाती हैं। खाना बांटने के दौरान वे अपने साथ सैनिटाइजर और हैंडवाश लेकर जाती हैं। लोगों के हाथ साफ करवाने के बाद उनको भोजन देती हैं। खाने के साथ पानी की छोटी बोतल भी देती हैं। संगीता घर में दो बच्चों को संभालने की जिम्मेदारी भी निभा रही हैं। संगीता लोगों को जागरूक करने के लिए सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल भी कर रही हैं। उन्होंने अपने चार साल के बेटे विशू का एक वीडियो तैयार किया। इसमें विशू से सैनिटाइज रहने के बारे में सवाल किया जा रहा है। विशू बताता है कि हाथ को हैंडवाश करना है, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करना है और लोगों से उचित दूरी बनाए रखनी है। संगीता बताती हैं कि वे उन लोगों तक खाना पहुंचा रही हैं, जो रोज कमाते-खाते थे। इसमें कोई चाट ठेले वाला है, तो कोई रिक्शा चलाने वाला।

यादें

102 साल पहले ऐसे ही लॉकडाउन से दी थी मौत को मात

महामारी से निपटने का तरीका नहीं बदला, वैसी ही बरती जा रहीं सावधानियां

सुमित मलिक, जालंधर

कोरोना के कारण बढ़ रहे मौत के आंकड़ों ने 1918 में फैले स्पेनिश फ्लू की याद दिला दी है। 1920 तक विभिन्न अंतराल में कहर बरपाने वाले इस फ्लू ने विश्व में पांच करोड़ से अधिक लोगों की जान ली थी। भारत में मौत का आंकड़ा एक करोड़ से अधिक था। बेइंतहा तरक्की के बावजूद हालात में ज्यादा अंतर नहीं हैं। एक सदी पहले भी जिन देशों ने पहले 'लॉकडाउन' कर लिया था, वहां मौतें कम हुई थीं। जो देरी से जागे उनकी हालत आज के इटली, स्पेन और अमेरिका जैसी हुई। कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया के केलोव्ना शहर के मेयर डेनियल विल्बर सदरलैंड का 1918 में निकाला गया पब्लिक नोटिस वायरल हो रहा है।

दैनिक जागरण ने इस नोटिस की सच्चाई जानी तो पता चला कि यह नोटिस उस समय प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक अखबार 'केलोव्ना रिकॉर्ड' में लगातार तीन सप्ताह तक दिया गया। समाचार पत्र के पहले पन्ने पर भी फ्लू से होने वाले नुकसान, लगाई गई पाबंदियों की खबरें थीं। 24 अक्टूबर 1918 को प्रकाशित अंक में पहली बार मेयर ने इस वायरस के शहर में घुसने के बारे में बताया। उसी दिन डॉक्टर नॉक्स की ड्यूटी लगाकर ऐसी इमारतों की तलाश करने को कहा गया, जिन्हें आइसोलेशन अस्पताल बनाया जा सके। अखबारों में विज्ञापन भी दिया गया कि वालंटियर नर्सिंग के रूप में काम करने के इच्छुक लोग संपर्क करें।

101 years later, back to same situation.

Thursday, November 7th, 1918

CORPORATION OF THE CITY OF KELOWNA

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given that, in order to prevent the spread of Spanish Influenza, all Schools, public and private, Churches, Theatres, Moving Picture Halls, Pool Rooms and other places of amusement, and Lodge meetings, are to be closed until further notice.

All public gatherings consisting of ten or more are prohibited.

D. W. SUTHERLAND,
Mayor.

Kelowna, B.C.,
19th October, 1918.

7 नवंबर 1918 में केलोव्ना के मेयर की तरफ से अखबार में दिया गया लॉकडाउन का पब्लिक नोटिस, जो इन दिनों खूब वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया

यह लिखा है इस नोटिस में

स्पेनिश इन्फ्लुएंजा के प्रसार को रोकने के लिए सार्वजनिक और निजी स्कूलों, चर्च, थिएटर, पिक्चर हॉल, पूल रूम व मनोरंजन के अन्य स्थानों समेत लॉज मीटिंगों को अगले नोटिस तक बंद कर दिया जाए। सभी सार्वजनिक समारोहों में दस से अधिक लोगों के शामिल होने पर मनाही है। यह नोटिस 24 अक्टूबर, 31 अक्टूबर व सात नवंबर के अंक में दिया गया।

अंधविश्वास ने बढ़ाई समस्या

उस समय लोग जागरूक नहीं थे। डॉक्टर से ज्यादा धार्मिक नेताओं पर उनका विश्वास था। अंधविश्वास का भी बोलबाला था, जिस कारण मौत का आंकड़ा बढ़ता गया। भारत में तब यह फ्लू एक समुद्री जहाज से आए सैनिकों के जरिए आया। उस समय भी आइसोलेट कर व हाईजीन बढ़ाकर लोगों को ठीक किया गया।

यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के आर्काइव में इस समाचार पत्र की प्रतियां आज भी हैं। नेशनल जियोग्राफिक की एक रिपोर्ट के अनुसार लॉकडाउन का पालन कराने के लिए सरकारों ने सख्ती भी की। सैन फ्रांसिस्को में एक हेल्थ वर्कर ने तीन लोगों को गोली मार दी थी। उनकी गलती सिर्फ इतनी थी कि एक व्यक्ति ने मास्क पहनने से मना कर दिया था। अमेरिका के एरिजोना में दस डॉलर का जुर्माना लगाया गया। 2007 में नेशनल स्टडी ऑफ साइंस की दो प्रकाशित दो अध्ययन रिपोर्टों में भी बताया गया है कि इन देशों ने महामारी का प्रभाव कम किया। उन रिपोर्टों के अनुसार स्कूल, चर्च, थियेटर व सार्वजनिक समारोह पर प्रतिबंध लगाना सबसे कारगर साबित हुआ। इससे मौत की दर तेजी से गिरी। जिस शहर ने जितनी जल्दी फैसले लिए और लोगों ने साथ दिया, उतनी जल्दी ही ये प्रतिबंध उनके शहर से हटे। लॉकडाउन के कारण फिलेडेल्फिया, न्यूयॉर्क, क्वीसलैंड, बेल्टीमोर, ओमाहा जैसे प्रांतों में मृत्यु दर दस फीसद से गिरकर एक फीसद से कम रह गई।

1918 में प्रकाशित कनाडा के अखबार 'केलोव्ना रिकॉर्ड' में मिले तबाही के साक्ष्य

24 अक्टूबर 1918 को प्रकाशित साप्ताहिक अखबार केलोव्ना रिकॉर्ड का पहला पेज, जिसमें मेयर सदरलैंड के फ्लू के शहर में घुसने और एहतियात के तौर पर उठाए गए कदमों का जिक्र किया गया है। सोर्स : यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया की आर्काइव से।

स्पेनिश फ्लू से जुड़े अहम तथ्य

- सबसे पहले स्पेन ने इसके बारे में बताया, लिहाजा इसका नाम स्पेनिश फ्लू पड़ गया।
- जिस देश या प्रांत ने इसे छिपाने की कोशिश की, वे सबसे अधिक प्रभावित हुए।
- मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दादा फेड्रिक ट्रंप की 1918 में इसी फ्लू से मौत हुई थी।
- गुजरात में रहते हुए महात्मा गांधी को भी फ्लू ने जकड़ा। वह कुछ सप्ताह तक तरल पदार्थों के सहारे जीए।
- 1918 में स्पेनिश फ्लू से बच निकलने वाली 108 साल की ब्रिटिश महिला कोरोना से नहीं बच सकी। क्वारंटाइन होने के 24 घंटे के भीतर ही लंदन में दम तोड़ दिया।
- विख्यात कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की पत्नी व कई रिश्तेदारों की इस बीमारी से मृत्यु हुई। उनकी कविताओं में भी इसका जिक्र है।

दैनिक जागरण

हर दुखद घटना या समस्या में एक उपहार होता है

बदले हालात से तालमेल

कोरोना के कहर से बचने के लिए लागू किए गए देशव्यापी लॉकडाउन का एक सप्ताह गुजर गया। प्रारंभ में जो तमाम कठिनाइयां उभर आई थीं वे धीरे-धीरे दूर होती दिख रही हैं। चूंकि भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है और उसे यकायक खुद को तमाम बंधनों में बांधना पड़ा इसलिए कुछ न कुछ समस्याएं तो बनी ही रहेंगी। इन समस्याओं का सामना और समाधान करते हुए लॉकडाउन के शेष दो सप्ताह संयम के साथ व्यतीत करने के अलावा और कोई उपाय नहीं। इस दौरान कहीं कोई बड़ी समस्या न खड़ी होने पाए, यह सरकारों और उनकी एजेंसियों के साथ समाज को भी देखना होगा। कम से कम वैसा जमावड़ा तो बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए जैसा दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में हुआ। यहां तब्लीगी जमात के लोगों ने बड़ी संख्या में एकत्रित होकर जिस तरह देश भर में कोरोना वायरस का संक्रमण फैला दिया वह आपराधिक लापरवाही के अलावा और कुछ नहीं। इस कृत्य से हर किसी को सबक सीखने के साथ ही लॉकडाउन की शेष अवधि को सफल बनाने में कोई कसर नहीं उठा रखनी चाहिए।

फिलहाल यह कहना कठिन है कि दो सप्ताह बाद क्या हालात बनेंगे, लेकिन समझदारी इसी में है कि यह मानकर न चला जाए कि 14 अप्रैल के बाद सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। देश-दुनिया का अनुभव यही बता रहा है कि हमें कोरोना वायरस के खौफ से आसानी से मुक्ति नहीं मिलने वाली। इसके लिए मानसिक रूप से तैयार रहें कि हमें अर्से तक उसके साये में जीना पड़ सकता है। कोरोना वायरस से उपजी कोविड-19 महामारी एक बड़ी हद तक तो नियंत्रित हो सकती है, लेकिन अभी इसके आसार नहीं कि उससे पूरी तरह छुटकारा मिल जाएगा। इन हालात में यह आवश्यक है कि एक ओर जहां इसकी रूपरेखा बनाई जाए कि बदले हालात में हमारा सामाजिक व्यवहार कैसा हो वहीं दूसरी ओर इसकी भी कि आर्थिक-व्यावसायिक गतिविधियों का सावधानी के साथ संचालन कैसे किया जाए? यह सही समय है कि प्रधानमंत्री की ओर से गठित मंत्री समूह अपनी सक्रियता बढ़ाएं और दो सप्ताह बाद के हालात से निपटने के तौर-तरीके तय करने पर मंथन करें। यदि लॉकडाउन के दौरान आवश्यक सेवाओं से जुड़ी आर्थिक- व्यापारिक गतिविधियां संचालित हो सकती हैं तो फिर दो सप्ताह बाद अन्य कारोबारी गतिविधियों को भी सतर्कता के साथ संचालित करने के तौर-तरीके तय हो सकते हैं। निःसंदेह ये तौर-तरीके ऐसे होने चाहिए जिससे दुनिया भर को त्रस्त कर रही महामारी को सिर उठाने का मौका न मिलने पाए। बदले हालात का सामना करने और साथ ही उससे तालमेल बैठाने की तैयारी वक्त की मांग भी है और जरूरत भी।

सख्त कार्रवाई जरूरी

विदेशों से आकर अपनी ट्रैवल हिस्ट्री को छिपाने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का जम्मू-कश्मीर प्रशासन का फैसला सही है। निःसंदेह इस फैसले से लोगों पर दबाव बढ़ेगा और वे अपनी पहचान तथा ट्रैवल हिस्ट्री बताने के लिए आगे आएंगे। अभी तक जम्मू-कश्मीर में कोरोना वायरस के जितने भी मरीज आए है, वे सभी विदेशों से आए हैं या फिर उनके संपर्क में आए हैं। होना तो यह चाहिए था कि ट्रैवल हिस्ट्री छिपाने वालों के खिलाफ पहले ही सरकार कार्रवाई करती, ताकि इस प्रकार की स्थित यहां उत्पन्न ही न होती। अभी भी देर नहीं हुई है। सरकार को अपने इस फैसले को सख्ती के साथ लागू करवाने की जरूरत है। विगत दिवस कश्मीर में चार लोगों के खिलाफ मामला भी दर्ज कर लिया गया है। अभी भी सैकड़ों लोग ऐसे हैं, जो कि अपनी ट्रैवल हिस्ट्री न बताकर स्थिति को और विकराल बनाने की आशंका बनाए हुए हैं। जम्मू-कश्मीर में बहुत से लोग ऐसे हैं, जो कि सऊदी अरब, ईरान, इंडोनेशिया और बांग्लादेश सहित कई देशों से यात्रा करके आए हैं। इनमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी भी शामिल हैं। यह सही है कि हवाई मार्ग से आए ज्यादातर लोगों की एयरपोर्ट पर जांच भी हुई, मगर कई लोग रेलमार्ग से भी आए हैं। कुछ बसों में भी वापस आए हैं। समाज के जिम्मेदार नागरिकों ने तो स्वयं अस्पतालों में आकर अपनी ट्रैवल हिस्ट्री बताई और क्वारंटाइन में चले गए, लेकिन कुछ लोगों को अपनी जिम्मेदारी का अहसास नहीं है और ये लोग पूरे जम्मू-कश्मीर के लोगों की जिंदगी को खतरे में डाल रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन ने ऐसे लोगों का पता लगाने के लिए उनसे कई बार अपील करने के अलावा अपनी टीमें गठित की हैं, जो घर-घर जाकर लोगों से ट्रैवल हिस्ट्री पूछ रही हैं। विडंबना यह है कि बावजूद इसके लोग सामने नहीं आ रहे हैं। प्रशासन को चाहिए कि इससे पहले यह लोग जम्मू-कश्मीर के सवा करोड़ लोगों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ करें, विदेशों से आकर अभी तक अपनी ट्रैवल हिस्ट्री छिपाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करे। यही नहीं लोग भी सरकार द्वारा जारी किए दिशा निर्देशों का पालन करें, ताकि कोरोना वायरस को जड़ से मिटाया जा सके। यदि उन्होंने लापरवाही बंद नहीं की तो देश को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।

मानवीय मूल्यों पर संकीर्णता का आघात

प्रदीप सिंह

राजनीतिक संकीर्णता तो पहले से ही देश पर हावी थी, गहन संकट के इस दौर में धार्मिक और क्षेत्रीय संकीर्णता भी भारी पड़ रही है

देश संविधान से चलेगा या फतवों से? कुछ दिन पहले हाथ में तिरंगा लेकर संविधान की प्रस्तावना पढ़ने वाले संविधान, कानून और सरकार की नहीं फतवे की बात कर रहे हैं। एक मुख्यमंत्री अपने प्रदेश में रह रहे प्रवासी मजदूरों को निकालने की जुगत करता है। एक तब्लीगी जमात है जिसके लोग कहते हैं कि मरने के लिए मस्जिद से अच्छी जगह क्या हो सकती है? राजनीतिक संकीर्णता तो पहले ही देश पर हावी थी, संकट के इस दौर में धार्मिक और क्षेत्रीय संकीर्णता भी मानवीय मूल्यों और जीवन पर भारी पड़ रही है।

कुछ लोग सामने मौत देखकर भी इस कोशिश में जुटे दिखते हैं कि कैसे राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन को नाकाम किया जाए। क्यों? क्योंकि इसकी घोषणा नरेंद्र मोदी ने की है। उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह देश के निर्वाचित प्रधानमंत्री हैं। तब्लीगी जमात के मौलाना साद कहते हैं, 'अगर तुम्हारे तजुर्बे में यह बात है कि कोरोना से मौत आ सकती है तो भी मस्जिद में आना बंद मत करो, क्योंकि मरने के लिए इससे अच्छी जगह और कौन सी हो सकती है।' इस मौलाना के मुताबिक कोरोना कोई बीमारी नहीं, दूसरे धर्म के लोगों की साजिश है मस्जिदें बंद करवाने की। मौलाना के इस ज्ञान का नतीजा यह हुआ कि जमात में आए लोगों ने देश के 19 राज्यों में कोरोना वायरस के संक्रमण का बड़ा संकट खड़ा कर दिया है। मौलाना को कोई बताए कि जिन संक्रमित तब्लीगियों की मौत हो रही है उनमें से कोई मस्जिद में नहीं मर रहा। जमात में शामिल लोगों के संक्रमण से होने वाली मौतों का जिम्मेदार इसी मौलाना को माना जाना चाहिए और इसी के मुताबिक उसके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। मौलाना का कृत्य पूरे देश के स्वास्थ्य के लिए खतरा बन गया है। तब्लीगियों की इस करतूत से भी ज्यादा आश्चर्य और क्षोभ की बात यह है कि कई लोग मौलाना के समर्थन में खड़े हो गए हैं।

कुछ दिन पहले तक नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में तिरंगा हाथ में लेकर संविधान की प्रस्तावना पढ़ने वालों की देश के संविधान और पंथनिरपेक्षता के प्रति निष्ठा का दिखावटी नकाब उतर गया है। बॉलीवुड के जावेद अख्तर लेफ्ट लिबरल्स के चहेते हैं। वह अपने को पंथनिरपेक्षता का झंडाबरदार मानते हैं। उन्हें लगता है कि इस देश में पंथनिरपेक्षता उनके जैसे लोगों के कंधे पर ही टिकी हुई है। उनका ट्वीट आया कि वह अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष ताहिर महमूद की उस अपील का समर्थन करते हैं जिसमें कहा गया है कि देवबंद फतवा जारी करे कि संक्रमण रोकने के लिए मस्जिदें बंद कर दी जाएं। आखिर इसे जहालत कहें या सांप्रदायिकता? क्या इन्हें पता नहीं कि यह देश संविधान से चलता है, शरिया से नहीं? देश की सरकार

अवधेश राजपूत

ने आपदा प्रबंधन कानून के तहत लोगों के इकट्ठा होने पर प्रतिबंध लगा दिया, लेकिन उनकी नजर में सरकार के आदेश और प्रधानमंत्री की अपील कोई मायने नहीं रखती। क्या वह यह कहना चाहते हैं कि इस देश का मुसलमान संविधान और कानून से नहीं फतवों से चलता है? इससे भी ज्यादा चिंता की बात यह है कि इस पर तथाकथित पंथनिरपेक्ष बिरादरी के किसी सदस्य की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। उनके मुंह भी सिले हुए हैं जो दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत धारावाहिक दिखाने पर विलाप कर रहे थे। क्या फतवे से समाज चलाने की बात करना पंथनिरपेक्षता है और रामायण-महाभारत दिखाना सांप्रदायिकता?

संकट की इस घड़ी में देश के कुछ मुख्यमंत्रियों के तौर-तरीकों पर भी ध्यान दीजिए। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल चार लाख लोगों को खाना खिलाने का दावा कर रहे थे, पर यह नहीं देख रहे थे दिल्ली में उत्तर प्रदेश और बिहार के मजदूरों को दिल्ली छोड़ने के लिए मजबूर किया गया। अफवाह फैलाई गई कि उत्तर प्रदेश की सीमा पर बसे खड़ी हैं, ले जाने के लिए। इसके बाद डीटीसी की बसें लगाकर उन्हें उप्र की सीमा पर छोड़ भी दिया गया। राष्ट्रीय आपदा के इस दौर में यह जो मानवता विरोधी काम किया गया वह देश हित में है या विरोध में, आप तय करें। केजरीवाल को अभी डेढ़ महीने पहले इन्हीं लोगों के वोट से फिर से सत्ता मिली है। केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार के चार वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ इसके लिए कार्रवाई की है। दूसरे मुख्यमंत्री हैं, उत्तर प्रदेश के योगी आदित्यनाथ। यूपी सीमा पर हजारों लोगों के जमा होने की खबर मिलते ही आधी रात को एक हजार बसों, ड्राइवरों और उनके सहायकों का इंतजाम किया और सबको अपने गंतव्य तक न केवल पहुंचाया, बल्कि उनके खाने और स्वास्थ्य की जांच तथा निगरानी का प्रबंध किया। बिहार के मजदूरों को बिहार की सीमा तक पहुंचाया। वे अकेले मुख्यमंत्री हैं जो कोरोना के खिलाफ युद्ध में सबसे ज्यादा सक्रिय हैं। राज्य के विभिन्न हिस्सों का दौरा कर रहे हैं। साढ़े 27 लाख मनरेगा मजदूरों का पैसा उनके खाते में पहुंचा दिया। उप्र पुलिस लोगों को राशन और खाना देने में जुटी है। तीसरे मुख्यमंत्री हैं, बिहार के नीतीश कुमार। उप्र की सीमा से बसें चलीं तो उन्होंने घोषणा कर दी कि किसी को बिहार की सीमा में घुसने नहीं देंगे। क्या किसी मुख्यमंत्री को अपने लोगों के बारे में ऐसा बोलना चाहिए?

धार्मिक, राजनीतिक व क्षेत्रीय संकीर्णता के ऐसे उदाहरण एक ही बात की ओर इशारा करते हैं कि ये निहित स्वार्थ राष्ट्रहित पर भारी पड़ रहे हैं। ऐसे नेताओं की कमी नहीं है जो संकट के समय भी अपने राजनीतिक हित की तलाश में रहते हैं और उसके लिए किसी हद तक जाने को तैयार हैं। इनके बरक्स पीएम नरेंद्र मोदी हैं जो दुनिया के सबसे बड़े लॉकडाउन का जोखिम उठाने को तैयार हैं, ताकि लोगों का जीवन बच सके। उन्हें चिंता है अपने देशवासियों की। वह हाथ जोड़कर कह रहे हैं कि अपनी सुरक्षा के लिए घर पर रहें। वह माफी मांग रहे हैं उन मजदूरों से जिन्हें परेशानी हो रही है। क्या आपने परेशानी देने वालों की जुबान से माफी का शब्द सुना। अपने देश में एक ऐसा वर्ग है जो यह चाहता है कि प्रधानमंत्री नाकाम हों। इससे देश और बड़े संकट में फंसता है तो फंसे, पर मोदी को जाना चाहिए। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जनता जनार्दन होती है। इनको अपने प्रधानमंत्री पर भरोसा है, पर प्रधानमंत्री जी इस संकट का सबक यह है कि समय आ गया है जब कानून के वैभव (मैजेस्टी ऑफ लॉ) की सख्ती से स्थापना हो।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

संयम और अनुशासन की याद दिलाते श्रीराम

केशव प्रसाद मौर्य

भगवान राम ने धैर्य और सहनशक्ति का जैसा परिचय दिया वैसा ही परिचय देने की जरूरत आज भी है

आज जब दुनिया कोरोना संकट से जूझ रही है और सामाजिक मेल-मेलाप से बचने यानी सोशल डिस्टेंसिंग की आवश्यकता रेखांकित की जा रही है तब संयम और अनुशासित जीवन की महत्ता बढ़ गई है। देश में लॉकडाउन की घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री ने लोगों को एक तरह की लक्ष्मण रेखा खींच कर अपने घर पर रहने की अपील की। लक्ष्मण रेखा को एक तरह का लॉकडाउन कहा जा सकता है, जो मां सीता की सुरक्षा के लिए था। आज जब लक्ष्मण रेखा की चर्चा बारंबार हो रही है तब भगवान राम का स्मरण हो आना स्वाभाविक है, क्योंकि उनका पूरा जीवन संयम और अनुशासन का पालन करते हुए बीता। चूंकि उन्होंने अनेक कष्ट सहकर हर तरह की मर्यादा का पालन किया इसीलिए वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। उन्होंने पुत्र, पिता, भाई, पति और साथ ही शासक के रूप में जिस तरह मर्यादाओं का पालन किया वह हर किसी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इसमें कोई संशय नहीं कि आज संयम और अनुशासन के साथ हर तरह की मर्यादाओं का पालन करने की जरूरत कहीं अधिक बढ़ गई है। भगवान राम ने अपने जीवनकाल में हर व्यक्ति की गरिमा और प्रतिष्ठा की जैसी चिंता की, आज वैसी ही चिंता हम सब भी करें, इसकी भी आवश्यकता बढ़ गई है। इसका कारण यही है कि पूरा देश लॉकडाउन है और इस समय समाज के निर्धन, वंचित तबके का विशेष ध्यान रखना हम सबका नैतिक दायित्व है। इस नैतिक दायित्व का निर्वाह जिस तरह भगवान राम ने किया वह हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके तो मौजूदा संकट से आसानी से पार पाया जा सकता है। हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि राम का सारा का सारा जीवन सामाजिक मूल्यों का चिंतन है।

वनवासी जीवन जीने और राजा बनने के समय उन्होंने समाज में समरसता और मर्यादा के जो मानदंड स्थापित किए उनका अनुकरण करना आज और अधिक आवश्यक जान पड़ रहा है। भगवान राम ने अपने संपूर्ण जीवन में धैर्य के साथ सहनशक्ति का जैसा परिचय दिया वैसा ही परिचय देने की जरूरत आज देश ही नहीं पूरी दुनिया को भी है। ऐसी ही जरूरत वंचित लोगों के कुशलक्षेम की चिंता करने की भी है। ऐसा करके ही हम कोरोना रूपी महासंकट को मात दे सकते हैं। इससे शुभ और कुछ नहीं कि संयम और अनुशासन का परिचय देने के मामले में अद्भुत मिसाल कायम करने वाले भगवान राम अपनी प्रभुता, लौकिकता और पौराणिकता के साथ अपने वैकल्पिक सिंहासन पर शोभायमान हो गए हैं और कुछ वर्ष बाद अपने जन्म स्थान पर अधिष्ठित होंगे। इसके लिए उन्हें कई सदियों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी, क्योंकि मुगल शासक बाबर के आदेश पर उसके सेनापति मीर बकी ने रामजन्मभूमि मंदिर का विध्वंस करके उस स्थान पर मस्जिद का निर्माण किया, जिसे 1940 तक मस्जिद-ए-जन्म स्थान कहा जाता रहा। एक तरह से भगवान राम को पांच सौ साल का इंतजार करना पड़ा। राम, कृष्ण और शिव के बिना भारत की कल्पना करना भी मुश्किल है। समाजवादी चिंतक राममनोहर लोहिया ने कहा था कि 'राम इस देश के कर्म, कृष्ण इसके हृदय और शिव इसके मष्तिष्क हैं।' राम, कृष्ण और शिव की त्रयी ही भारत को अद्भुत बनाती है। ऊर्जावान बनाती है और विश्व में आध्यात्मिक गुरु का दर्जा प्रदान करती है।

यह अद्भुत योग है कि हमारी आस्था का धाम अयोध्या जब रामजन्मभूमि मंदिर निर्माण की गवाह बन रही है, तब देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बतौर सांसद विश्व की उस सबसे प्राचीनतम नगरी काशी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जहां बाबा विश्वनाथ खुद विराजमान हैं। राम से बड़ा राम का नाम है। राम नाम ने देश की हवा बदल दी। यह उनका ही आशीर्वाद था कि मध्यकाल में महान संत गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस जैसी अलौकिक रचना कर उसे घर-घर पहुंचा दिया। तुलसीदास जी ने अपनी इस रचना से घर-घर को राम मंदिर बना दिया। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना काशी में रहकर पूरी की। काशी और अयोध्या का संबंध बहुत गहरा है। रामचरितमानस की रचना के करीब तीन सौ साल बाद अशोक सिंहल के नेतृत्व में विश्व हिंदू परिषद ने रामजन्मभूमि की मुक्ति का बिगुल बजाया जो एक शंखनाद में बदल गया। रामजन्मभूमि आंदोलन देखते-देखते राष्ट्रीय भावनाओं के प्रकटीकरण का आंदोलन बन गया। अशोक जी ने इसके माध्यम से देश की मुख्यधारा की राजनीति बदल दी। ध्यान रहे कि इस आंदोलन ने भी लोगों के धैर्य को रेखांकित किया। एक बार फिर देश को धैर्य धारण करने की जरूरत है।

राम मंदिर को आज सही मायने में राष्ट्रमंदिर कहना अधिक उपयुक्त होगा। उत्तर प्रदेश सरकार राम मंदिर के साथ-साथ पूरी अयोध्या का ही उसका पुराना गौरव स्थापित करने के लिए संकल्पित है। फैजाबाद जिले का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया गया है। ताकि इसके समूचे क्षेत्र का समुचित और समन्वित विकास किया जा सके। हमें पूरा विश्वास है कि राम मंदिर के निर्माण पूरा होने तक अयोध्या धाम कई विश्वस्तरीय सुविधाओं से लैस होगा और दुनिया के पर्यटन नक्शे पर इसका विशेष स्थान होगा। कुछ समय बाद भगवान राम का मंदिर जब बनकर तैयार होगा तब यह उम्मीद की जाती है कि अपना देश मुक्त होकर आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक-कूटनीतिक तौर पर मजबूत पायदान पर होगा। ऐसा ही हो, इसके लिए हमें भगवान राम के जीवन से प्रेरणा लेनी होगी। ऐसा करना इसलिए और आवश्यक है, क्योंकि उनके मानवीय गुणों और विशेषकर संयम, अनुशासन और मर्यादाओं के पालन के प्रति समर्पण को अपनाने से हमें कोरोना संकट को दूर करने में मदद मिलेगी।

(लेखक उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

मार्गदर्शक

भगवान श्रीराम के जीवन में समस्याओं का एक अविराम घटनाक्रम हुआ, लेकिन हर परिस्थिति में उनका संयम बना रहा। वे हर हाल में आमजन की भलाई की सोचते रहे। राम का जीवन ऐसे आदर्शों और संघर्षों का एक श्रेष्ठ उदाहरण है जिन्हें आमजन हों या जन-प्रतिनिधि, अपने जीवन में उतारें तो एक सभ्य और संवेदनशील समाज बनाया जा सकता है। बिना किसी भेदभाव के जनकल्याणकरी नीतियों के जरिये समानता और मानवीयता पोषित कर समाज में हर पहलू में बदलाव लाया जा सकता है।

दरअसल आज की स्वार्थी राजनीति से लेकर विखंडित हो रहे समाज तक, हर ओर मर्यादा को रेखांकित किया जाना आवश्यक है। आज संयम और धैर्य, मानवीय और नैतिक गुणों को जीवन में जगह देने की आवश्यकता है। देखने में आ रहा है कि मर्यादा का मान जीवन के किसी क्षेत्र में नहीं बचा है। तभी तो अर्थ का अनर्थ अब हर ओर देखा जा सकता है। यही वजह है कि कोरोना जैसी व्याधि से लड़ने का मामला हो या देश को भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्वार्थ और अपराधों के बढ़ते आंकड़ों से निकालने की बात, जिस चेतनासंपन्न, सहनशील और धैर्यवान व्यवहार को हम भुला बैठे हैं, उसकी आज के अराजक समय में सबसे ज्यादा जरूरत है। यों भी वर्तमान समय में हमारे परिवेश में घटित हो रही हर अकुशल घटना के पीछे मानवीय संवेदनाओं का मर जाना ही अहम कारण है।

आज आम लोगों के स्वास्थ्य से जुड़ी भयावह चिंताओं के बावजूद भी जो राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप, अशांति और अराजकता का माहौल बना हुआ है, उसमें जड़ों की ओर लौटना और मानवीय मूल्यों को सहेजना जरूरी प्रतीत हो रहा है। ऐसे में निःस्वार्थ भाव से जीना भूलते जा रहे इंसानों को मर्यादा पुरुषोत्तम राम का आदर्शों भरा जीवन बहुत कुछ सिखा सकता है। उनकी सीख संपूर्ण समाज के लिए जीवनदायी साबित हो सकती है।

डॉ. मोनिका शर्मा

कोरोना से जंग जीत ही लेंगे

अंशुमाली रस्तोगी

कोरोना वायरस के प्रति बरती लापरवाही इटली, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी और अमेरिका को कितनी भारी पड़ी है, निरंतर हम देख-पढ़ रहे हैं। बावजूद इसके हम गंभीर नहीं दिखते। स्वयं प्रधानमंत्री और राज्य सरकारों के अपील करते रहने के बाद भी बेपरवाह लोगों का सड़कों पर निकलना जारी है। पता नहीं लोग समझना नहीं चाहते या समझकर भी अनजान बने रहना चाहते हैं। कोरोना को हलके में लेने की वजह से ही बाहर के देशों का इतना बुरा हाल हुआ है। अभी हमारी कोरोना के खिलाफ जंग जारी ही है कि ऊपर से तब्लीगी जमात ने देश को बड़ी मुसीबत में डाल दिया है। ऐसे भीषण समय में जब मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारा आदि सब पूर्णतः बंद हैं, इस कथित धार्मिक आयोजन का क्या औचित्य था, समझ से परे है। जब पूरी दुनिया कोरोना से लड़ रही है, ऐसे में हजारों लोगों का एक जगह जुटना और विदेशों से आए लोगों की जानकारी न देना बड़ा पाप है। इससे सामूहिक संक्रमण का खतरा भी बढ़ गया है।

अगर हम एक बार कोरोना वायरस को मात दे पाए तो हमें एक-दूसरे से मिलने के मौके आगे भी मिलते रहेंगे

यह एक ऐसा वायरस है, जिससे खुद की रक्षा खुद ही की जा सकती है। सरकार और डॉक्टर्स जो भी बेहतर हो सकता है, सब कर रहे हैं, पर अपना ख्याल हमें आप ही रखना होगा। लॉकडाउन ही एकमात्र ऐसा विकल्प है, जिससे स्थिति को काबू में किया जा सकता है। शर्त बस इतनी है कि हर कोई इसका पालन करे। खुद तो बचें ही दूसरों को भी बचाएं। क्या हुआ जो हम अभी एक-दूसरे से नहीं मिल पा रहे। क्या हुआ जो अभी हमारे बीच समूह में रहकर बातें नहीं हो पा रहीं। ऐसे मौके हमें आगे मिलते रहेंगे, अगर हम कोरोना को मात दे पाए तब। सामाजिक दूरियां रहेंगी तो हमारे बीच बहुत कुछ बचा रहेगा। क्योंकि यह संक्रमण किसी रिश्ते या संबंध की नाजुकता को नहीं मानता-समझता। इस नाजुकता को फिलहाल हमें ही समझना होगा।

धर्म और ईश्वर को अभी अपने-अपने घरों से ही मानिए एवं याद कीजिए। तब्लीगी जमात जैसी लापरवाही कितनों पर भारी पड़ेगी, इसकी कहानी आगे सामने आएगी। न धर्म कहीं जा रहा है न खुदा न ईश्वर। सब वहीं हैं जहां कल थे। कोरोना के खिलाफ चल रही इस लड़ाई में चीन पर निर्भरता को कम नहीं खत्म करना होगा। सुना है, दुनिया को जानलेवा वायरस देने वाला चीन अब मास्क बना रहा है। अन्य देशों को भी भेज रहा है। यानी खुद मर्ज भी देता है और इलाज भी खुद ही करेगा। चीन से दूरी समय की मांग है।

भारत सक्षम है कोरोना से लड़ पाने में, लेकिन तब ही जब देशवासियों का सहयोग साथ रहे। हम घरों में रहें। अपनी ड्यूटी को समझें। नहीं तो कुछ लोगों की लापरवाही और अज्ञानता पूरे देश के लिए मुसीबत बन सकती है। इस वक्त जो लड़ लेगा, आगे वही बचा भी रहेगा। सामाजिक और आर्थिक दिक्कतें जरूर आएंगी, जब वो वक्त नहीं रहा तो ये वक्त भी नहीं रहेगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

विपक्ष भी सीखे कुछ सबक

पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. अश्विनी कुमार ने अपने आलेख 'सबक सिखाने वाली महामारी' में प्रधानमंत्री मोदी को सीख दी है कि वे देश के लोगों के जीवन की रक्षा पूरी गरिमा के साथ करें। लेखक ने मोदी के कोरोना-विरोधी प्रयासों में मानवीय गरिमा के विरुद्ध क्या देख लिया, यह स्पष्ट नहीं है। जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन जैसे कठिन किंतु आवश्यक उपाय थोड़ी-बहुत कठोरता की मांग तो करते ही हैं। याद रखिए, इन उपायों के सहारे मोदी कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या कम रखने में कामयाब हुए हैं। 30 जनवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना को महामारी घोषित किया। मोदी उसके काफी पहले कई कदम उठा चुके थे। 17 जनवरी को उन्होंने चीन की यात्रा न करने की सलाह जारी की। 18 को उनकी सरकार ने चीन एवं हांगकांग से आने वालों की स्क्रीनिंग शुरू कर दी। 30 को भारत में कोरोना का पहला रोगी मिला। उसी दिन चीन की यात्रा के विरुद्ध एक और सख्त सलाह जारी की गई। 3 फरवरी को चीनी नागरिकों को ई-वीजा की सुविधा बंद कर दी गई। 22 फरवरी को सिंगापुर, नेपाल, इंडोनेशिया, वियतनाम, मलेशिया से आने वाली उड़ानों की स्क्रीनिंग शुरू हुई। 26 फरवरी को इस सूची में ईरान, इटली, कोरिया, मकाऊ आदि शामिल किए गए। 4 मार्च को सभी विदेशी यात्रियों के लिए आइसोलेशन अनिवार्य किया गया। 16 मार्च को कोरोना-ग्रस्त मुख्य देशों के यात्रियों पर प्रतिबंध लगा। कहना न होगा मोदी सरकार ने बिना हिचकिचाहट भारत को सुरक्षित रखने के लिए लगातार उपाय किए। विश्व के देश जब चीन के खिलाफ कोई भी यात्रा-संबंधी पाबंदी लगाने की सोच भी नहीं रहे थे, भारत ने वे प्रतिबंध व्यवहार में ले आए थे। इसी प्रकार लॉकडाउन के संबंध में भारत अगुआ रहा। लेखक जरा जवाब दें, कांग्रेस के बड़े नेता लॉकडाउन का खुली या दबी जबान में विरोध अथवा उपहास क्यों कर रहे थे? इस विषय में मोदी सरकार के कदम सख्त होते हुए भी जनहित/देशहित में हैं। इसके लिए लेखक की ओर से क्या कोई धन्यवाद नहीं बनता? एक लेखकोचित परिपक्वता उन्हें दिखानी चाहिए थी। चीन ने जो कोरोना वायरस बनाकर उसे विश्व के विनाश हेतु छोड़ा, उस आपराधिक दुष्कृत्य के लिए चीन की भर्त्सना के दो शब्द लेखक के पास क्यों नहीं हैं?

अजय मित्तल, मेरठ

सख्ती से लगे पाबंदी

रामायण में प्रसंग आता है कि लंका पर चढ़ाई के लिए श्रीराम ने समुद्र से रास्ता देने को तीन दिन प्रार्थना की, लेकिन समुद्र की लहरें और ऊंची-ऊंची उठ विकराल रूप धारण करने लगीं। तीन दिन बाद भगवान का धैर्य जवाब दे गया, उन्होंने अपने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई और क्रोध पूर्वक कहा कि भय के बिना विनय का कोई महत्व नहीं होता। अर्थात दूसरे शब्दों में कहें तो किसी कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए भय की भी आवश्यकता पड़ती है। विनय न मानति जलधि जड़, गए तीन दिन बीत, बोले राम सकोप तब, भय बिन होय न प्रीत। मोदी जी द्वारा किया गया निवेदन कि 21 दिन के लॉकडाउन को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लें एवं समय-समय पर शासन, प्रशासन और पुलिस द्वारा सचेत किए जाने के बावजूद कुछ तथाकथित कर्मठ लोग सड़कों पर स्वच्छंद रूप से घूमने फिरने की कोशिश करते रहते हैं। वास्तविकता यह है कि इनमें कई को घरवालों से हटकर अत्यावश्यक फोन करने हैं, कई धूमपान, गुटका या किसी पेय इत्यादि की चाहत में घर से बाहर आते हैं। प्रशासन की आंख में धूल झोंकने के लिए ये हाथ में दूध का डिब्बा, दवा की शीशी, टेबलेट की स्ट्रिप रखकर झांसा देने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोगों पर प्रशासन को सख्ती दिखानी ही होगी, वरना ये संपूर्ण राष्ट्र की मेहनत पर पानी फेर देंगे। ये उस कपोत की तरह हैं, जो बिल्ली को देखकर आंख मूंद लेता है कि यह मुझे नहीं खाएगी। प्रशासन को ऐसे लोगों पर सख्ती से पाबंदी लगानी ही होगी। साम, दाम, दंड एवं भेद के द्वारा सफलता प्राप्त हमारे प्राचीन वांग्मय में भी मिलती है। मां को भी ज्वर ठीक करने को अपने बच्चे को कभी-कभी कड़वी दवा देनी ही पड़ती है। ऐसे लोग वस्तुस्थिति को समझें, अपने आपको योद्धा ना मानें।

डॉ. मनोज कुमार शर्मा, स्याना

मेलबाक्स

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

455 लोग प्रति वर्ग किमी में रहते हैं भारत में, जबकि इसकी तुलना में चीन में 148 लोग, इटली में 205 और ईरान में 50 लोग इतने क्षेत्र में निवास करते हैं।

जयंतीलाल भंडारी
अर्थशास्त्री

आजकल

आपदा के वक्त कुछ आर्थिक उम्मीदें

कोविड-19 के प्रकोप ने भारत समेत सभी देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर बुरा असर डाला है। लेकिन कोरोना संकट और लॉकडाउन की चुनौतियों के बीच देश में तीन महत्वपूर्ण आर्थिक अनुकूलताएं उभरती दिख रही हैं, जिनसे देश की गिरती अर्थव्यवस्था को सहारा मिल सकता है। इनमें पहली अनुकूलता देश में पर्याप्त खाद्यान्न भंडार से संबंधित है। दूसरी अनुकूलता है वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में भारी कमी और तीसरी बड़ी अनुकूलता है देश में सोने के आयात में भारी गिरावट

कोरोना महामारी और देशव्यापी लॉकडाउन के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा गरीब, किसान, महिला एवं अन्य प्रभावित वर्गों के लोगों को राहत पहुंचाने का जो एक लाख 70 हजार करोड़ रुपये का बहुआयामी पैकेज घोषित किया गया, वह सही दिशा में उठाया गया कदम है। इसी तरह रिजर्व बैंक द्वारा उद्योग-कारोबार एवं आम लोगों को वित्तीय और बैंकिंग संबंधी राहत देने के लिए किए गए कई महत्वपूर्ण एलान भी सराहनीय ही कहे जाएंगे। इसमें दोमत नहीं कि कोरोना महामारी के इस विकट दौर में देश के करोड़ों लोगों की आर्थिक कठिनाइयों को कम करने के लिए नया आर्थिक पैकेज और बैंकिंग राहत अनिवार्य जरूरत बन गई थी, लेकिन इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि सुस्ती के दौर में आगे बढ़ रही देश की अर्थव्यवस्था पर इन कदमों से वित्तीय बोझ भी बढ़ेगा। फिलहाल तो लॉकडाउन के बाद देश की आर्थिक गतिविधियों का अनुमान लगाना एकदम अकल्पनीय हो गया है।

इस बुरे दौर में कुछ संकेत भी उभरे हैं जो आर्थिक लिहाज से अच्छे कहे जा सकते हैं। निश्चित रूप से इस वक्त देश की सबसे बड़ी अनुकूलता हमारे सरकारी गोदामों में खाद्यान्न, दलहन और तिलहन का पर्याप्त भंडार होने की है। देश का मौजूदा खाद्यान्न भंडार करीब डेढ़ वर्ष तक देश के लोगों की खाद्य संबंधी जरूरतों को पूरा कर सकता है। अप्रैल 2020 तक देश के सरकारी भंडारों में करीब 10 करोड़ टन खाद्यान्न का भंडार होगा। देश में चल रही विभिन्न जन-कल्याणकारी योजनाओं के तहत करीब छह करोड़ टन अनाज वितरित किया जाता है। केंद्र सरकार का मानना है कि लॉकडाउन के मौजूदा दौर में राज्यों द्वारा लगभग तीन करोड़ टन खाद्यान्न की मांग तुरंत की जा सकती है। इससे देश के सभी राज्य आगामी छह महीने तक अपने-अपने राज्यों में लोगों की खाद्यान्न जरूरतों को सरलता से पूरा कर पाएंगे। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि इस वर्ष खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। साथ ही कृषि विशेषज्ञों ने आगामी मानसून की अच्छी संभावनाओं के अनुमान प्रस्तुत किए हैं।

अब दूसरी एवं तीसरी अनुकूलता की बात। यदि हम देश के आयात बिल को देखें तो पाते हैं कि इसमें पिछले कई वर्षों से लगातार पहला क्रम कच्चे तेल का और दूसरा क्रम सोने का है। अब बदले हुए वैश्विक आर्थिक घटनाक्रम के कारण भारत को इन दोनों प्रमुख मदों पर व्यय में कमी से भारी बचत होगी। ऐसी बचत से देश के व्यापार घाटे और वित्तीय घाटे में कमी आने का परिदृश्य रेखांकित होते हुए दिखाई दे सकेगा।

कोरोना प्रकोप और वैश्विक सुस्ती के कारण दुनिया भर में कच्चे तेल की मांग में भारी कमी आती जा रही है, जिससे वैश्विक बाजार में इसकी कीमतें घट रही हैं। इससे हमारे देश में भी पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कमी आ रही है। दुनिया में कोरोना वायरस के प्रकोप से कच्चे तेल की कीमत वर्ष 1990 के 30 साल बाद अब फिर सबसे कम हो गई है। कच्चे तेल की कीमत 25 मार्च को घटकर करीब 30 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गई है। इतना ही नहीं ओपेक देशों और रूस के बीच तेल उत्पादन में कटौती को लेकर सहमति नहीं बन पाई और सऊदी अरब ने आक्रामक प्राइस वॉर छेड़ने का एलान किया है। इससे आगे चलकर तेल की कीमतें और घटेंगी। गोल्डमैन सैक्स ने वर्ष 2020 की दूसरी एवं तीसरी तिमाही के लिए कच्चे तेल की कीमत अनुमान को घटाकर 20 से 25 डॉलर प्रति बैरल कर दिया है। अर्थविशेषज्ञों का कहना है कि वर्ष 2020 में कच्चे तेल की कीमतों में भारी कमी से सरकार को ढांचागत विकास के लिए फंड जुटाने में मदद मिलेगी। साथ ही राजकोषीय घाटे में कमी आएगी। पेट्रोलियम उत्पादों के दाम घटने से भारतीय ग्राहकों को भी फायदा मिलने की संभावना बन गई है।

जहां तक स्वर्ण आयात का सवाल है तो दुनिया के साथ-साथ भारत में भी सोने के दाम ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। लेकिन अधिक कीमत के कारण सोने की मांग नहीं बढ़ी है। देश में इस वर्ष सोने की मांग करीब 30 प्रतिशत घटने की संभावना है। लोग शादी-विवाह और पारिवारिक कार्यों के लिए रिसाइक्लिंग कराकर पुराने सोने का उपयोग कर रहे हैं। स्वर्ण विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष देश में सोने की मांग करीब 500 से 550 टन के करीब आ जाएगी। साथ ही पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष सोने की रिसाइक्लिंग करीब 110 फीसद बढ़ जाएगी।

यहां पर यह भी उल्लेखनीय है कि मांग घटने के कारण देश में सोने का आयात हालिया बीते वित्त वर्ष 2019-20 में अप्रैल-दिसंबर के दौरान करीब नौ प्रतिशत घटकर 24.64 अरब डॉलर रहा। सोने के आयात में कमी से देश का व्यापार घाटा कम होकर अप्रैल-दिसंबर अवधि में 133.27 अरब डॉलर रहा, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 163.27 अरब डॉलर रहा था। स्पष्ट है कि सोने के आयात में कमी देश का एक राहत भरा आर्थिक पक्ष बन गया। ये तमाम अनुकूलताएं इस विकट समय में हमें राहत की कुछ उम्मीद देती हैं। यदि कच्चे तेल में गिरावट और स्वर्ण के आयात में निरंतर कमी का ऐसा ही परिदृश्य आगे भी बना रहा तो इससे सरकार को अपना वित्तीय बोझ कम करने में काफी मदद मिलेगी। ऐसा होने पर कोरोना प्रकोप से आर्थिक महामारी का सामना कर रही भारतीय अर्थव्यस्था के लिए कुछ सुकूनभरा परिदृश्य दिखाई दे सकेगा तथा व्यापार घाटा घटता दिखाई देगा।

बहरहाल हम उम्मीद करें कि सरकार देश में सर्वाधिक रोजगार देने वाले छोटे उद्योग, कारोबार को मुश्किलों से बचाने के लिए उपयुक्त नए आर्थिक पैकेज का एलान शीघ्र ही करेगी। सरकार ने जिस तरह अब तक कोरोना से जंग के पहले चरण में बचाव के लिए जनता कर्फ्यू, देशव्यापी लॉकडाउन और राहत पैकेज जैसे सफल कदम उठाए हैं, अब सरकार अगले चरण में ऐसे रणनीतिक कदम आगे बढ़ाएगी, जिससे देश के उद्योग-कारोबार जगत सहित संपूर्ण अर्थव्यवस्था को आसन्न मंदी के दौर से बचाया जा सकेगा। साथ ही देश के करोड़ों लोगों को भी इस विकट मुश्किल घड़ी में बहुत कुछ आर्थिक राहत दिलाई जा सकेगी।

कोरोना से डरें नहीं, मुकाबला करें

प्रो. प्रदीप मिश्रा

कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए देश 14 अप्रैल तक घरों में कैद है। हालांकि कुछ लोग अभी भी मामले की गंभीरता को नहीं समझ रहे हैं और लॉकडाउन को तोड़ने का अपराध कर रहे हैं। यदि सभी लोगों ने सरकार के निर्देशों का पालन नहीं किया तो लॉकडाउन का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाएगा। इससे देश को भीषण संकट का सामना करना पड़ सकता है। कई स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने आने वाले हफ्तों में संक्रमण में तेज वृद्धि की आशंका जताई है। उन्होंने यह भी आशंका जताई है कि भारत में घनी आबादी को देखते हुए यहां कोरोना वायरस का प्रकोप बदतर हो सकता है। विश्व बैंक के अनुसार भारत में 455 लोग प्रति वर्ग किमी में रहते हैं, जबकि इसकी तुलना में चीन में 148 लोग, इटली में 205 और ईरान में 50 लोग इतने क्षेत्र में निवास करते हैं। इसके अलावा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा एक ताजा आंकड़ा जारी किया गया है जो बताता है कि प्रति 84,000 भारतीयों पर एक आइसोलेशन बेड है। एक दूसरी रिपोर्ट कहती है कि भारत में सिर्फ 40,000 वेंटिलेटर हैं। कोविड-19 की भयावहता के बीच इस तरह की यही दर्शाती है कि यदि यह बीमारी भारत में व्यापक पैमाने पर कम्युनिटी में फैल गई तो हम इसका सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं।

ऐसे में एक काल्पनिक स्थिति की कल्पना करें कि क्या होगा अगर भारत में सामुदायिक संक्रमण से यह महामारी और तेजी से फैलती है। क्या भारतीय स्वास्थ्य-सेवा प्रणाली कोरोना वायरस जैसे एक तेजी से फैलती संक्रामक बीमारी के निदान, रोकथाम और इलाज के लिए पूरी तरह से सुसज्जित है, जबकि चिकित्सीय रूप से इटली, ब्रिटेन और अमेरिका जैसे कहीं ज्यादा उन्नत देश इस बीमारी से लड़ने में नाकाम साबित हो रहे। मौजूदा परिदृश्य में यूनिवर्सल हेल्थ केयर पाने की भारत की महत्वाकांक्षा दूर का सपना ही नजर आती है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि सबसे बड़ी स्वास्थ्य सेवा योजना-आयुष्मान भारत का मकसद, पहुंच और सामर्थ्य में वृद्धि करना है, बगैर गुणवत्ता और नवाचार पर ध्यान दिए।

क्या यह उस देश के लिए उचित है, जहां ज्यादातर भारतीय खराब स्वास्थ्य सेवाओं की वजह से मरते हैं, बजाय स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच से। मेडिकल जर्नल द लैंसेट में प्रकाशित एक नए अध्ययन के अनुसार एक करोड़ 60 लाख भारतीय स्वास्थ्य सेवा की खराब गुणवत्ता के कारण मरते हैं, जो कि स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग न करने से मरने वालों की संख्या से लगभग दोगुनी है। किसी भी स्वास्थ्य सेवा के केंद्र में गुणवत्ता होनी चाहिए और गुणवत्ता और सामर्थ्य के बीच कोई तुलना नहीं होनी चाहिए। कोई भी स्वास्थ्य सेवा बेकार, अप्रभावी और अनैतिक होगी, यदि उसमें से गुणवत्ता का पहलू नदारद हो।

विशाल आबादी और त्रुटिपूर्ण आधारभूत संरचना के साथ भारत जैसे विकासशील देश के लिए विश्वस्तरीय गुणवत्तापूर्ण और नवाचार युक्त स्वास्थ्य सेवा पाए बगैर कोरोना वायरस संकट से निकलना संभव नहीं होगा। भारत को भविष्य के लिए कमर कसने और खुद को तैयार करने की जरूरत है। सीमित संसाधनों वाले देश में हमें अभिनव समाधानों और विश्वस्तरीय सामंजस्यपूर्ण नीतियों के साथ आने की जरूरत है। यह भारत के लिए सही समय है कि वह अपने स्वास्थ्य-सेवा क्षेत्र पर पुनर्विचार करे, जो न सिर्फ उत्पादों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है, बल्कि मरीजों के लाभ के लिए विनिर्माण और शोध की पारिस्थितिकी भी तैयार करता है। यह समय की मांग है कि एक सुदृढ़ स्वास्थ्य-सेवा तंत्र पर काम किया जाए, जिससे मौजूदा स्वास्थ्य सेवा के अंदर क्षमता का निर्माण कर और उसे मजबूत बनाकर हासिल किया जा सकता है।

(कार्डियोलॉजी विभाग, एम्स)

खरी-खरी

ओ हरजाई अप्रैल फूल!

श्रवण कुमार उर्मलिया

मूर्खता के लिए सिर्फ एक दिन का प्रावधान मूर्खता के प्रति घोर अन्याय है। यह मूर्खता के प्रति असहिष्णुता और अनुदारता है। एक वह हमारा कॉलेज का जमाना था जब मूर्ख बनाने के नए-नए प्रतिमान गढ़े जाते थे। हम सब छात्र तरह-तरह की तिकड़में कर घर से पैसे झटकने की फिराक में रहते ताकि अतिरिक्त फिल्में देखकर नैतिक उत्थान कर सकें। हम सब सोचते कि चूंकि हम इंजीनियरिंग पढ़ रहे हैं इसलिए मां-बाप से ज्यादा स्मार्ट हैं। पर मां-बाप तो माई-बाप थे।

हमारे एक सहपाठी ने पिता से पैसा ऐंठने के लिए पत्र लिखा- पूज्य पिताजी, मेरा लॉग-टेबल खाली हो गया है। उसे भरवाना बहुत जरूरी है, वर्ना आपका होनहार बेटा परीक्षा में फेल हो जाएगा। इसलिए जल्दी से पचास रुपये भेज दीजिए। पिता ने लौटती डाक से लिख भेजा-बेटा, मैं जानता हूं कि तू लापरवाह की औलाद है। तूने लॉग-टेबल की टोंटी खुली छोड़ दी होगी इसलिए खाली हो गया। दस रुपये भेज रहा हूं, थोड़ा-सा भरवा लेना। और सावधान, इस पैसे से पिक्चरें मत देख लेना!

एक अन्य छात्र-ठग ने पिता से पैसे ऐंठने की नई तरकीब सोची और लिखा-पिताजी, थर्मोडाइनॉमिक्स की किताब खरीदनी है, साठ रुपये भेज दीजिए। मां को प्रणाम, बहन को प्यार। पिता मास्टर थे और वे भी सरकारी। सो, कुछ दिन बाद उस छात्र को पिता का पार्सल मिला जिसमें पिता ने पैसा नहीं, थर्मोडाइनॉमिक्स की किताब ही भेज मारी थी। लिखा था-बेटा, पांच-दस रुपये का झूठ पचा लेता, पर साठ रुपये का महंगा झूठ पचा नहीं! किताब तो बाइस रुपये में ही मिल गई है। अब थर्मोडाइनॉमिक्स पढ़ लेना।

एक मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी है। मेरा एक मित्र हमेशा मुझे मार्केट साथ में ले जाता। उसने फाइनल ईयर में राज खोला-यार, मैं तेरे से ज्यादा सुंदर और स्मार्ट हूं, इसलिए तुझे हमेशा साथ लेकर जाता था। लड़कियां हम दोनों की तुलना करतीं और मुझे भाव देती थीं। मैंने तुझे अप्रैल-फूल बनाया? मैं बोला-भाई, बीते दो साल में तूने मुझे सैकड़ों बार भरपेट नाश्ता करवाया, घुमाया-फिराया, ऐश करवाया। मुझे लगता है अप्रैल-फूल तो तू बना है।

ट्वीट-ट्वीट

तब्लीगी जमात के मौलाना साद का नया ऑडियो सुना आपने। मूर्खता की हद है। और अफसोस इस बात का कि इन अवैज्ञानिक लोगों को लाखों-करोड़ों लोग मानते हैं। सख्त कार्रवाई होनी चाहिए इन सब पर। बिना किसी अगर-मगर के।

सौरभ द्विवेदी@saurabhtop

प्रिय मुसलमान साथियों तब्लीगी जमात ने मानवता के खिलाफ एक बहुत बड़ा अपराध किया है। कृपया उनका बचाव न करें।

शेखर गुप्ता@ShekharGupta

उम्मीद करनी चाहिए कि तब्लीगी जमात का कुछ अवांछित संगठनों के साथ कोई रिश्ता न हो। उनके मुखिया पर अभी कार्रवाई होना शेष है। इस बीच आव्रजन विभाग, पुलिस और खुफिया महकमा सब सोए हुए थे क्या? क्या गृहमंत्री की भूमिका केवल राजनीति करने और बयानबाजी तक सीमित है?

अभिषेक सिंघवी@DrAMSinghvi

जहां हम सभी आराम से अपने घरों में महफूज हैं, लेकिन सबसे बड़ी मुश्किल दिहाड़ी मजदूरों पर आई है जिनके बारे में सोचकर दर्द और बढ़ जाता है। ऐसे में जो लोग भी अपने-अपने तरीकों से इन जरूरतमंदों तक मदद पहुंचा रहे हैं वे भी हमारे हीरो हैं। यही असली भारतीयता है।

मोहम्मद कैफ@MohammadKaif

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या लॉकडाउन के दौरान दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी मरकज में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए?

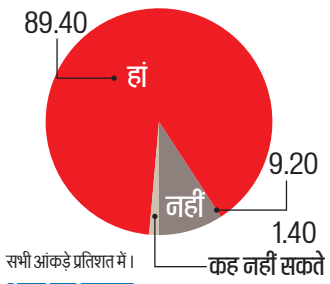

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या कोरोना संकट को देखते हुए बीसीसीआइ को इस साल आइपीएल को रद कर देना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

मुश्किल में है डाल दी हज्जारों की जान,
कितने लापरवाह हैं मरकज के मेहमान।
मरकज के मेहमान अक्ल दे इनको अल्ला,
बांटें दूषित ज्ञान आजकल जिनके मुल्ला!
थी नीयत में खोट रहे वे पहले हिलमिल,
निकले उसके बाद बांटने सबको मुश्किल।

– ओमप्रकाश तिवारी

नवनीत शर्मा
राज्य संपादक,
हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश डायरी

उन्होंने कहा था, शराब आवश्यक वस्तु

आपदा आती है तो पता चलता है कि जिसे रोजमर्रा की चीज समझ कर गैर-जरूरी मानते थे, वही वास्तव में जरूरी चीज है। और जिन चीजों को जरूरी समझा जाता है, वे गैर-जरूरी होती हैं। लेकिन इस माहौल में जब सांसों पर संकट आसन्न है, नन्ही बच्चियां अपनी गुल्लकें तोड़ कर डीसी और एसपी अंकल को पैसे सौंप रही हैं कि उन पैसों से किसी घर को आटा मिले, चावल मिले, नमक मिले, तेल मिले। जब बंजार के गुमान सिंह और हरा देवी अपने जवान बेटे की तेरहवीं पर भोज न देकर दो हजार मास्क बांटें, कंजक पूजन पर खर्च होने वाली राशि पीएम केयर्स में जा रही हो, जब जिलों के स्वास्थ्य, प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी मोर्चे पर तैनात हैं। जब हर व्यक्ति एक दूसरे के काम आना चाहता है ताकि आवश्यक वस्तुएं और सेवाएं जीवन को जारी रखें। ठीक ऐसे में दो जिलों के उपायुक्त ऐसा आदेश निकालते हैं कि शराब को आवश्यक वस्तुओं में डाल देते हैं, क्योंकि आदेशों पर उपायुक्त के हस्ताक्षर थे, इसलिए सबने समझा कि ये दोनों अपने स्तर से आदेश निकाल रहे हैं। यह पुख्ता जानकारी है कि जब यह मंथन अपेक्षित था कि आवश्यक सेवाओं को कैसे बहाल रखना है, अन्य राज्यों से जुड़े लोगों को कैसे ससम्मान भेजना है या क्वारंटाइन करना है, कोरोना से भयाक्रांत उसी समय में शासन के बड़े स्तर पर एक दिन इस बात पर भरपूर मंथन हुआ कि शराब को कैसे आवश्यक वस्तुओं में लाया जाए। आदेश आए, लेकिन सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रिया आई और आदेश वापस हो गए। होने ही थे। सवाल यह है कि वापस लेने वाले आदेश जारी ही क्यों होते हैं? अभी जो हालात हैं, उसमें राशन की ही जरूरत है, ऐसे में भी कोई आबकारी नीति के पीछे पड़ा है तो कुछ सवाल उठते हैं।

पहली बात यह है कि आबकारी यानी एक्साइज का अर्थ है कोई वस्तु बनाने पर लगने वाला कर। उसमें तो तमाम चीजें आती हैं, इसलिए इसे शराब नीति या शराब विभाग क्यों न कहा जाए? दूसरा सवाल यह है कि हर साल नई नीति क्यों? क्या कभी दाल, चीनी या दीगर वस्तुओं के लिए हर साल नीति बनती है? फिर यह कि कई वर्षों से हिमाचल के बजट को पूरी तरह शराब से मिलने वाले राजस्व पर क्यों केंद्रित कर दिया गया है? विकल्प तलाशना किसका दायित्व था? यह विडंबना नहीं है कि वचन में तो नैतिकता का हवाला देकर शराब पीने को गलत बताया जाए और कर्म में ऐसे प्रबंध किए जाएं कि शराब अधिकाधिक बिके? कोई तो कारण होगा कि कुछ वस्तुओं के लिए अधिकतम क्रय रखा जाता है कि इससे अधिक मत बेचना। शराब के लिए न्यूनतम कोटा होता है कि इससे कम मत बेचना! यानी इतनी तो बेचनी ही पड़ेगी।

सवाल खत्म नहीं होते। वीसी फारका के कार्यकाल को छोड़ दें तो हिमाचल में यह प्रथा बड़ी शिद्दत से निभाई जा रही है कि मुख्यमंत्री का प्रधान सचिव ही आबकारी यानी शराब का भी सचिव होता है। आखिर क्यों? किसी को लंबी अवधि के लिए काम सौंपें तो ईमानदारी की संभावना जग ही जाती है। जब यह तय ही हो कि एक साल का ठेका है, जितना कमाना है कमा लो, जिस तरह भी कमा लो। क्या इसलिए एक साल होता है? आखिर शराब को दुकानों में बेचने की अनुमति क्यों न हो? दुकानदार टैक्स दे और अपना काम करे? ठेके का अर्थ ही संरक्षण से जुड़ता है, इसलिए। हिमाचल की एक सरकार के वक्त यह तय किया गया कि बाकायदा निगम बना कर सरकार स्वयं शराब बेचेगी। उस अध्याय के पन्ने इतने रंगीन हैं कि कभी उन पर भी जाएंगे। सवाल यह है कि सरकार दूध के लिए काम करे, राशन के लिए काम करे, शिक्षा के लिए काम करे, यह समझ में आता है। उस सरकार ने स्वयं ही शराब बेचने का फैसला लिया यह समझ से परे है।

वास्तव में आवश्यक क्या है और क्या नहीं, यह समझ कठिन नहीं है। हिमाचल के निजी स्कूल लॉकडाउन के बावजूद विद्यार्थियों को सूचना एवं तकनीकी के औजारों से गृहकार्य भेज रहे हैं, सरकारी स्कूलों में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। क्या शिक्षा आवश्यक सेवा नहीं है? विद्यार्थी भी घरों में हैं, शिक्षक भी अवकाश पर हैं। क्या दिन में दो घंटे इस कार्य को नहीं दिए जा सकते? यह ठीक है कि सरकार की ओर से लैपटॉप केवल मेधावी विद्यार्थियों को ही मिलते हैं, सबको नहीं। लेकिन इंटरनेट कहां नहीं है? सरकार तो बेशक कोरोना से उत्पन्न स्थितियों से जूझ रही है, लेकिन जिन्हें विभाग चलाना है, वही इस प्रकार के प्रयास करें। अगर सरकारी पत्र के मुताबिक कुछ देर के लिए शराब आवश्यक वस्तु हो सकती है तो शिक्षा आवश्यक सेवा क्यों नहीं?

मंथन

एक देश एक प्राण एक युद्ध

सभी राज्य अपने-अपने तरीकों से कोरोना वायरस को हराने में जुटे हैं जिसमें पारंपरिक तरीका ज्यादा उपयोग में लाया जा रहा है और यह कारगर भी साबित हो रहा है

तरुण विजय
राज्यसभा के पूर्व सदस्य एवं वरिष्ठ स्तंभकार

अरुणाचल दूसरे युद्ध में सन्नद्ध है यह बहुत कम लोगों को अहसास हो पाता होगा। पहला युद्ध था वर्ष 1962 का चीन के साथ और दूसरा युद्ध है 2020 का चीन से आए वायरस के साथ। दोनों में अरुणाचल सारे देश में सबक सीखने लायक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है-हिम्मत, हौसले और वीरता का। अरुणाचल प्रदेश से दिल्ली आना कितना सरल है, यह नाहरलगुन रेलवे स्टेशन से दिल्ली के लिए ट्रेन में सफर करके ही पता चल सकता है। एक स्टेशन कन्याकुमारी है धुर दक्षिण में तो दूसरा यह है भारत के उत्तर पूर्वी सीमांत पर नाहरलगुन, जहां एक ही स्टेशन पर दो नाम लिखे होते हैं, दूसरा नाम है ईटानगर, जो अरुणाचल प्रदेश की राजधानी है और नाहरलगुन से महज 12 किमी दूर है। दिल्ली तक 38 घंटे का यह सफर भारत का रोमांचक दर्शन कराता है। करीब 2,104 किमी की दूरी और ट्रेन में उत्तर-पूर्वी राज्यों के रंगारंग वस्त्रों में यात्रा कर रहे भारतीय। यह प्रदेश भारत की प्रातःकाल का प्रथम प्रदेश है, सूर्योदय की भूमि। पर आज यह कोरोना संक्रमण से पूरे देश को बचाने का एक अच्छा उदाहरण बना। केवल नगरों की बस्तियों में ही नहीं, बल्कि गांव-गांव में मुख्यमंत्री पेमाखांडु कोरोना के विरुद्ध युद्ध की तैयारी में जिस तरह से लगे हैं वह बड़े प्रदेशों के लिए भी एक सबक है। पेमाखांडु ने प्रदेश के रेडियो स्टेशनों विशेषकर सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का इस युद्ध में विशेष उपयोग किया है। प्रदेश में समन्वित रोग निगरानी कार्यक्रम के तमाम अधिकारी स्वयंसेवी संगठन के कार्यकर्ताओं की तरह ब्लॉक और ग्रामीण स्तर तक जा रहे हैं, तथा सभी जिलों में आइसोलेशन और स्वयंप्रेरित एकांत की अरुणाचलीय जनजातीय पद्धति से जो व्यवस्था की है वह बहुत रोचक है।

लेकिन इस बार कोरोना विषाणु के विरुद्ध भारत के सामान्य नागरिकों की जो पहल, तैयारी और एकता दिख रही है, वह कदाचित स्वतंत्रता संग्राम या करगिल युद्ध के समय की सर्वपक्षीय एकता का स्मरण कराती है। यह सामान्य चित्र है जो प्रमुख और मुख्यधारा का है, अपवाद उस समय भी थे और आज भी हैं। उनकी चिंता न तब देश ने की थी, न आज करने की आवश्यकता है। भले ही सोशल मीडिया और पत्रों में उनके कटु वाक्य मन में कितनी ही खटास क्यों न पैदा करें।

यह वक्त केरल में किसकी सरकार है या गुजरात में कौन, यह देखने का कोई कारण ही नहीं। केरल ने भी अपने क्षेत्र में कोरोना के खिलाफ बहुत अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं तो इन उदाहरणों में चमकता सितारा लखनऊ में बैठे संन्यासी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भी है, जिन्होंने संभवतः देश में सबसे पहले गरीब मजदूरों की आय पर कोरोना के कारण होने वाले प्रभाव से उन्हें बचाने के लिए उन्हें आर्थिक राहत राशि देने की घोषणा की, जो बहुत अच्छी बात है। लेकिन उत्तराखंड में इस तरह के कम ही उदाहरण सामने आए हैं तथा हिमाचल प्रदेश से लेकर लद्दाख और कश्मीर तक जितनी सरकारें जुटी हैं शायद उससे ज्यादा सामान्य जन और स्वयंसेवी संगठन अपने-अपने स्तर पर अपनी-अपनी ताकत के अनुपात में लग गए हैं। दिल्ली में एक प्रसिद्ध पत्रकार ने अपनी बस्ती में पानी की बोतलें और साबुन की टिकिया रिक्शा चालकों को निशुल्क बांटना शुरू किया तो अनेक अवकाश प्राप्त सैन्य अधिकारी और उनके परिवार बस्तियों, बाजारों और स्कूलों में यही बताने निकले हैं कि अच्छी तरह हाथ कैसे धोएं और लॉकडाउन का मतलब क्या है। शायद हममें से अनेक को यह जानकारी नहीं थी कि कोरोना वायरस का चक्र यदि ब्रेक करना है तो इस पूरी अवधि के दौरान सभी लोगों को आत्मबंधन और आत्मनिर्वासन जैसे एकांत में चले जाना होगा। जहां केवल वो ही रहें और उसके साथ उसकी छाया और आत्मचिंतन।

यह आत्म संगोपन प्राचीन काल से विभिन्न स्थितियों में संवेदनशील बीमारियों अथवा प्रसव जैसी परिस्थिति में परंपरागत समाजों में इस्तेमाल किया जाता रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेखौफ घूम रहे आत्मोल्लास की मूर्खताओं के गुब्बारे में अपने सीधे, सपाट और तीखे उद्बोधन से पंचर कर दिया। ऐसे लोगों की कमी नहीं जो यह कहने में तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं करते कि अरे मैं तो ठीकठाक हूं, जिम जाता हूं, कुछ नहीं होगा। ऐसे लोग ही अपनी मूर्खता के कारण स्वयं, अपने परिवार और समाज के लिख खतरा बन जाते हैं जिसका आज एक महत्वपूर्ण उदाहरण इटली है।

ओडिशा से मणिपुर और नगालैंड से अंडमान निकोबार और लक्षद्वीप तक जो भारतीय मनसा, वाचा, कर्मणा युद्ध सैनिक जैसे जुट गए हैं वह कोरोना के प्रकोप का एक सकारात्मक परिणाम है। जो लोग इसमें कतिपय कारणों से राजनीतिक घृणा और विषाक्तता घोलने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें न भारत ने पहले स्वीकार किया, और न ही आगे करेगा।

कोरोना वायरस हिंदू, मुसलमान या गरीब-अमीर देखकर नहीं लगता। यह वायरस न जात पूछता है और न वजह। यह सिर्फ जान ढूंढता है और जान लेता है। संकट के समय यह ऐक्य भाव ही भारत का मूल परिचय बनना चाहिए, क्योंकि वायरस चाहे कोरोना हो या सांप्रदायिकता और जाति भेद का, बिना सामुदायिक एकता के उसे नष्ट नहीं किया जा सकता। जिस तरह से हमने 1947 में जीत हासिल की और करगिल के समय तोलोलिंग पर तिरंगा लहराया, वैसे ही कोरोना का दफन कर भारत जीतेगा ही। इस एकता को बारंबार प्रणाम।

शेयर बाजारों में वित्त वर्ष की खराब शुरुआत

मुंबई, प्रेट्र : वित्त वर्ष 2020-21 के पहले दिन बुधवार को घरेलू शेयर बाजार में भारी गिरावट आई। कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों का असर बाजार के सेंटीमेंट पर देखा गया। दिन के कारोबार में बीएसई का 30-शेयरों वाला सेंसेक्स 1,203 .18 अंक यानी 4 .08 प्रतिशत गिरकर 28,265 .31 पर बंद हुआ। इसके साथ ही बीएसई पर सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 3,20,633 .05 करोड़ रुपये घटकर 1,10,28,123 .54 करोड़ रुपये रह गया।

पिछले कुछ दिनों के दौरान टेलीकॉम कंपनियों ने डाटा लोड घटाने संबंधी कई उपाय किए हैं। मेरे हिसाब से अभी कंपनियों को अतिरिक्त स्पेक्ट्रम की जरूरत नहीं है।

— राजन मैथ्यूज
महानिदेशक, सीओएआइ

विलय के बाद पीएनबी के सालाना कारोबार में होगी 12 फीसद की वृद्धि

साक्षात्कार

कोरोना वायरस के चलते लागू लॉकडाउन ने देश के बैंकिंग सेक्टर के लिए काफी चुनौती पैदा कर दी है। इन्हें बैंकिंग सेवा भी देनी है और ग्राहकों व कर्मचारियों के स्वास्थ्य की भी रक्षा करनी है। इस बीच बुधवार यानी पहली अप्रैल से पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) में ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया (यूबीआइ) का विलय हो गया है। मौजूदा हालातों व भावी संभावनाओं पर दैनिक जागरण के **विशेष संवाददाता जयप्रकाश रंजन** ने **पीएनबी के एमडी व सीईओ एसएस मल्लिकार्जुन राव** से विस्तृत बात की। पेश हैं प्रमुख अंश :

● कोविड-19 को देखते हुए देशभर में जिस तरह से लॉकडाउन लागू किया गया है उससे बैंकिंग सेक्टर पर क्या असर पड़ा है ?

- कोरोना वायरस से देश को बचाने के लिए सरकार की तरफ से बहुत ही सोच समझकर यह कदम उठाया गया है। लेकिन निश्चित तौर पर बैंकिंग सेक्टर का काम काफी चुनौतीपूर्ण हो गया है। हमें अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना है और राष्ट्रीय हितों के मुताबिक बैंकिंग सेवा भी देनी है। पीएनबी भी हालात को देखते हुए समाज के सभी वर्गों के हितों के मद्देनजर अपनी सर्विस को चालू रखने की कोशिश में है। 30 मार्च से हमारी 95-96 फीसद शाखाओं में काम चालू है। वैसे शाखा में आने वाले ग्राहकों की संख्या 90 फीसद कम हो गई है। लेकिन वित्त वर्ष की शुरुआत होने की वजह से हमने हर ब्रांच व एटीएम में पर्याप्त राशि पहुंचा दी है। सरकार की घोषणा के मुताबिक गरीब जनता के खाते में पैसा जाना दो दिनों में शुरू हो जाएगा।

● आरबीआइ ने टर्म लोन की किस्त को आगे बढ़ाने की जो घोषणा की है, उसे बैंक किस तरह से लागू कर रहा है ?

- आरबीआइ की तरफ से कर्ज को सस्ता करने की जो घोषणाएं की गई हैं उसे हमने बुधवार से लागू कर दिया है। रेपो रेट लिंक्ड कर्ज की दर को 75 आधार अंक घटाया है। साथ ही एमसीएलआर पर देय कर्ज की दरों में भी 30 आधार अंकों की कटौती की है। रही बात टर्म लोन की किस्त को आगे बढ़ाने की तो हमने ऑटोमेटिक तरीके से सभी लोन एकाउंट खाताधारकों को यह सुविधा देने का फैसला किया है। यानी उसे मार्च से मई के दौरान कोई मासिक किस्त नहीं देनी होगी। हालांकि ज्यादातर ग्रहाकों को दो महीने का ही लाभ मिलेगा। उसके कर्ज की अवधि अपने आप तीन महीने बढ़ जाएगी। जो इसका फायदा नहीं उठाना चाहते, उन्हें बैंक को सूचित करना होगा।

● पीएनबी में ओरिएंटल बैंक आफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया का विलय हो गया है, क्या सारी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं ?

- पिछले वर्ष 30 अगस्त को वित्त मंत्री ने पीएनबी में उक्त दोनो बैंकों के विलय का एलान किया था और उसके बाद से ही हम तैयारियों में जुटे हैं। कुल 34 टास्क फोर्स का गठन किया गया था जिसने विलय को लेकर तमाम रणनीति बनाने का सुझाव दिया। हालांकि सभी बैंकों के बोर्ड में आवश्यक बदलाव में लॉकडाउन की वजह से वक्त लगेगा। इसके साथ ही साइनेज बोर्ड वगैरह बदलने में भी देरी हो होगी। लेकिन विलय पहली अप्रैल से प्रभावी हो गया है। विलय को लेकर सारी तकनीकी व अन्य प्रक्रियाएं अगले 15-20 दनों में संपन्न हो जाएंगी। लेकिन यह सुनिश्चत कर रहे हैं कि तीनों बैंकों के ग्राहकों को कोई समस्या नहीं है, और उनके पुराने एटीएम कार्ड, चेक बुक वगैरह चलते रहेंगे।

● इस विलय से बैंक को क्या फायदा होगा ?

- ओबीसी और यूबीआइ को मिलाने के बाद पीएनबी देश का दूसरा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। पहले बड़ी बड़ी परियोजनाओं को चलाने के लिए 10-12 बैंकों से कर्ज लेना पड़ता था लेकिन अब विलय के बाद पीएनबी दूसरे एक या दो और बैंकों के साथ मिलकर बड़ी से बड़ी परियोजनाओं को वित्त सुविधा दे सकता है। दूसरा फायदा यह होगा कि 10 बैंकों के विलय के बाद जो चार बैंक गठित हो रहे हैं वे तकनीकी उन्नयन पर ज्यादा निवेश कर सकेंगे। आने वाले दिनों में बैंकों को तकनीक पर काफी ज्यादा राशि खर्च करना होगा जो छोटे छोटे बैंकों के लिए असंभव है। तकनीक आधारित बैंक ही अब आगे बढ़ेंगे। तीसरा फायदा यह होगा, खासतौर पर पीएनबी के संदर्भ में, कि हम अब सही मायने में राष्ट्रीय स्तर के बैंक होंगे। ओबीसी व यूबीआइ के विस्तार वाले क्षेत्र में हम सशक्त तरीके से बैंकिंग सेवा दे सकेंगे। अब देश के सामने दूसरी पीढ़ी का पीएनबी (पीएबी-2.0) होगा, जिसके पास 18,000 एटीएम, 11,000 शाखाओं के साथ 18 लाख करोड़ रुपये का कारोबार होगा। हम देश ही नहीं बल्कि दुनिया की बेहतरीन मोबाइल व इंटरनेट बैंकिंग सेवा देंगे, जो भरोसेमंद भी होगा और सुरक्षित भी।

● पीएनबी के मुकाबले ओबीसी व यूबीआइ की वित्तीय स्थिति काफी खराब है। क्या विलय के बाद गठित नए बैंक के हिसाब किताब पर इसका असर दिखेगा ?

- देखिए, पहली अप्रैल से जिस नए बैंक ने कामकाज शुरू किया है, उसका हिसाब-किताब एकदम नया व साफ-सुथरा होगा। तीन बैंकों के एनपीए को लेकर सारे समायोजन 31 मार्च, 2020 को समाप्त तिमाही में कर दिए गए हैं। पुराने एनपीए का बोझ नए कारोबार पर नहीं होगा। लेकिन हमारा नया एनपीए प्रबंधन पहले से ज्यादा प्रभावशाली होगा। पुराने खाताधारकों के साथ बकाया कर्जे की वसूली की प्रक्रिया अब ज्यादा तेज व असरदार होगी। हम यह मान कर चल रहे हैं कि विलय के बाद पीएनबी के सालाना कारोबार में 10-12 फीसद की लगातार वृद्धि होगी।

● लॉकडाउन के बाद कब से इकोनॉमी गतिविधियों के सामान्य होने की संभावना है ?

अगर अप्रैल के अंत तक भी इसी तरह का लॉकडाउन रहता है तो उसके बाद एक महीने का समय बिखरे कारोबार की कड़ियों को समेटने में लग जाएगा। जून, 2020 से काम काज सामान्य स्तर पर शुरू हो सकेगा। जुलाई से बैंकिंग कर्ज की मांग शुरू जाएगी। लॉकडाउन के पहले से ही कर्ज की मांग काफी कम हो गई थी और जनवरी, 2020 में पिछले वर्ष समान अवधि के मुकाबले बैंकिंग कर्ज में 6.4 फीसद की वृद्धि हुई थी। कोविड-19 का खतरा समाप्त होने के बाद बैंकिंग कर्ज की मांग काफी तेज होगी।

अगला पैकेज उद्यमियों को देने की तैयारी

कदम ▶ कोरोना संकट के बीच मएसएमई को अतिरिक्त राहत देने पर हो रहा विचार

उद्योग जगत और उत्पादन को गति देने के लिए अतिरिक्त फंड का सृजन एक विकल्प

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना महामारी से उपजे इस संकट की घड़ी में गरीबों के खाने-कमाने के इंतजाम के बाद सरकार अब औद्योगिक जगत खासकर एमएसएमई के लिए अलग से पैकेज की घोषणा कर सकती है। इन घोषणाओं में छोटे उद्यमियों के यहां काम करने वाले कर्मचारियों की आधी तनख्वाह से लेकर उद्योग को गति देने के लिए अतिरिक्त फंड का सृजन शामिल हो सकता है। एमएसएमई को नकदी की समस्या दूर करने के लिए सरकार सभी सार्वजनिक कंपनियों को एमएसएमई के बकाया के निश्चित समय में भुगतान के लिए भी कह सकती है।

कोरोना पर काबू के लिए गत 25 मार्च से जारी लॉकडाउन के कारण आवश्यक वस्तु व सेवा को छोड़ अन्य सभी प्रकार के उद्योग बंद हैं। इससे छोटे-छोटे उद्योगों के सामने अपने कर्मचारियों को वेतन देने का संकट खड़ा हो गया है। हालांकि सरकार ने हाल ही में 100 से कम कर्मचारियों वाली यूनिट के लिए राहत की घोषणा की है। अगर उस यूनिट में 90 फीसद कर्मचारियों का वेतन 15,000 रुपये प्रतिमाह से कम है तो सरकार उनके पीएफ में जमा होने वाली पूरी राशि का भुगतान करेगी। औद्योगिक जगत के विशेषज्ञों के मुताबिक सरकार के इस फैसले का लाभ दो लाख से भी कम यूनिट को मिलेगा जबकि जीएसटी नेटवर्क में पंजीकृत कारोबारियों की संख्या 1.10 करोड़ है।

सरकार छोटे उद्यमों के कर्मचारियों को आधी तनख्वाह दे सकती है। प्रतीकात्मक

फेडरेशन ऑफ इंडियन स्मॉल एंड मीडियम इंटरप्राइजेज (फिस्मे) के महासचिव अनिल भारद्वाज के मुताबिक असली समस्या उन छोटी-छोटी यूनिटों या कारोबारियों की है जिनके यहां दो-चार कर्मचारी काम करते हैं और उनकी मामूली तनख्वाह है। इस लॉकडाउन की वजह से उन्हें अपने कर्मचारियों को वेतन देने की समस्या खड़ी हो गई है, क्योंकि उनका काम पूरी तरह से बंद है। भारद्वाज का कहना था कि जो कर्मचारी ईएसआइ के दायरे में आते हैं, उन्हें लॉकडाउन के दौरान ईएसआइ अकाउंट से वेतन मिलना चाहिए। वित्त मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक सरकार इस प्रकार के छोटे कर्मचारियों को एक निश्चित रकम वेतन के रूप में दे सकती है। इस मामले में नीति आयोग के साथ भी विचार-विमर्श किया गया है।

सूत्रों के मुताबिक सरकार एमएसएमई में निवेश के लिए फंडों के फंड का एलान कर सकती है। एमएसएमई के उद्धार के लिए सरकार ने यूके सिन्हा कमेटी बनाई थी, जिसने 10,000 करोड़ रुपये के फंड ऑफ फंड्स स्थापना की भी सिफारिश की थी। सूत्रों के मुताबिक वित्त मंत्रालय ने इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है जिस पर कैबिनेट नोट लाया जा सकता है। इस फंड की मदद से वेंचर कैपिटल व प्राइवेट इक्विटी फर्म को एमएसएमई में निवेश करने में मदद मिलेगी। सरकार एमएसएमई में प्रवाह को बढ़ाने के लिए सभी सरकारी कंपनियों को तत्काल प्रभाव से उनके बकाया भुगतान का भी निर्देश जारी कर सकती है। कई संगठनों का मानना है कि सरकारी मदद के बिना 20-25 फीसद एमएसएमई घोर संकट में फंस जाएंगी।

इतिहास का हिस्सा बन गए देश के छह सरकारी बैंक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ पहली अप्रैल से चार बैंकों में छह बैंकों के विलय का फैसला हुआ लागू

ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स (ओबीसी), यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया (यूबीआइ), सिंडिकेट बैंक, आंध्रा बैंक, कॉरपोरेशन बैंक और इलाहाबाद बैंक अब इतिहास का हिस्सा हो गए हैं। केंद्र सरकार ने बैंकिंग सेक्टर में सबसे बड़े विलय का एलान करते हुए पिछले वर्ष 30 अगस्त को इन बैंकों को सरकारी क्षेत्र के चार अलग-अलग बैंकों में मिलाने का फैसला किया था। पहली अप्रैल यानी बुधवार से यह विलय लागू हो गया है।

विलय योजना के तहत ओबीसी व यूबीआइ को पीएनबी में, सिंडिकेट बैंक को केनरा बैंक में, आंध्रा बैंक व कॉरपोरेशन बैंक को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में और इलाहाबाद बैंक को इंडियन बैंक में मिलाया गया है। इनके विलय की घोषणा करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि भारतीय इकोनॉमी को पांच लाख करोड़ डॉलर का आकार देने में इस फैसले से मदद मलेगी। पीएनबी ने बैंक ऑफ बड़ौदा को तीसरे स्थान पर धकेल दिया है और अब 11 हजार शाखाओं और 18 लाख करोड़ रुपये की पूंजी के साथ देश का दूसरा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। जबकि केनरा बैंक 15.20 लाख करोड़ रुपये के पूंजी आधार के साथ देश का चौथा सबसे बड़ा बैंक बन जाएगा। आंध्रा बैंक व कॉरपोरेशन बैंक को मिलाने के बाद यूनियन बैंक का पूंजी आधार 14.59 लाख करोड़ रुपये का होगा और देश का पांचवा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। इलाहाबाद व इंडियन बैंक का संयुक्त कारोबार 8.08 लाख करोड़ रुपये का होगा और यह देश का सातवां सबसे बड़ा बैंक होगा। इसके साथ ही सरकारी क्षेत्र के बैंकों की संख्या 18 से घट कर 12 रह गई है। इससे पहले बैंक ऑफ बड़ौदा (बीओबी) में विजया बैंक व देना बैंक के विलय का फैसला किया गया था, जो पिछले वर्ष अमल में आ गया।

तकनीकी तौर पर बुधवार से इन बैंकों का विलय हो चुका है। लेकिन जमीनी तौर पर अभी इस प्रक्रिया के पूरा होने में समय लगेगा। मौजूदा लॉकडाउन की वजह से विलय से संबंधित कई काम अभी नहीं हो पाए हैं। ग्राहकों को नया चेकबुक, एटीएम कार्ड देने का काम भी प्रभावित हुआ है।

गैर-सब्सिडी वाला एलपीजी सिलेंडर 61 रुपये सस्ता

नई दिल्ली, प्रेट्र : ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने बुधवार को गैर-सब्सिडी वाला रसोई गैस सिलेंडर 61.50 रुपये सस्ता कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल के दाम औंधे मुंह गिर जाने के चलते एलपीजी का भाव भी गिरा है। अब नई दिल्ली में गैर-सब्सिडी वाले 14.2 किग्रा एलपीजी सिलेंडर की कीमत 744 रुपये रह गई है। पिछले महीने की पहली तारीख को भी कंपनियों ने गैर-सब्सिडी वाले रसोई गैस सिलेंडर की कीमत में 53 रुपये की कटौती की थी। लेकिन इन दोनों महीनों की कटौती के बाद भी रसोई गैस सिलेंडर का दाम फरवरी से पहले की कीमत के स्तर पर नहीं आया है। इसकी वजह यह है कि इस वर्ष फरवरी में कंपनियों ने दाम 144.5 रुपये बढ़ा भी दिए थे।

गौरतलब है कि सरकार रसोई गैस सिलेंडर के प्रत्येक ग्राहक को एक वर्ष में 12 सिलेंडर पर सब्सिडी देती है। इस अवधि में उससे ज्यादा सिलेंडर की जरूरत पर ग्राहक को बाजार मूल्य यानी गैर-सब्सिडी का मूल्य देना पड़ता है। नई कटौती के बाद 19 किग्रा वाले व्यावसायिक एलपीजी सिलेंडर का दाम भी घटकर 1,285 रुपये रह गया है।

मार्च में एक लाख करोड़ से नीचे रहा जीएसटी कलेक्शन

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ वित्त वर्ष के आखिरी महीने में 97,597 करोड़ रुपये पर अटका कलेक्शन

▶ जीएसटी रिटर्न फाइल करने की संख्या में भी फरवरी के मुकाबले गिरावट देखी गई

जीएसटी कलेक्शन पर कोरोना और लॉकडाउन का असर दिखने लगा है। मार्च में जीएसटी का कलेक्शन 97,597 करोड़ रुपये रहा। उससे पहले के चार महीनों में कलेक्शन एक लाख करोड़ रुपये से ऊपर रहा था। घरेलू स्तर पर बिक्री और आयात घटने से जीएसटी के कलेक्शन में कमी आई है। इस साल मार्च में जीएसटी कलेक्शन में पिछले साल मार्च के मुकाबले 8.4 फीसद की कमी दर्ज की गई। पिछले साल मार्च में यह कलेक्शन 1.06 लाख करोड़ रुपये था।

वित्त मंत्रालय द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक मार्च में 19,183 करोड़ रुपये सीजीएसटी, 25,601 करोड़ रुपये एसजीएसटी, 44,508 करोड़ रुपये आइजीएसटी और 8,306 करोड़ रुपये सेस से प्राप्त हुए। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक मार्च में फरवरी के मुकाबले जीएसटी रिटर्न फाइल करने की संख्या में भी गिरावट देखी गई। इस वर्ष फरवरी के 83 लाख रिटर्न फाइल के मुकाबले मार्च में आंकड़ा 76.5 लाख पर सिमट गया।

टैक्स विशेषज्ञों के मुताबिक कोरोना महामारी की वजह से निकट भविष्य में भी जीएसटी कलेक्शन प्रभावित हो सकता है। कोरोना के कारण फरवरी में औद्योगिक उत्पादन पर असर दिखने लगा था क्योंकि चीन से सप्लाई चेन बाधित हो गई थी। मार्च महीने में लॉकडाउन की घोषणा के बाद आवश्यक वस्तुओं को छोड़ अन्य सभी प्रकार के उत्पादन व सेवा पर रोक है। लॉकडाउन 15 अप्रैल को खुल जाने के बाद भी आर्थिक गतिविधियों के सामान्य होने में वक्त लगेगा।

गहरी मुसीबत में घरेलू ऑटो कंपनियां

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ मार्च में कंपनियों की बिक्री में भारी गिरावट

▶ निकट भविष्य में भी कंपनियों के सामने उम्मीद की कोई किरण नहीं

देश की ऑटोमोबाइल कंपनियां अपने इतिहास के सबसे मुश्किल दौर में है। पिछले पूरे वर्ष के दौरान ग्राहक को तरसती ऑटो कंपनियों पर मार्च में लॉकडाउन की बड़ी मार पड़ी है। देश की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी के कारों की बिक्री 47 फीसद कम हुई है तो टाटा मोटर्स की बिक्री 84 फीसद कम हुई है। आयशर के वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री 83 फीसद, अशोक लेलैंड के ट्रकों व बसों की बिक्री में 90 फीसद की गिरावट देखी गई है। दूसरी कंपनियों के आंकड़े अभी आने हैं लेकिन उनसे भी कोई उम्मीद नहीं है।

लॉकडाउन अगर अप्रैल मध्य तक समाप्त हो भी जाता है, तब भी कारों की बिक्री की रफ्तार बढ़ने की संभावना नहीं है। कोरोना वायरस की वजह से जो हालात पैदा हुए हैं, उसकी वजह से ना सिर्फ पिछले कुछ महीनों में लांच की गई कारों की बिक्री ठप हो गई है, बल्कि अगले तीन-चार महीनों के दौरान लांच की जाने वाले कम से कम छह कारों के भविष्य पर भी सवालिया निशान लग गए हैं।

ह्युंडई की तरफ से लांच की गई नई क्रेटा ने बाजार में जबर्दस्त हलचल मचाई और लॉचिंग से पहले ही इसकी 14 हजार बुकिंग हो गई थी। लेकिन लॉकडाउन की वजह से ना तो डीलरों को सप्लाई हो पा रही है और ना ही ग्राहकों को। कंपनी ने 23 मार्च, 2020 से अगले आदेश तक फैक्ट्री बंद कर दिया है। कुछ ऐसी ही स्थिति होंडा की है। इसने अपने बेहद मशहूर ब्रांड सिटी को नए रंग-रूप में उतारने की सारी तैयारी कर ली थी। लेकिन लॉकडाउन ने कंपनी के मंसूबों पर पानी फेर दिया।

मारुति सुजुकी ने अपनी सबसे ज्यादा बिकने वाली कंपैक्ट सिडान डिजायर को नए अवतार में उतारा। लेकिन लॉकडाउन की वजह से इसकी बिक्री शुरू नहीं हो पाई है। बुधवार को मारुति सुजुकी ने बताया है कि मार्च में उसकी कुल बिक्री 47 फीसद घट गई है, जबकि समूचे वित्त वर्ष (अप्रैल, 2019-मार्च,2020) के दौरान बिक्री 16.1 फीसद गिरी है। वित्त वर्ष 2019-20 में कंपनी ने कुल 18,62,449 कारों की बिक्री की है।

लगातार नए मॉडल उतारकर बाजार में पैठ मजबूत बनाने की कोशिशों में जुटे टाटा मोटर्स ने इस वर्ष मार्च में महज 11,012 कारों की बिक्री की है जो मार्च, 2019 के मुकाबले 84 फीसद कम है। अगर पूरे वित्त वर्ष बात करें तो कंपनी के वाहनों की बिक्री में 35 फीसद की कमी हुई है। ट्रक व बस बनाने वाली दो कंपनियों आयशर और अशोक लेलैंड के बिक्री आंकड़े बेहद निराशाजनक हैं। दोनों के वाणिज्यक वाहनों की बिक्री क्रमशः 83 फीसद और 90 फीसद घट गई है। लॉकडाउन की वजह से आने वाले महीनों में जिस तरह से औद्योगिक उत्पादन सुस्त रहने की संभावना है उसे देखते हुए वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री और घट सकती है।

आरबीआइ ने इकोनॉमी संभालने के लिए दी नियमों में ढील

मुंबई, प्रेट्र : भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने बुधवार को कोरोना महामारी के आर्थिक असर से निपटने के लिए नए उपायों की घोषणा की, जिसमें निर्यात आय की प्राप्ति और स्वदेश भेजने की अवधि में बढ़ोतरी शामिल है। आरबीआइ ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को डब्ल्यूएमए के तहत देने वाले अग्रिम की सीमा 30 प्रतिशत बढ़ा दी है।

आरबीआइ ने एक बयान में कहा कि वर्तमान में निर्यातकों द्वारा वस्तुओं और सॉफ्टवेयर निर्यात की पूरी राशि को निर्यात की तारीख से नौ महीने के भीतर देश में लाना होता है। कोविड-19 महामारी से आई दिक्कतों के चलते 31 जुलाई, 2020 तक किए गए निर्यात से होने वाली आय देश में लाने की अवधि निर्यात की तारीख से 15 महीने के लिए बढ़ा दी गई है। इससे निर्यातकों को उन देशों से भुगतान हासिल करने में आसानी होगी, जो अभी कोरोना संकट से जूझ रहे हैं। आरबीआइ ने डब्ल्यूएमए की समीक्षा के लिए समिति गठित की थी। नई संशोधित सीमा 30 सितंबर तक के लिए मान्य होगी। मंगलवार को आरबीआइ ने केंद्र सरकार के लिए डब्ल्यूएमए की सीमा जुलाई-सितंबर तिमाही के लिए 70,000 करोड़ रुपये रखी थी, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 60,000 करोड़ रुपये थी।

यह होता है डब्ल्यूएमए : सरकार पूरे वित्त वर्ष का बजट बनाती है। उस समय वह अनुमान लगाती है कि हर माह लगभग कितनी राशि खर्च होगी और कितनी खजाने में आएगी। लेकिन कभी-कभी बीच में ऐसी स्थिति बन जाती है जब खजाने में राशि कम आती है और खर्च ज्यादा होता है। हालांकि ऐसा थोड़े समय के लिए होता है। लेकिन ऐसी स्थिति से निपटने को सरकार बाजार से उधार उठाने के बजाय आरबीआइ से कर्ज ले लेती है जिसे 'वेज एंड मींस' यानी डब्ल्यूएमए एडवांस कहते हैं।

राष्ट्रीय

लॉकडाउन न बढ़ने की घोषणा के बाद परिवहन सेवाओं में बुकिंग बढ़ी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ 15 अप्रैल व उसके बाद के लिए बुकिंग पहले से खुली थी, परंतु मांग कम थी

▶ कैबिनेट सचिव के आश्वासन के बाद रेलवे, एयरलाइंस व बस आपरेटरों की वेबसाइटों पर ज्यादा हिट

विमानन क्षेत्र पर 10500 हजार करोड़ की मार

इसी प्रकार भारतीय विमानन क्षेत्र को भी 10 हजार करोड़ रुपये से अधिक की चोट पड़ने वाली है। सेंटर फार एविएशन 'कापा' की रिपोर्ट के मुताबिक, लॉकडाउन के कारण भारतीय एयरलाइंस के करीब 150 विमान खड़े हो गए हैं। एयर इंडिया के अनुसार, उसे रोजाना 30-35 करोड़ रुपये का घाटा हो रहा है। मार्केट लीडर इंडिगो का नुकसान इससे दोगुना हो सकता है।

रेलवे को 7500 करोड़ का झटका लग सकता है

रेल मंत्रालय के आकलन के मुताबिक, लॉकडाउन से रेलवे को यात्री और माल यातायात में तकरीबन 7500 करोड़ रुपये का नुकसान हो सकता है। इसमें से 2500 करोड़ रुपये का नुकसान 24 से 31 मार्च के दौरान, जबकि बाकी 5000 करोड़ रुपये का नुकसान एक से 14 अप्रैल के दौरान होने का अनुमान है। रेलवे ने 2019-20 के दौरान 1.90 लाख करोड़ रुपये के कारोबार का लक्ष्य रखा था। जिसे आर्थिक सुस्ती के कारण घटाकर 1.80 लाख करोड़ दिया गया था। लॉकडाउन के बाद इसमें और कटौती कर 1.75 लाख करोड़ रुपये करना पड़ा है। रेलवे बोर्ड के एक अधिकारी के अनुसार, रेलवे को माल ढुलाई में रोजाना 200 करोड़ और यात्री सेवा में 150 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है।

सड़क परिवहन को 31000 करोड़ की चपत का अनुमान

सड़क परिवहन क्षेत्र का कोई सही आंकड़ा तो उपलब्ध नहीं है। लेकिन इस क्षेत्र के जानकारों का अनुमान है ट्रक व बस ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को भी लॉकडाउन से रोजाना 1500 करोड़ रुपये के भाड़े व किराये का नुकसान हो रहा होगा।

कोरोना को लेकर लागू लॉकडाउन के आगे नहीं बढ़ने के सरकार के आश्वासन के साथ ही लोगों में 15 अप्रैल और आगे की तारीखों के ट्रेन, विमान और बसों के टिकट बुक कराने की होड़ मची है। लॉकडाउन के बाद लोग जल्द से जल्द काम पर लौटने तथा अपना कारोबार जमाने को बेताब हो सकते हैं। लिहाजा अप्रैल-मई-जून महीनों की बुकिंग के लिए रेलवे, एयरलाइन तथा राज्य परिवहन निगमों की वेबसाइटों पर हिट्स बढ़ने लगी है।

आइआरसीटीसी के एक अधिकारी के अनुसार, उनके पास फोन आ रहे हैं जिसमें लोग पूछ रहे हैं कि 15 अप्रैल के बाद किस तारीख का टिकट उपलब्ध है क्योंकि उन्हें चुनिंदा ट्रेनों में अगले कुछ दिनों का आरक्षण नहीं मिल रहा है।

रेलवे ने 23 मार्च को 31 मार्च तक यात्री ट्रेनों का संचालन बंद करने की घोषणा की थी। 24 मार्च को देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद इसे 14 अप्रैल तक बढ़ा दिया गया। इसी प्रकार विमानन मंत्रालय ने पहले अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर 22 मार्च से 31 मार्च तक रोक लगा दी थी जिसे 14 अप्रैल तक बढ़ाया गया। घरेलू उड़ानों को भी पहले 31 मार्च तक और फिर 14 अप्रैल तक के लिए बंद करने की घोषणा की गई। ऐसे में रेलवे और एयरलाइंस दोनों ही 15 अप्रैल और उसके बाद की तारीखों की बुकिंग स्वीकार कर रही थीं। लेकिन लॉकडाउन बढ़ने की आशंका के चलते लोग बुकिंग कराने से झिझक रहे थे। मंगलवार को कैबिनेट सचिव राजीव गौबा ने ऐसी खबरों का खंडन किया और फिलहाल ऐसी कोई योजना नहीं होने का बयान दिया।

परिवहन क्षेत्र को भारी नुकसान : लॉकडाउन के तहत देश में ट्रेन और विमान के अलावा बसों, टैक्सियों का भी संचालन लगभग बंद है। केवल आवश्यक वस्तुओं, मेडिकल के सामान व दवाओं की ढुलाई तथा सुरक्षा बलों के जवानों की आवाजाही के लिए मालगाड़ियां, कारगो विमान सेवाएं जारी हैं। सामान्य यात्री सेवाओं पर पाबंदी तथा सीमित माल परिवहन होने से रेलवे व एयरलाइंस के साथ-साथ ट्रांसपोर्टरों तथा बस आपरेटरों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार लॉकडाउन की 21 दिन की अवधि में भारतीय परिवहन क्षेत्र को 50 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो सकता है।

बिरला ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये लोगों से किया संवाद

जासं, जयपुर : कोरोना को लेकर देशभर में चल रहे लॉकडाउन के बीच लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने अपने संसदीय क्षेत्र कोटा-बूंदी के लोगों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संवाद किया । उन्होंने लोगों की समस्याएं सुनीं और बचाव को लेकर बात कही। समस्याओं का समाधान करने को लेकर बाद में उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश भी दिए। बिरला ने कहा कि कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए हरसंभव उपाय किए जा रहे हैं, लेकिन अब तक इसका उपचार किसी दवा कंपनी या वैज्ञानिक के पास नहीं है। इसके उपचार एवं बचाव के लिए आप और हमें लॉकडाउन का पालन करें।

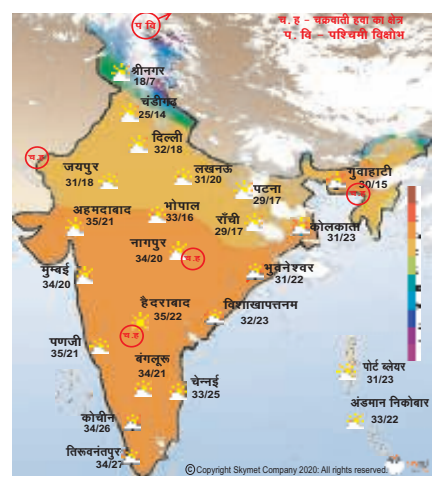

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में आंशिक बादलों के साथ मौसम शुष्क रहेगा। दिन के तापमान में वृद्धि होगी। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में एक-दो स्थानों पर गरज के साथ वर्षा होगी। दिन के तापमान में वर्षा में कमी के कारण वृद्धि होगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	35/21/आंबा	अहमदाबाद	39/16/स
कोलकाता	33/21/आंबा	बड़ोदा	38/16/सा
चेन्नई	34/26/स	नागपुर	35/20/स
हैदराबाद	35/23/आंबा	इन्दौर	34/17/स
बंगलूरु	34/22/आंबा	रांची	30/16/स
त्रिवेन्द्रम	34/26/आंबा	पटना	32/17/स
गुवाहाटी	34/21/आंबा	अमृतसर	32/17/स
जंगटोक	15/08/आंबा	पुणे	35/18/स

21 लोगों की मौत हो गई है ईरान में तेज बारिश के कारण अचानक आई बाढ़ से। आपातकाल विभाग के प्रवक्ता के मुताबिक बाढ़ से कौम, सिस्तान और बलूचिस्तान बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित हैं।

न्यूज गैलरी

इवांका ने मोदी के योगासन वीडियो को बताया शानदार

वाशिंगटन: अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बेटी इवांका ने पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा ट्विटर पर साझा किए गए योगासन के वीडियो की सराहना करते हुए उसे 'शानदार' बताया है। लॉकडाउन के दौरान लोगों को फिट रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए मोदी ने मंगलवार को योगासन का एक वीडियो शेयर किया था और कहा था कि तनाव कम करने में यह मददगार होगा। मोदी ने 'योग निद्रा' का वीडियो साझा करते हुए ट्वीट किया था, 'जब भी समय मिलता है, मैं हफ्ते में 1-2 बार योग निद्रा का अभ्यास अवश्य करता हूं। इससे शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है, साथ ही यह तनाव और चिंता को भी कम करता है। इंटरनेट पर आपको योग निद्रा के कई वीडियो मिलेंगे। अंग्रेजी और हिंदी में एक-एक वीडियो शेयर कर रहा हूं।' (प्रेट्र)

सऊदी की मुस्लिमों से हज यात्रा में देरी करने का अनुरोध

दुबई: सऊदी अरब ने लाखों मुस्लिमों से इस साल अपनी हज की यात्रा में देरी करने का अनुरोध किया है। कोरोना वायरस के चलते हज यात्रा को रद भी किया जा सकता है। सऊदी अरब के हज और उमराह मंत्री मुहम्मद सालेह बिन ताहेर बांतेन ने सरकारी टेलीविजन पर कहा कि सल्तनत सभी मुस्लिमों और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहा है। इसलिए दुनियाभर के मुस्लिमों से अनुरोध किया गया है कि वो जब तक यात्रा को लेकर कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिया जाता, तब तक टूर ऑपरेटरों के साथ किसी तरह का समझौता नहीं करें। हज यात्रा जुलाई में शुरू होने वाली थी। हर साल तकरीबन 20 लाख लोग हज यात्रा करते हैं। (एपी)

छुट्टी पर भेजे गए अमेरिकी सेना के कोरियाई कर्मचारी

सियोल: दक्षिण कोरिया में तैनात अमेरिकी सेना के लिए काम करने वाले करीब चार हजार स्थानीय कर्मचारियों को बुधवार से बगैर वेतन छुट्टी पर भेज दिया गया। यह कदम अमेरिकी सेना के खर्च को लेकर दक्षिण कोरिया के साथ हुए मतभेद के बीच उठाया गया है। परमाणु हथियारों से संपन्न उत्तर कोरिया से रक्षा के लिए दक्षिण कोरिया में करीब 28 हजार 500 अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। लेकिन इसका खर्च मांगे जाने के कारण अमेरिका और दक्षिण कोरिया के संबंधों में खटास आ गई है। ट्रंप प्रशासन ने एक साल के सैन्य खर्च के तौर पर द. कोरिया से पांच अरब डॉलर (करीब 38 हजार करोड़) की मांग की है। दोनों देशों में इस मसले पर सात दौर की बातचीत के बाद भी कोई समझौता नहीं हो पाया है। (एएफपी)

अफगानिस्तान में सरकार और तालिबान के बीच वार्ता शुरू

काबुल : अफगानिस्तान में सरकार और तालिबान के बीच वार्ता शुरू हो गई है। मंगलवार को पहले दौर की वार्ता हो चुकी है जबकि बुधवार को भी वार्ता होने की खबर है। लेकिन दूसरे दिन की वार्ता का ब्योरा प्राप्त नहीं हुआ है। दोनों पक्षों में कैदियों की अदला-बदली पर वार्ता हुई है। सरकारी जेलों में पांच हजार तालिबान कैदी हैं जबकि तालिबान के पास करीब एक हजार कर्मचारी और कार्यकर्ता बंधक हैं। सरकारी प्रतिनिधिमंडल और तालिबान नेताओं के बीच यह वार्ता अमेरिका और तालिबान के 29 फरवरी को हुए समझौते के क्रियान्वयन के लिए हो रही है। इस वार्ता पर अंतरराष्ट्रीय रेडक्रॉस सोसायटी, अफगानिस्तान की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद और अमेरिका भी नजर रख रहे हैं। सुरक्षा परिषद ने कहा है कि वार्ता में जवानों की रिहाई और तालिबान लड़ाकों की रिहाई की चर्चा हुई है। (एएफपी)

रूस की राजधानी मास्को में रेड स्क्वॉयर में भीषण बर्फबारी से सफेद चादर सी बिछ गई। कोरोन के संक्रमण को रोकने के लिए आंशिक लॉकडाउन का एलान कर दिया है। रायटर

अमेरिका में तीन दिन में दो हजार से ज्यादा की मौत

कोरोना का प्रकोप ▶ राष्ट्रपति ट्रंप बोले, बेहद दर्द भरे हो सकते हैं अगले दो हफ्ते

अब तक चार हजार से ज्यादा मौत, करीब एक लाख 90 हजार संक्रमित

न्यूयॉर्क, एजेंसियां : कोरोना महामारी से दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका में हालात बेकाबू होते जा रहे हैं। बीते तीन दिनों में ही दो हजार से ज्यादा पीड़ितों ने दम तोड़ दिया। इसको लेकर जान गंवाने वालों की संख्या चार हजार के पार पहुंच गई है। इस आंकड़े ने अमेरिका में नौ सितंबर, 2001 को आतंकी हमले में मारे गए लोगों की संख्या को भी पीछे छोड़ दिया है। 9/11 हमले में करीब तीन हजार लोगों की जान गई थी। अमेरिका में कोरोना से करीब एक लाख 90 हजार लोग संक्रमित हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का अनुमान है कि महामारी के चलते एक से दो लाख अमेरिकियों की जान जा सकती है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कहा है कि अगले दो हफ्ते बेहद दर्द भरे हो सकते हैं।

मंगलवार को ह्वाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत में ट्रंप ने कहा, 'अमेरिकियों के लिए अगले 30 दिनों तक दिशा-निर्देशों का पालन करना यकीनन कठिन है, लेकिन यह जिंदगी और मौत का मामला है।' ट्रंप ने दो दिन पहले ही अमेरिका में सोशल डिस्टेंसिंग के दिशा-निर्देशों को 30 अप्रैल तक बढ़ा दिया था। ट्रंप ने यह भी कहा कि कोरोना वायरस की फ्लू से तुलना करना गलत है। उन्होंने ही इससे पहले हर साल होने वाले फ्लू के प्रकोप से इस महामारी की तुलना की थी। कोरोना वायरस पर ह्वाइट हाउस टास्क फोर्स की सदस्य डेबोरा बर्क्स ने आशंका जताई है कि सख्त पाबंदियों के बावजूद मरने वालों का आंकड़ा एक से दो लाख तक पहुंच सकता है।

न्यूयॉर्क के सेंट्रल पार्क में बनाया जा रहा 68 बेड का आपातकालीन अस्पताल। यह रेस्पिरेट्री सिस्टम से लैस होगा। एपी

नहीं रहे 'स्टार वार्स' अभिनेता एंड्रयू जैक

एंड्रयू जैक। ट्विटर

लंदन, प्रेट्र : 'स्टार वार्स' और 'बैटमैन बिगिंस' जैसी हॉलीवुड फिल्मों में काम कर चुके अभिनेता एंड्रयू जैक की कोरोना संक्रमण के चलते मौत हो गई। उनके एजेंट जिल मैककुलॉग ने बताया कि दो दिन पहले जांच में पॉजिटिव पाए गए 76 वर्षीय जैक की मौत मंगलवार को ब्रिटेन के एक अस्पताल में ईलाज के दौरान हुई। स्वच्छंद जिंदगी जीने के शौकीन जैक टेम्स नदी के एक हाउसबोट में रहते थे। पति की मौत पर शोक प्रकट करते हुए जैक की पत्नी गैब्रियल रोजर्स ने कहा कि उन्हें ज्यादा तकलीफ का सामना नहीं करना पड़ा।

बीमारी से लड़ रहीं अमेरिकी अभिनेत्री ओलिविया : 'द सोसायटी' और 'सुपरगर्ल' जैसी वेब सीरीज में काम कर चुकीं 21 वर्षीय अभिनेत्री ओलिविया निक्कनेन ने कहा है कि वह कोरोना वायरस से जंग लड़ रही हैं। मंगलवार को इंस्टाग्राम पर अपनी सेहत के बारे में बताते हुए ओलिविया ने कहा कि चिकित्सकीय जांच में वह कोरोना पॉजिटिव पाई गई थीं। फिलहाल वह अपने घर में ही अलग रहते हुए दवा का सेवन कर रही हैं।

अकेले न्यूयॉर्क में एक हजार से अधिक की गई जान

अमेरिका में कोरोना का केंद्र बने न्यूयॉर्क शहर में सबसे खराब स्थिति है। अकेले इस शहर में ही एक हजार से ज्यादा कोरोना मरीजों की जान जा चुकी है। न्यूयॉर्क में हालात ऐसे बन गए हैं कि तेजी से बढ़ रहे मरीजों से निपटने में स्वास्थ्य व्यवस्था नाकाफी पड़ गई है। शहर के सभी अस्पताल मरीजों से भरे हैं। मेयर ने बिली जीन किंग टेनिस सेंटर समेत कई स्थानों पर अस्थायी अस्पताल बनाने का एलान किया है। न्यूयॉर्क शहर में 31 मार्च तक एक हजार 96 लोगों की मौत हुई और 41 हजार 771 लोग संक्रमित पाए गए। पूरे राज्य में संक्रमितों का आंकड़ा 75 हजार के पार पहुंच चुका है।

यूरोप में मरने वालों की संख्या तीस हजार पार

अकेले इटली और स्पेन में 21 हजार से ज्यादा मौतें

पेरिस, एजेंसियां: कोरोना वायरस महामारी से यूरोप में तीस हजार से ज्यादा लोगों की जान गई है। 21 हजार से ज्यादा मौतें अकेले दो देशों इटली और स्पेन में हुई हैं। उधर, कोरोना के संदिग्धों का पता लगाने के लिए यूरोपीय वैज्ञानिक कांटेक्ट ट्रेसिंग एप लांच करने की योजना पर काम कर रहे हैं। हाल ही में यूरोप से अलग हुआ ब्रिटेन भी इस तरह का एप बना रहा है, जिसके जल्द लांच होने की उम्मीद है। पूरे यूरोप में संक्रमण की बात करें तो 4,58,061 लोग इससे प्रभावित हैं। वहीं अकेले यूरोप में 30,063 लोगों की मौत हुई है। सर्वाधिक 12,428 मौतें इटली में हुई हैं जबकि स्पेन में 9,053 लोगों की जान गई है। उधर, अमेरिका में मृतकों की संख्या चार हजार से ज्यादा हो गई है। पिछले शनिवार के मुकाबले यह संख्या दोगुनी है।

ईरान में मृतकों की संख्या तीन हजार से ज्यादा : ईरान में पिछले चौबीस घंटे में 138 लोगों की जान गई है। इस तरह वहां मृतकों की संख्या 3036 हो गई है। 2,987 संक्रमण के नए मामले सामने आए हैं। संक्रमित लोगों की संख्या 47,593 हो गई है। राष्ट्रपति हसन रूहानी ने कहा कि ईरान पर से प्रतिबंध हटाने का एक अच्छा मौका अमेरिका ने गंवा दिया है। बता दें कि मंगलवार को विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने इस बात के संकेत दिए थे कि वाशिंगटन कोरोना से लड़ने के मामले में ईरान को कुछ रियायत दे सकता है। हालांकि उन्होंने इसकी कोई स्पष्ट रूपरेखा नहीं बताई थी।

ब्रिटेन में एक दिन 500 से ज्यादा लोगों की मौत : ब्रिटेन में मंगलवार को 563 लोगों की मौत हुई। यह पहला मौका है जब वहां एक दिन में मरने वालों का आंकड़ा 500 की संख्या को पार कर गया है। देश में मृतकों की संख्या 2,352 हो गई है। उधर, कोरोना संक्रमित ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स की हालत में सुधार है। एक वीडियो मैसेज में उन्होंने कहा, 'मेरी तबियत ठीक हो रही है, लेकिन मैं अभी भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर रहा हूं।' उनकी पत्नी कैमिला का हालांकि टेस्ट निगेटिव आया है, लेकिन वह इस सप्ताह के अंत तक आइसोलेशन में रहेंगी। वहीं ब्रिटेन ने टेस्टिंग की संख्या अप्रैल मध्य तक 25,000 प्रतिदिन करने की बात कही है।

ईरान ने राजधानी तेहरान में स्थित आजादी टॉवर पर लाइट से कई देशों के झंडे बनाकर एकजुटता का संदेश दिया। एएफपी

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	12,428	105,792
स्पेन	9053	102,136
अमेरिका	4066	188,881
चीन	3312	81,554
ईरान	3036	47,593
फ्रांस	3,523	52,128

बनाए जा रहे अस्थायी अस्पताल

रोम, एपी : कोरोना के बढ़ते संक्रमण की वजह से यूरोपीय देशों में सघन चिकित्सा इकाइयों (आइसीयू) की जबर्दस्त कमी हो गई है। यूरोपीय देश मरीजों की बढ़ती तादाद के मद्देनजर नए अस्थायी अस्पताल बना रहे हैं और मरीजों को हाई स्पीड ट्रेनों व सैन्य विमानों से अस्पतालों में भेज रहे हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह भी है कि क्या नए अस्पतालों के लिए इतनी जल्दी स्वस्थ चिकित्साकर्मी मिल सकेंगे।

वैक्सीन ही एकमात्र तरीका: ऑस्ट्रेलिया में बुधवार को मृतकों की संख्या 21 हो गई। जबकि संक्रमित मामलों की संख्या 4860 हो गई है। ऑस्ट्रेलिया के स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि वैक्सीन ही इस महामारी से निपटने का एकमात्र तरीका है।

स्पेन में 864 और लोगों की मौत : स्पेन में पिछले चौबीस घंटे में 864 लोगों की और मौत हुई है। मरने वालों की तादाद वहां 9053 हो गई है। वहीं संक्रमित लोगों की संख्या 102,316 हो गई है। संक्रमित लोगों की संख्या की दर घटकर आठ फीसद रह गई है। महामारी से राजधानी मैड्रिड सबसे ज्यादा प्रभावित है।

चीन में बिना लक्षण वाले 1541 कोरोना रोगी

बीजिंग, एजेंसियां: चीन में बिना लक्षण वाले 1,541 कोरोना रोगियों का पता चला है। दूसरे दौर के संक्रमण से बचने के लिए इन रोगियों की सूची खुद नेशनल हेल्थ कमीशन ने जारी की है। चीन में संक्रमण के 35 नए मामले भी सामने आए हैं। स्थानीय संक्रमण के एक मामले को छोड़ दें तो इनमें वे लोग शामिल हैं जो विदेश से आए हैं। दूसरे देशों से आने वाले संक्रमण के कुल मामले 806 हो गए हैं। देश में महामारी से सात और लोगों की मौत के बाद मृतकों की संख्या 3,312 हो गई है। जबकि संक्रमित व्यक्तियों का आंकड़ा 81,544 पर पहुंच गया है।

चीन के नेशनल हेल्थ कमीशन ने बुधवार को कहा कि सोमवार के अंत तक बिना लक्षण वाले 1,541 रोगियों को डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया। इसमें से 205 वे लोग हैं जो विदेश से चीन आए हैं। खास बात यह है कि जिन रोगियों में लक्षण नहीं दिखाई दिए, उनकी संख्या को विदेश में संक्रमित व्यक्तियों की सूची में शामिल किया गया है। हालांकि साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट ने बताया कि फरवरी के अंत तक चीन में 43 हजार से ज्यादा लोगों का टेस्ट पॉजिटिव आया था।

ब्रिटेन में डॉक्टरों का वीजा एक साल के लिए बढ़ाने का फैसला

बड़ी संख्या में भारतीय डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी होंगे लाभान्वित

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटेन में विदेशी मूल के डॉक्टरों को राहत देते हुए सरकार ने उनका वर्क वीजा एक साल के लिए बढ़ाने का फैसला किया है। इस फैसले से लाभान्वित होने वाले डॉक्टर वे हैं जिनका वीजा इसी साल एक अक्टूबर से पहले खत्म हो रहा था। सरकार के इस फैसले से लाभान्वित होने वालों में भारतीय डॉक्टर भी हैं।

ब्रिटिश सरकार ने कहा कि जिन भी विदेशी डॉक्टरों के वीजा चालू वर्ष में अक्टूबर या इससे पहले खत्म हो रहे होंगे, उनकी वीजा अवधि स्वतः ही एक साल के लिए बढ़ जाएगी। यह फैसला कोरोना वायरस के देश में फैले प्रकोप के चलते लिया गया है। ब्रिटेन में कोरोना पीड़ितों की बढ़ती तादाद के मद्देनजर इन दिनों डॉक्टरों, नर्सों और अन्य सहायक स्टाफ की जरूरत महसूस हो रही है। संकट को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने स्वास्थ्य सुविधाओं में डॉक्टर और नर्स छात्र-छात्राओं की मदद लेने का भी फैसला किया है। सरकार के इस फैसले की घोषणा गृह मंत्री प्रीति पटेल ने की है। वीजा संबंधी उनके इस एलान से ब्रिटेन में कार्यरत कुल 2,800 विदेशी डॉक्टर और अन्य स्वास्थ्य कर्मी लाभान्वित होंगे।

पटेल ने कहा कि दुनिया पर जिस तरह से कोरोना वायरस का संकट छाया हुआ है उससे निपटने में डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्यकर्मी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। वे जो कार्य कर रहे हैं हम उसके लिए उनके आभारी हैं। हम नहीं चाहते कि वे वीजा से जुड़ी प्रक्रियाओं में फंसें। इसलिए सरकार ने बिना किसी अतिरिक्त शुल्क लिए उनका वीजा एक साल के लिए स्वतः बढ़ा दिया है। उनके परिजनों का वीजा भी बिना किसी शुल्क के एक साल के लिए बढ़ेगा।

अमेरिका में नए एच-1 बी वीजा प्रावधान टालने का अनुरोध : अमेरिका में तकनीक से जुड़े पेशेवरों के हित के लिए कार्य करने वाली संस्था ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से एच-1 बी वीजा से जुड़े नए प्रावधान लागू करने का फैसला एक साल के लिए टालने का अनुरोध किया है।

भारतवंशी वायरोलॉजिस्ट की संक्रमण से मौत

जोहानिसबर्ग, प्रेट्र : शीर्ष वायरोलॉजिस्ट (वायरस विज्ञानी) गीता रामजी की दक्षिण अफ्रीका में कोरोना संक्रमण से मौत हो गई। वह इस महामारी से जान गंवाने वाली दक्षिण अफ्रीका की पहली भारतवंशी हैं। गीता वैक्सीन साइंटिस्ट होने के साथ ही एचआइवी निरोधक शोध की प्रमुख थीं। वह एक सप्ताह पहले ही लंदन से लौटी थीं, लेकिन तब उनमें कोरोना के कोई लक्षण नहीं थे। दक्षिण अफ्रीका में अभी तक संक्रमण से पांच लोगों की मौत हो चुकी है। देश में करीब 1,350 लोग संक्रमित हैं।

गीता रामजी। ट्विटर

50 वर्षीय गीता रामजी क्लीनिक ट्रायल्स यूनिट की प्रधान शोधकर्ता होने के साथ ही डरबन स्थित एचआइवी रिसर्च यूनिट ऑफ साउथ अफ्रीकन मेडिकल रिसर्च काउंसिल ऑफिसेज की यूनिट डायरेक्टर भी थीं। गीता को 2018 में यूरोपियन डेवलपमेंट क्लीनिकल ट्रायल्स पार्टनरशिप ने आउटस्टैंडिंग फीमेल साइंटिस्ट अवार्ड से नवाजा था। यह अवार्ड उन्हें एचआइवी की रोकथाम के नए तरीके खोजने के लिए दिया गया था।

वायरस के कारण दुनिया के सामने भोजन का संकट

▶ डब्ल्यूएचओ व डब्ल्यूटीओ ने सरकारों से खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित करने को कहा

▶ दुनिया के कई देशों में लॉकडाउन के चलते वैश्विक कारोबार पर पड़ रहा असर

पेरिस, एएफपी : सरकारें अगर कोरोना वायरस के कारण उपजे इस संकट का समाधान नहीं निकाल पाईं तो दुनिया के सामने नया संकट पैदा हो सकता है। यह संकट है भोजन का। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने एक संयुक्त बयान में यह चेतावनी दी है।

इस समय कोरोना महामारी के कारण कई देशों में लॉकडाउन चल रहा है। इसके कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापार और खाद्य आपूर्ति चेन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इसके अलावा लोगों ने अफरा-तफरी के चलते बड़े पैमाने पर खरीदारी करके सामान घरों में जुटा लिया है। इससे भी खाद्य वस्तुओं की किल्लत देखने को मिल रही है।

एफएओ के प्रमुख क्यू डोंगयू, डब्ल्यूएचओ डायरेक्टर जनरल टेडरोस एडनम और डब्ल्यूटीओ के डायरेक्टर रॉबर्टो एजेवेडो की ओर से जारी संयुक्त बयान में कहा गया है कि खाद्य उपलब्धता की अनिश्चितता के कारण कई देश निर्यात पर प्रतिबंध लगा सकते हैं, इससे वैश्विक बाजार में कमी आएगी।

बयान में कहा गया है कि लॉकडाउन के दौरान भी जहां तक संभव हो व्यापार को सुचारू तरीके से चलाते रहने का प्रयास होना चाहिए। अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करते समय विभिन्न देशों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि खाद्य आपूर्ति की चेन प्रभावित नहीं हो। ज्यादा समय तक ऑर्डर रुके रहने और यात्रा पर प्रतिबंध से श्रमिकों की कमी हो रही है, जिससे कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इससे बाजार तक खाद्य पदार्थों का पहुंचना मुश्किल हो रहा है। संयुक्त बयान में खाद्य उत्पादन से जुड़े कार्य में लगे लोगों का रोजगार सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया गया ताकि भविष्य के सबसे बड़े संकट से निपटा जा सके।

महामारी से पीड़ित भारतीय अमेरिकी को प्लाज्मा की जरूरत

ह्यूस्टन, एएनआइ : भारतीय मूल के अमेरिकी रोहन बावडेकर कोविड-19 से पीड़ित हैं। उनको ह्यूस्टन के सेंट ल्यूक हॉस्पिटल में वेंटिलेटर पर रखा गया है। 42 वर्षीय रोहन अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे हैं और उनकी पत्नी मानसी और तीन छोटे बच्चे भी घर पर कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं। कोरोना पीड़ित इस परिवार के लिए टेक्सास राज्य अमेरिकी हिंदू समूह 'सेवा' संगठन हर गैर चिकित्सकीय सहायता तो मुहैया करा ही रहा है, अब रोहन की जान बचाने के लिए कोरोना वायरस के संक्रमण से ठीक हो चुके व्यक्ति के प्लाज्मा की तलाश में है। ताकि इससे रोहन की जान बचाई जा सके।

सेवा ह्यूस्टन चैप्टर के अध्यक्ष गीतेश देसाई ने बताया कि उनकी संस्था बावडेकर परिवार की सहायता करते हुए एक चमत्कार की उम्मीद कर रही है। उनका संस्थान इस परिवार को भोजन, राशन, दवाइयां के साथ ही उन्हें इमोशनल सपोर्ट भी दे रही है। लेकिन अब सबसे बड़ा लक्ष्य कोरोना के ऐसे मरीज को तलाशना है जो पूरी तरह से ठीक हो गया हो।

हजारा समुदाय को बलि का बकरा बना रहा पाकिस्तान

▶ धार्मिक स्वतंत्रता पर नजर रखने वाले अमेरिकी आयोग ने लगाया आरोप

वाशिंगटन, एएनआइ: कोरोना संक्रमण को लेकर पाकिस्तान का ब्लेम गेम शुरू हो गया है। इस बार उसके निशाने पर हिंदू, सिख या ईसाई नहीं बल्कि हजारा शिया समुदाय है। संक्रमण के लिए हजारा समुदाय को जिम्मेदार ठहराने वाली खबरों से पाकिस्तान के अखबार भरे पड़े हैं। अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता मामलों से जुड़े अमेरिकी आयोग (यूएससीआइआरएफ) ने इन्हीं खबरों का संज्ञान लेते हुए पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत की सरकार पर इस महामारी के बहाने हजारा समुदाय को बलि का बकरा बनाने का आरोप लगाया है। पाकिस्तान में संक्रमण के दो हजार से ज्यादा मामले आ चुके हैं। देश में 26 लोगों की मौत हो चुकी है।

यूएससीआइआरएफ की सदस्य अनुरिमा भार्गव ने कहा, 'हम इस बात से परेशान हैं कि बलूचिस्तान में सरकारी अधिकारी इस महामारी के लिए हजारा शिया समुदाय को बलि का बकरा बना रहे हैं। यह वायरस धर्म, जाति और देश की सीमाओं को नहीं मानता। इस बीमारी को किसी एक समुदाय के साथ भेदभाव करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।' बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा में लॉकडाउन के आदेशों के तहत हजारा बहुल दो इलाकों हजारा टाउन और मारियाबाद को पूरी तरह सील कर दिया गया है। यही नहीं, सरकारी कर्मचारियों को इन इलाकों में जाने से मना कर दिया गया है और हजारा समुदाय से ताल्लुक रखने वाले पुलिसकर्मियों को छुट्टी पर भेज दिया गया है। आयोग के कमिश्नर जॉनी मूर ने कहा, 'हम पाकिस्तान के हजारा शिया समुदाय के बारे में गंभीर रूप से चिंतित हैं। हम पाकिस्तान से आग्रह करते हैं कि वह धर्म और जाति से परे हटकर अपने सभी नागरिकों की ना केवल रक्षा करे बल्कि उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय देखभाल उपलब्ध कराए।' आयोग ने 2019 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा था कि हाल के वर्षों में पाकिस्तान में सांप्रदायिक हिंसा में वृद्धि हुई है।

बीमारी की जांच को 100 से अधिक देशों ने दक्षिण कोरिया से मदद मांगी

सोल, रायटर: दुनिया के सौ से अधिक देशों ने कोरोना वायरस की जांच में दक्षिण कोरिया से मदद मांगी है। यह जानकारी दक्षिण कोरियाई विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने बुधवार को दी।

प्रवक्ता ने बताया कि उनके देश में बड़े पैमाने पर चलाए गए जांच अभियान का परिणाम काफी अच्छा रहा। इससे हम लोगों ने न केवल संक्रमितों की पहचान कर ली बल्कि संक्रमण फैलने की रफ्तार पर भी काबू पा लिया। जबकि कभी हमारे यहां चीन के बाद सर्वाधिक मामले थे। प्रवक्ता ने बताया कि हमारी सफलता और अनुभव को देखकर अन्य देश हमसे मदद मांग रहे हैं। अब तक 121 देशों ने हमसे मदद की गुहार लगाई है। यह संख्या लगातार बढ़ रही है। राजनयिक संवेदनशीलता के चलते हम उनका नाम नहीं बता सकते। हम लोगों ने एक ऐसी टास्क फोर्स बनाई है जो यह तय करेगी कि मदद किस रूप में की जाए।

प्रवक्ता ने भले ही मदद मांगने वाले देशों के नाम न बताए हों लेकिन जांच किट बनाने वाली कोरियाई कंपनियों को जिन देशों के आर्डर मिले हैं उनमें अमेरिका और इटली जैसे देश शामिल हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कोरियाई राष्ट्रपति से पिछले सप्ताह जांच किट और अन्य उपकरण की सप्लाई की मांग करते हुए संबंधित फर्मों को अमेरिकी नियमों में रियायत देने की घोषणा की है।

जांच किट बनाने वाली दक्षिण कोरियाई बायोटेक फर्मों ने दुनिया भर से आ रही मांग को पूरा करने के लिए अपना उत्पादन बढ़ा दिया है। कुछ शीर्ष कंपनियों ने तो अपना उत्पादन तीन गुना तक कर दिया है।

दक्षिण कोरिया इस समय फिनलैंड की हेल्थकेयर फर्म द्वारा भेजे गए जांच नमूनों का विश्लेषण कर रहा है। यह फर्म अगले दो सप्ताह में 18000 संक्रमितों के जांच नमूने कोरिया भेजेगी। यह जानकारी फर्म और कोरियाई स्वास्थ्य प्रशासन के प्रतिनिधि ने संयुक्त रूप से दी।

संरा प्रमुख की राय

इस बीमारी के सामाजिक और आर्थिक दुष्परिणाम भी बहुत घातक, विकसित देशों को कमजोर देशों की मदद करने आगे आना होगा

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कोरोना संकट सबसे चुनौतीपूर्ण : गुतेरस

संयुक्त राष्ट्र, प्रेट्र: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कोरोना संकट सबसे चुनौतीपूर्ण घटना है। एक तरफ तो इससे बड़े पैमाने पर लोगों की जान जा रही है वहीं दूसरी तरफ आर्थिक मंदी की भीषण मार पड़ने के आसार बन रहे हैं। हाल के दिनों में इस जैसी कोई घटना देखने को नहीं मिली। यह बात संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुतेरस ने कही।

जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय के आकलन के अनुसार दुनिया में इस समय 850,500 से अधिक लोग कोरोना वायरस से संक्रमित है। 41,000 से अधिक मौतें हो चुकी हैं। अकेले अमेरिका में 184,183 लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं जबकि 4000 से अधिक लोग अपनी जान गंवा चुके हैं।

गुतेरस मंगलवार को कोविड-19 के सामाजिक आर्थिक प्रभाव पर 'शेयर्ड रिस्पांसबिलटी, ग्लोबल सालिडैरिटी : रिस्पांडिंग टू द सोशियो इकानमिक्स' नामक रिपोर्ट जारी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संरा के 75 साल के इतिहास में पहली बार ऐसी स्वास्थ्य समस्या का सामना कर रहे हैं जिसमें लोगों की जान जा रही है, लोग बहुत तकलीफ से गुजर रहे हैं और उनकी जिंदगी बदल रही है। यह सिर्फ एक स्वास्थ्य संकट नहीं बल्कि गंभीर मानवीय संकट है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव, एंटोनियो गुतेरस। रायटर

जब उनसे यह पूछा गया कि वे इस संकट को संरा की स्थापना के बाद से सबसे गंभीर क्यों मान रहे हैं, उन्होंने जवाब दिया कि इस संकट से दोहरी मार पड़ रही है। एक तरफ तो इससे बड़ी तादाद में जानें जा रही हैं दूसरी तरफ भीषण आर्थिक प्रभाव से ऐसी मंदी की आशंका है कि जैसी पहले कभी आई नहीं होगी। इस दोहरी मार से विश्व में अस्थिरता, असंतोष और संघर्ष बढ़ने का भी खतरा है। इसी वजह से लग रहा है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के सबसे गंभीर संकट का हम लोग सामना कर रहे हैं। इससे निपटने के लिए हम लोगों को प्रभावी व मजबूत प्रयास करने होंगे। यह तभी संभव होगा जब हम राजनीतिक खेल छोड़कर यह स्वीकार कर लें कि इस संकट में मानवता दांव पर लगी हुई है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा कि विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को गरीब व वंचित देशों के लिए नई, समंवित व निर्णायक कार्य योजना के साथ आगे आना होगा। इस महामारी को काबू करने के लिए सभी को मिलकर काम करना होगा। इस बीमारी की जांच और इलाज के पुख्ता प्रबंध करने होंगे। जो लोग चपेट में आ गये हैं उनकी जान बचाने के साथ उनसे और किसी को यह बीमारी न हो उसके लिए आवाजाही पर रोक व क्वारंटाइन जैसे ठोस उपाय भी करने होंगे।

उन्होंने कहा कि विकसित देशों को कम विकसित देशों की मदद करनी चाहिये। जो देश इस बीमारी पर काबू पा चुके हैं उन्हें उन देशों की मदद करनी चाहिये जहां अब यह जंगल की आग की तरह फैल रही है।

इस बीमारी के कारण ध्वस्त हो रहे सामाजिक व आर्थिक आयाम की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम लोगों को सबसे कमजोर तबके को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनानी होंगी। और चीजों के साथ स्वास्थ्य व रोजगार बीमा व सामाजिक सुरक्षा देनी होगी। इसके साथ ही व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देना होगा ताकि रोजगार के अवसर कम न हों और दीवालिया होने की नौबत न आये।

संरा महासचिव ने कहा कि सभी देशों को इस संकट के कारण सामाजिक व आर्थिक पहलुओं पर पड़ रहे असर से ठीक से निपटने के लिए महिलाओं, बुजुर्गों, नौजवानों व अल्प वेतनभोगियों, लघु व मध्यम उपक्रम व असंगठित क्षेत्र के हितों को ध्यान में रखना होगा। इस संकट से यही सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। हमें देखना होगा कि देश न केवल इस बीमारी से निपटने में एकजुट हों बल्कि इसके दुष्प्रभावों से भी मिलकर मोर्चा लें। इसके लिए आर्थिक और मौद्रिक नीतियों को नये सिरे से बनाना होगा। बड़े पैमाने पर बहुतस्तरीय समंवित प्रयास करन होंगे। इसके लिए सकल वैश्विक उत्पाद के 10 फीसद की तत्काल जरूरत होगी।

उन्होंने कहा इस संकट से निपट रहे देशों को उबारने के लिए कर्ज मुहैया करने के उपाय करने होंगे। संरा पूरी तरह सक्रिय है। इसके लिए वह कई साझीदरों के साथ मिलकर एक ट्रस्ट फंड की स्थापना कर रहा है।

जब हम इस संकट से उबर जायेंगे तब हमारे पास दो विकल्प होंगे या तो हम उसी वैश्विक व्यवस्था को अपनाएं जिसमें हम जी रहे थे या ऐसे मुद्दों से निर्णायक रूप से निपटें जो हमें इस तरह के संकटों का सामना करने में कमजोर बनाते हैं।

हम फिटनेस के मामले में ऑस्ट्रेलिया व इंग्लैंड के खिलाड़ियों से पांच-छह साल पीछे हैं।
— हरमनप्रीत कौर, भारतीय महिला क्रिकेटर

रेंजर्स के साथ खुद को ढालना उम्मीद से आसान रहा : बाला देवी

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय फुटबॉल खिलाड़ी बाला देवी ने कहा कि स्कॉटलैंड की शीर्ष क्लब की टीम रेंजर्स के साथ ढलना उनके लिए मुश्किल नहीं रहा जितना उन्होंने सोचा था। इस साल जनवरी में बाला देवी ने उस समय इतिहास रचा था जब प्रसिद्ध स्कॉटिश महिला प्रीमियर लीग की टीम रेंजर्स ने उनसे 18 महीने का करार किया। वह विदेशी की पेशेवर लीग में खेलने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनी।

एक नजर में

ओलंपिक चैंपियन बनने तक हार नहीं मानेंगी मैरी

नई दिल्ली : छह बार की विश्व चैंपियन भारत की अनुभवी महिला मुक्केबाज एमसी मैरी कॉम ने बुधवार को कहा कि ओलंपिक में देश के लिए पदक जीतना उनका सपना है और जब तक वह अपने इस लक्ष्य को हासिल नहीं कर लेती तब तक अपना सर्वश्रेष्ठ देना जारी रखेंगी। मैरी ने 2012 के लंदन ओलंपिक में 51 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक जीता था। मैरी ने भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) के लिए फेसबुक लाइव में कहा कि मेरा ध्यान ओलंपिक खेलों में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतना है। मैं इस उम्र में भी कड़ी मेहनत कर रही हूं। मेरे लिए पहले स्थान पर ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करना बहुत मुश्किल था, जिसे अगले साल तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। (प्रेट्र)

आहत नहीं करना चाहते थे युवी

नई दिल्ली : पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर शाहिद अफरीदी की संस्था को दान देने का आग्रह करती अपनी सोशल मीडिया पोस्ट पर आलोचना झेल रहे भारत के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने बुधवार को कहा कि उनका इरादा किसी को आहत करने का नहीं था और मदद की उनकी गुहार को लेकर तिल का ताड़ बना दिया गया। युवराज और हरभजन सिंह ने कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में अफरीदी की संस्था की मदद के लिए ट्वीट किया था। दोनों देशों के बीच राजनीतिक तनाव के मद्देनजर उनके इस ट्वीट की काफी आलोचना हो रही है। युवराज ने बुधवार को ट्वीट किया कि मुझे समझ में नहीं आता कि जरूरतमंदों की मदद को लेकर किए गए एक ट्वीट पर इतना हंगामा क्यों बरपा है। मैं सिर्फ इतना कहना चाहता था कि अपने-अपने देश में लोगों की मदद करें। मेरा इरादा किसी भी भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। मैं भारतीय हूं और हमेशा रहूंगा। मैं इंसानियत के लिए भी हमेशा खड़ा रहूंगा। जय हिंद। (जेएनएन)

मशाल फुकुशिमा के हवाले

टोक्यो : ओलंपिक मशाल बुधवार को फुकुशिमा में एक छोटे से समारोह में अधिकारियों के हवाले कर दी गई। टोक्यो ओलंपिक को कोरोना वायरस के कारण एक साल के लिए स्थगित कर दिया गया है। ऐसे में यह मशाल अप्रैल के महीने में फुकुशिमा में ही रहेगी। ओलंपिक मशाल वाली लालटेन दो अप्रैल से 30 अप्रैल तक यहीं रहेगी। (आइएएनएस)

चीन को मेजबानी

नई दिल्ली : कोरोना वायरस महामारी के केंद्र में रहे चीन में अगले साल नवंबर में तीसरे एशियाई युवा खेल होंगे। एशियाई ओलंपिक परिषद (ओसीए) ने बुधवार को यह घोषणा की। चीन के वुहान से ही कोरोना वायरस महामारी की शुरुआत हुई जो यूरोप, अमेरिका और एशिया में फैली। ओसीए ने एशियाई युवा खेल 20 से 28 नवंबर तक कराने का फैसला किया है। (जेएनएन)

आज पीटरसन के साथ लाइव आएंगे कोहली

नई दिल्ली : भारतीय कप्तान विराट कोहली ने ट्वीट करते हुए जानकारी दी है कि गुरुवार को इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन के साथ इंस्टाग्राम पर शाम सात बजे से लाइव आएंगे। यह दोनों दुनिया के मौजूदा हालात के अलावा कई और मुद्दों पर भी बात करने वाले हैं। कोहली ने ट्वीट किया, मैं पीटरसन के साथ इंस्टाग्राम पर लाइव आऊंगा। हमारे साथ जुड़िए, यहां हम मौजूदा हालात के अलावा और पिछले कुछ साल के बारे में बात करेंगे, जब से हम एक-दूसरे को जानते हैं।' (जेएनएन)

रॉयल्स ने दिया नया आइपीएल फॉर्मूला

राजस्थान रॉयल्स भारतीय खिलाड़ियों के साथ छोटे आइपीएल के लिए तैयार

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : राजस्थान रॉयल्स के एक्जक्यूटिव चेयरमैन रंजीत बरठाकुर ने बुधवार को कहा कि इस मुश्किल समय में केवल भारतीय खिलाड़ियों के साथ छोटी अवधि का आइपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) भी अच्छा होगा। उन्होंने इसके साथ ही कहा कि इस टी-20 लीग के भाग्य का फैसला 15 अप्रैल से पहले किए जाने की संभावना नहीं है। कोरोना वायरस के कारण दुनिया भर में खेल गतिविधियां बंद पड़ी हैं।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने इस लीग को लेकर अभी तक फैसला नहीं किया है जिसे कोविड-19 महामारी और विदेशी नागरिकों के भारत में प्रवेश पर लगी पाबंदी को देखते हुए कम से कम 15 अप्रैल तक स्थगित कर दिया गया था। पूर्व कार्यक्रम के अनुसार यह टूर्नामेंट 29 मार्च से शुरू होना था। बरठाकुर ने कहा, 'हम केवल भारतीय खिलाड़ियों के साथ छोटे टूर्नामेंट के लिए तैयार है। आखिरकार यह है तो इंडियन प्रीमियर लीग ही।' हालांकि बीसीसीआइ के पास कुछ द्विपक्षीय सीरीज की तिलांजलि देकर साल के अंत में आइपीएल के आयोजन का विकल्प है। रॉयल्स के अधिकारी ने कहा, 'यह असाधारण समय है और स्थिति में सुधार पर बीसीसीआइ को अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने होंगे। पहले हम केवल भारतीय खिलाड़ियों के आइपीएल के बारे में नहीं सोच सकते थे लेकिन अब भारत में पर्याप्त अच्छे खिलाड़ी हैं। आइपीएल नहीं करवाने के बजाय केवल भारतीय खिलाड़ियों के साथ टूर्नामेंट आयोजित कराना बेहतर होगा। कम से कम भारतीय खिलाड़ियों को फायदा मिलेगा। टूर्नामेंट कब होगा इसका फैसला बीसीसीआइ को करना है और मेरा मानना है कि ऐसा फैसला 15 अप्रैल के बाद ही किया जाना चाहिए।'

वाट्सएप ग्रुप से खिलाड़ियों पर नजर: आइपीएल की एक टीम के अधिकारी ने हमारे खिलाड़ी वर्तमान स्थिति को लेकर कई तरह के सवाल पूछ रहे हैं और इसी कारण प्रबंधन को लगा कि वाट्सएप ग्रुप बनाना सही होगा जिसमें खिलाड़ी और अधिकारी आपस में बात कर सकेंगे। खिलाड़ियों के लिए मैदान पर जाना और खेलना काफी मायने रखता है। आलोचक पैसे के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन क्रिकेटरों के लिए घरों में बैठना और यह पक्का न होना कि वह मैदान पर कब लौटेंगे यह काफी मुश्किल होता है, साथ ही यह भी कि आइपीएल इस साल होगा या नहीं।

प्यार का नगमा पर फिदा हुए सुरेश रैना: भारतीय बल्लेबाज सुरेश रैना ने एक ऐसा विडियो साझा किया है जिसमें एक पुलिसकर्मी का वीडियो वायरल हो रहा है जो गाना गाकर लोगों को कोरोना से बचने के तरीके बचा रहे हैं। रैना ने यह वीडियो शेयर कर पुलिसकर्मी के जज्बे को सलाम किया है। पुलिस अधिकारी अभिनव उपाध्याय ने कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए लोगों को गाना गाकर जागरूक किया। उपाध्याय, इक प्यार का नगमा है की तर्ज पर घर में ही रहना है, बाहर नहीं जाना है, सैनिटाइजर लगाना है।

धौनी और कोहली ने मुझे वैसे सहयोग नहीं किया जैसा गांगुली ने किया : युवी

नई दिल्ली : युवराज सिंह ने 17 साल के अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में कई कप्तानों की अगुआई में खेला। अब युवी ने बताया कि उनकी नजर में सर्वश्रेष्ठ कप्तान कौन है। 38 वर्षीय इस इस पूर्व ऑलराउंडर ने कहा कि वह अकसर सौरव गांगुली की कप्तानी में खेले गए अपने वक्त को याद करते हैं। कोहली और धोनी कभी भी सौरव गांगुली की बराबरी नही कर सकते हैं। इन लोगों को वो मेहनती टीम थाली में सजा के मिली थी लेकिन उसके लिए मेहनत गांगुली ने की थी। धौनी की कप्तानी में 2011 विश्व कप जिताने में अहम भूमिका निभाकर प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट रहे युवी ने कहा कि मैंने सौरव की कप्तानी में खेला और उन्होंने मुझे बहुत मदद की। मुझे माही (महेंद्र सिंह धोनी) और कोहली से उस तरह का सपॉर्ट नहीं मिला। उन्होंने कहा कि मुझे मुथैया मुरलीधरन का सामना करने में बहुत मुश्किल आती थी। मुझे उनकी गेंदबाजी बिलकुल समझ नहीं आती थी। फिर सचिन ने मुझे उनकी गेंद पर स्वीप करने का आइडिया दिया और इससे मुझे काफी आसानी हुई।

युवराज ● फाइल फोटो, प्रेट्र

स्टीव स्मिथ ● फाइल फोटो, प्रेट्र

वार्न की भारतीय टीम के कप्तान सौरव गांगुली

शेन की सर्वकालिक भारतीय एकादश में धौनी और विराट शामिल नहीं

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज स्पिनर शेन वार्न ने पूर्व कप्तान और वर्तमान में बीसीसीआइ के अध्यक्ष सौरव गांगुली को अपनी सर्वकालिक भारतीय एकादश का कप्तान चुना है, लेकिन उन्हें दिन में तारे दिखाने वाले वीवीएस लक्ष्मण को इस टीम में जगह नहीं मिली। वार्न ने इस टीम में मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर और नवजोत सिंह सिद्धू को भी रखा है। वार्न ने कहा कि उन्होंने पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी और वर्तमान कप्तान विराट कोहली को इसलिए नजरअंदाज किया, क्योंकि उन्होंने केवल उन्हीं खिलाड़ियों में से टीम चुनी है जिनके खिलाफ वह खेले हैं।

वार्न ने इंस्टाग्राम पोस्ट पर लिखा, 'मैं केवल उन्हीं खिलाड़ियों को चुन रहा हूं जिनके खिलाफ मैं खेला और इसलिए धौनी और विराट इस टीम का हिस्सा नहीं बन रहे हैं। धौनी जहां इस खेल के सर्वकालिक विकेटकीपर बल्लेबाजों में शामिल हैं वहीं कोहली सभी प्रारूपों के सर्वकालिक बल्लेबाजों में से एक हैं।'

गांगुली की वजह से लक्ष्मण बाहर: उन्होंने लिखा कि मैंने गांगुली को चुना क्योंकि मैं उन्हें कप्तान बनाना चाहता था और इसलिए लक्ष्मण को टीम में जगह नहीं मिली। वार्न ने विकेटकीपर के तौर पर नयन मोंगिया को चुना है। इस टीम में 1983 विश्व कप विजेता टीम के कप्तान कपिल देव, स्पिनर अनिल कुंबले और हरभजन सिंह तथा तेज गेंदबाज जवागल श्रीनाथ भी शामिल हैं।

सहवाग-सिद्धू ओपनर: इस लेग स्पिनर ने वीरेंद्र सहवाग और सिद्धू को सलामी बल्लेबाज चुना है। उनकी बल्लेबाजी लाइन अप में राहुल द्रविड़, तेंदुलकर और मुहम्मद अजहरुद्दीन शामिल हैं। अन्य सलामी बल्लेबाजों पर सिद्धू को प्राथमिकता देने के बारे में वार्न ने कहा मैं जिन भी खिलाड़ियों के खिलाफ खेला उनमें वह स्पिन के खिलाफ सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज थे। मैं अन्य जितने भी स्पिनरों के साथ खेला उन्होंने भी मुझसे कहा कि सिद्धू स्पिन के खिलाफ शानदार हैं।'

शेन वार्न की सर्वकालिक भारतीय एकादश: सौरव गांगुली (कप्तान), सहवाग, नवजोत सिंह सिद्धू, राहुल द्रविड़, सचिन तेंदुलकर, अजहरुद्दीन, कपिल देव, नयन मोंगिया (विकेटकीपर), हरभजन सिंह, जवागल श्रीनाथ, अनिल कुंबले।

तब्लीगी जमात के प्रमुख सदस्य हैं इंजमाम-उल-हक, मिस्बाह, सईद अनवर और मुहम्मद यूसुफ

पाकिस्तानी क्रिकेट पर रहा है तब्लीगी जमात का वर्चस्व

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : आतंकवाद और फिक्सिंग से पाकिस्तान की विश्व क्रिकेट में छवि खराब हुई लेकिन एक ऐसी चीज भी है जिससे ज्यादातर लोग अनजान हैं और वह है तब्लीगी जमात। भारत में इस समय तब्लीगी जमात चर्चा में है लेकिन पाकिस्तानी क्रिकेट काफी समय से इस जमात के साए में है।

पाकिस्तानी मीडिया में इस पर कई लेख लिखे गए। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार, उनकी क्रिकेट टीम में तब्लीगी जमात के कायदे-कानून की एंट्री पूर्व पाकिस्तानी बल्लेबाज इंजमाम-उल-हक से हुई। इंजमाम ने अपनी कप्तानी के दौरान ही नहीं संन्यास के बाद चयनकर्ता के दौरान भी इस जमात में अपनी राष्ट्रीय टीम के क्रिकेटरों की भर्ती कराई। अब वर्तमान में पाकिस्तान क्रिकेट टीम के राष्ट्रीय चयनकर्ता मिस्बाह-उल-हक हैं और वह भी तब्लीगी जमात से जुड़े हुए हैं जबकि इंजमाम-उल-हक इस्लामिक मिशनरी संगठन तब्लीगी जमात के एक प्रमुख सदस्य हैं।

एक पाकिस्तानी अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, इंजमाम-उल-हक चयन समिति में आने के बाद 2017 टी-20 चैंपियंस ट्रॉफी के लिए जिस हिसाब से टीम का चयन कर रहे थे तो लगा रहा था कि वह क्रिकेट टीम का नहीं मस्जिद ले जाने के लिए जमात का चयन कर रहे हों। 2016 में उन्हें पाकिस्तान की राष्ट्रीय टीम का मुख्य चयनकर्ता नियुक्त किया गया था। इंग्लैंड में पिछले साल हुए विश्व कप के दौरान भी पाकिस्तान की चयन समिति के मुखिया इंजमाम थे और लाजमी था कि वह उन ही लोगों को टीम में लेंगे जो उनकी विचारधारा से मेल खाते हों। इंजमाम जब इंग्लैंड में कुर्ता-पैजामा पहनकर बढ़ी दाढ़ी के साथ टीम के अभ्यास सत्र में पहुंचे तो कई विदेशी पत्रकारों को लगा कि ये मौलाना यहां क्या कर रहा है। हालांकि बाद में पता चला कि वह तो इंजमाम हैं। इस विश्व कप में पाकिस्तानी टीम बुरी तरह हारी, खास तौर पर भारत से हार के बाद उसकी और उसके कप्तान सरफराज अहमद की बहुत आलोचना हुई। इसके बाद सरफराज ने अपने ट्विटर प्रोफाइल में खुद को हाफिज-ए-कुरान और क्रिकेटर लिखा है। हाफिज-ए-कुरान का मतलब है कि जो बिना देखे पूरी कुरान का उल्लेख कर सकता है।

इंजमाम क्रिकेट से संन्यास लेने के पहले ही जमात की ओर जाने लगे थे। उन्होंने दाढ़ी बढ़ाना शुरू कर दिया था। उनका अधिकांश समय इबादत, अल्लाह और जमातों में बीतता। उनकी देखा देखी सईद अनवर, मिस्बाह और मुहम्मद यूसुफ भी अपना अधिकांश समय जमात में बिताने लगे। उस समय में यह दौर भी था जो क्रिकेटर तब्लीगी जमात के लिए तैयार नहीं होते थे, उन्हें राष्ट्रीय टीम से जगह भी गंवानी पड़ती थी। यह इंजमाम की कप्तानी में था कि जमात की प्रार्थनाएं अनौपचारिक रूप से अनिवार्य हो गईं। जमात के लिए तैयार नहीं होने के कारण शोएब अख्तर, यूनिस खान और अब्दुल रच्जाक को राष्ट्रीय टीम में नियमित जगह बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा था। मिस्बाह एमबीए हैं। वहीं, यूसुफ पहले ईसाई थे और मुसलमान बनने के बाद ही वह जमातों की शान हो गए थे। जमातों में ये इस्लाम के फायदे बताते और लोगों को सच्चा मुसलमान बनने को कहते हैं। अनवर, मिस्बाह, युसूफ को जो समय क्रिकेट को देना चाहिए था वो समय इनका तब्लीग और जमात में बीतने लगा। 1990 से 2000 तक बुलंदी पर रहने वाली पाकिस्तान की टीम इसमें इस हद तक खो गई कि उसे यह तक नहीं दिखा कि वो क्रिकेट जिसने उन्हें पहचान दी थी वो उससे ही दूर जा रही है।

लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में मुख्य चयनकर्ता इंजमाम उल हक के साथ नमाज अदा करती पाकिस्तानी टीम ● फाइल फोटो, पीसीबी

एआइएफएफ और हॉकी इंडिया देंगे 25 लाख

नई दिल्ली, जेएनएन: अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआइएफएफ) ने बुधवार को कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में प्रधानमंत्री राहत कोष में 25 लाख रुपये देने की घोषणा की। वहीं, हॉकी इंडिया ने भी प्रधानमंत्री राहत कोष में 25 लाख रुपये का योगदान करने का फैसला किया है। एआइएफएफ ने कहा, 'संकट को देखते हुए हमने प्रधानमंत्री कोष में 25 लाख रुपये का योगदान देने का संकल्प लिया है।'

गांगुली ने चावल किए दान: बीसीसीआइ के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने ट्वीट किया, '25 साल के बाद बेलूर मठ आया हूं, जरूरतमंदों की मदद के लिए 2000 किलो चावल दे रहा हूं।' पूर्व भारतीय कप्तान सफेद टी-शर्ट और चेहरे पर काले रंग के मास्क में दिखे। गांगुली लॉकडाउन के कारण जरूरतमंद गरीबों को कुल 50 लाख रुपये का चावल दान करेंगे।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद पहली बार विंबलडन रद

लंदन, एएफपी : दुनिया भर के खेल कैलेंडर को तहस नहस करने वाली कोरोना वायरस महामारी के कारण बुधवार को विंबलडन को रद कर दिया गया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद पहली बार यह सबसे पुराना ग्रैंडस्लैम टेनिस टूर्नामेंट रद किया गया है।

ऑल इंग्लैंड क्लब ने आपात बैठक के बाद यह घोषणा की कि इस साल यह टूर्नामेंट नहीं होगा। विंबलडन क्लब के ग्रास कोर्ट पर 29 जून से 12 जुलाई के बीच खेला जाना था। आयोजकों ने कहा, 'बड़े खेद के साथ ऑल इंग्लैंड क्लब के बोर्ड और चैंपियनशिप की प्रबंध समिति ने बुधवार को फैसला किया है कि कोरोना वायरस महामारी के कारण विंबलडन 2020 नही खेला जा सकेगा।' अब अगला सत्र 28 जून से 11 जुलाई 2021 के बीच होगा।

यह टूर्नामेंट पहली बार 1877 में खेला गया और उसके बाद से हर साल होता आया है। सिर्फ 1915 से 1918 के बीच प्रथम विश्व युद्ध के दौरान और 1940 से 1945 के बीच दूसरे विश्व युद्ध के दौरान यह नहीं खेला गया। इसके साथ ही एटीपी और डब्ल्यूटीए ने विंबलडन की तैयारी के लिए होने वाले टूर्नामेंट भी रद कर दिए हैं। अब नया सत्र 13 जुलाई से पहले शुरू नहीं हो सकेगा। कोरोना वायरस के कारण टोक्यो ओलंपिक स्थगित हो चुके हैं। विंबलडन इस महामारी के कारण रद होने वाला पहला ग्रैंडस्लैम है। अमेरिकी ओपन 31 अगस्त से 13 सितंबर के बीच न्यूयॉर्क में खेला जाएगा।

नौ तैराकों को कोरोना, विश्व चैंपियन बोगलार्का भी शामिल

बुडापेस्ट, आइएएनएस : हंगरी की राष्ट्रीय टीम की नौ महिला तैराक कोरोना वायरस की चपेट में आ गईं हैं जिसमें ओलंपिक कांस्य पदक विजेता बोगलार्का कापस भी शामिल हैं। हंगरी के तैराकी संघ ने इसकी जानकारी दी। कापस के अलावा 2017 विश्व चैंपियनशिप में चार गुणा 100 मीटर फ्रीस्टाइल रिले में कांस्य जीतने वाली डोमिनिक कोजमा का टेस्ट भी पॉजिटिव आया है।

वहीं, कापस को अपनी ट्रेनिंग जारी रखने के लिए उनका दो टेस्ट निगेटिव आना जरूरी था। हालांकि उनका पहला टेस्ट निगेटिव आया जबकि दूसरे टेस्ट में वह पॉजिटिव पाई गईं। 26 साल की तैराक ने कहा, 'मैं इस समय घर में दो सप्ताह के लिए क्वारंटाइन हूं। मैं अपार्टमेंट नहीं छोड़ सकती। फिलहाल मैं किसी भी तरह का लक्षण नहीं महसूस कर रही हूं। मुझे अभी अच्छा महसूस लग रहा है।'

ओलंपिक पदक विजेता ने कहा कि जब उन्हें इसके बारे में पता चला तो वह रोने लगी थीं। हंगरी में कोरोना वायरस महामारी के अब तक 492 से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं।

बोगलार्का कापस, फाइल फोटो, ट्विटर

बेलारूस में स्टेडियम नहीं जाएंगे प्रशंसक

मिंस्क, एपी : कोविड-19 महामारी के दुनियाभर में फैलने के बाद भी स्टेडियम में प्रशंसकों के साथ पेशेवर फुटबॉल प्रतियोगिता को जारी रखने वाले इकलौते यूरोपीय देश बेलारूस के दो क्लबों के प्रशंसकों ने इस महामारी के कारण स्टेडियम नहीं जाने का फैसला किया है। बेलारूस की प्रीमियर लीग की टीम नेमन गरोडनो के प्रशंसक समूह ने कहा कि उनके सदस्य स्टेडियम में मैच देखना बंद कर रहे हैं और वे दूसरे क्लबों के प्रशंसकों से भी यही अपील करना चाहेंगे। उन्होंने देश में फुटबॉल का संचालन करने वाले महासंघ से इस लीग के मैचों को रोकने या टालने की हिम्मत दिखाने की मांग की, जैसा की यूरोप के बाकी देशों में हुआ है। एक अन्य क्लब शाखत्योर सोलिगोर्सक के प्रशंसकों ने भी कहा कि जब तब इस महामारी का कोई इलाज नहीं निकलता तब तक वे स्टेडियम नहीं जाएंगे।

एक ही समय पर दो टीमें उतार सकता है इंग्लैंड : मोर्गन

लंदन, एएफपी : विश्व कप विजेता कप्तान इयोन मोर्गन ने कहा है कि कोरोना महामारी के कारण अगर घरेलू अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट सत्र छोटा होता है तो इंग्लैंड एक ही समय पर दो अलग-अलग जगहों पर दो टीमें उतार सकता है। जो रूट की कप्तानी में इंग्लैंड की टेस्ट टीम वेस्टइंडीज या पाकिस्तान का सामना कर सकती है जिन्हें तीन मैचों की सीरीज खेलनी है। वहीं, मोर्गन की कप्तानी में टीम जुलाई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 50 ओवरों की या टी-20 सीरीज खेल सकती है। मोर्गन ने कहा, 'इस असाधारण समय में हर विकल्प पर विचार करना होगा। ऐसा समय हमने कभी नहीं देखा है। आर्थिक रूप से भी खेल के लिए यह कठिन समय है। एक खिलाड़ी के तौर पर हम अपनी ओर से पूरा प्रयास करेंगे। अभी हम खेलने के बारे में सोच ही नहीं रहे हैं जब तक कि हालात सामान्य नहीं हो जाते।' इंग्लैंड में सभी घरेलू क्रिकेट 28 मई तक स्थगित हो चुका है। वेस्टइंडीज दौरा चार जून से शुरू होना है।

कोरोना का असर

- एनबीए की टीम लॉस एंजिलिस लेकर्स ने कहा कि 14 दिनों के क्वारंटाइन में रहने के बाद उसके किसी भी खिलाड़ी में कोरोना वायरस के लक्षण नहीं हैं।
- फ्रांस फुटबॉल क्लब मार्सेली के पूर्व अध्यक्ष पेप डियोफ की मौत हो गई। डियोफ 68 साल के थे और 2005 से 2009 तक क्लब के अध्यक्ष रहे थे।
- इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने 61 मिलियन पाउंड (578 करोड़ रुपये) वित्तीय पैकेज की घोषणा की।
- क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने चार सूत्रीस रणनीति तैयार की है। पहली हर किसी की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। दूसरा संदेश पहुंचाने के लिए अपने स्टार क्रिकेटरों का उपयोग करना। तीसरा अपने हितधारकों के संपर्क में रहना है और चौथा कोरोना से पड़ने वाले प्रभाव को देखना है।
- जुलाई में ब्रिटिश ग्रांप्रि कराने का फैसला अप्रैल के आखिर में लिया जाएगा। इस सत्र की पहली आठ फॉर्मूला वन रेस रद कर दी गई थी।
- इंग्लैंड के जोस बटलर पिछले साल विश्व कप फाइनल में पहनी अपनी शर्ट को नीलाम करेंगे। बटलर इससे मिली रकम को कोरोना का इलाज कर रहे अस्पताल में देंगे।
- क्रिकेट हांगकांग ने बुधवार को अगले आदेश तक के लिए सभी तरह के क्रिकेट पर रोक लगा दी।
- अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी पूर्व डेविस कप कप्तान पैट्रिक मैकनरो का टेस्ट पॉजिटिव आया है।

जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्रियों को अब नहीं मिलेंगी सरकारी सुविधाएं

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्रियों का सरकारी सुविधाएं नहीं मिलेंगी। उन्हें सरकारी खर्च पर आवास, टेलीफोन, बिजली, पेट्रोल, वाहन चालक व स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिलेंगी। केंद्र ने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्रियों के लिए इन सुविधाओं को सुनिश्चित करने वाले संवैधानिक प्रावधानों को समाप्त कर दिया है। जम्मू- कश्मीर में इस समय चार पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती और गुलाम नबी आजाद हैं।

केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर विधानमंडल पेंशन अधिनियम 1984 की धारा तीन की उपधारा तीन को समाप्त कर दिया है। इसी धारा के तहत राज्य के पूर्व मुख्यमंत्रियों के लिए विभिन्न सुविधाओं और भत्तों को सुनिश्चित किया गया था। जम्मू-कश्मीर कानून आयोग ने ही कुछ समय पहले केंद्र को राज्य के संदर्भ में लागू किए जाने वाले नए कानूनों, पुराने कानूनों में आवश्यक संशोधन करने संबंधी रिपोर्ट भेजी थी। इसी का संज्ञान लेते हुए केंद्र ने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्रियों को दी जाने वाली सभी सुविधाओं को वापस ले लिया है। इस कानून को जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (राज्य कानूनों का अनुकूलन) आदेश-2020 के तहत समाप्त किया गया है। जम्मू-कश्मीर कानून अयोग ने इस कानून को समाप्त करने की सिफारिश करते हुए कहा था कि यह प्रावधान संवैधानिक समानता के अधिकार का उल्लंघन करता है और यह किसी भी योजना या कानून के अनुरूप नहीं है। यह पूरी तरह मनमाना है। इसे समाप्त किया जाना है।

इस प्रावधान के तहत पूर्व मुख्यमंत्रियों को सरकारी आवासीय सुविधा, हर साल आवासीय परिसर की साज सज्जा व सुविधाओं के लिए 35 हजार रुपये, हर साल 48 हजार रुपये तक की निशुल्क टेलीफोन सेवा, हर माह 1500 रुपये तक निशुल्क बिजली, कार, पेट्रोल, स्वास्थ्य सेवाएं व चालक आदि की सुविधा दी जाती है। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्रियों को एक निजी सहायक, एक विशेष सहायक और दो चपरासी भी सरकारी खर्च पर मिलते थे।

सुप्रीम कोर्ट ने क्रिश्चियन मिशेल को दिल्ली हाई कोर्ट जाने को कहा

नई दिल्ली, प्रेट्र: सुप्रीम कोर्ट ने अगस्ता वेस्टलैंड घोटाले में तिहाड़ में बंद आरोपित क्रिश्चियन मिशेल को अंतरिम जमानत के लिए दिल्ली हाई कोर्ट जाने का सुझाव दिया। मिशेल ने जेल में कोरोना वायरस के खतरे का हवाला देते हुए कोर्ट से अंतरिम जमानत देने का अनुरोध किया था।

मिशेल ने अपनी इस याचिका में कोर्ट के उस आदेश का भी सहारा लिया था जिसमें इस महामारी के मद्देनजर जेलों में कैदियों की भीड़ कम करने के लिए विचाराधीन कैदियों को जमानत देने पर विचार करने का निर्देश दिया गया था। जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एमआर शाह की पीठ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से मिशेल की याचिका पर सुनवाई की और आरोपित से कहा कि वह राहत के लिए पहले हाई कोर्ट में आवेदन करे।

उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा में मुठभेड़, जवानों ने छह आतंकियों को घेरा

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा में बुधवार को खराब मौसम की आड़ में एलओसी पर घुसपैठ कर रहे छह आतंकियों के एक दल के मंसूबे को सेना के जवानों ने नाकाम बना दिया। जवानों ने पूरे इलाके को चारों तरफ से घेरते हुए घुसपैठियों के भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए हैं।

उत्तरी कश्मीर के अग्रिम इलाकों में मंगलवार शाम से ही मौसम का मिजाज बिगड़ा हुआ है। इन इलाकों में रुक-रुक कर हो रही बारिश के साथ धुंध भी है। इसकी आड़ में स्वचालित हथियारों से लैस आतंकियों के एक दल ने कुपवाड़ा जिले में एलओसी के साथ सटे जुमगुंड इलाके में घुसपैठ की। ये छह थे और सभी रेशवारी

एलओसी पर घुसपैठ की फिराक में हैं आतंकी, जवानों ने भागने के सभी रास्ते किए बंद

जुरहामा जंगल में गुगलडार तीन बहक तक पहुंच गए थे। दोपहर करीब एक बजे जवानों ने इन घुसपैठियों को घेर लिया। जवानों द्वारा ललकारे जाने पर आतंकियों ने वापस भागने का प्रयास किया। जवानों को अपने पीछे आते देख आतंकियों ने गोली चलाई। जवानों की जवाबी कार्रवाई के बाद मुठभेड़ शुरू हो गई। अधिकारियों ने बताया कि दोपहर तीन बजे के करीब पहली बार आतंकियों की तरफ से गोलियों की गोलीबारी बंद हुई। इस पर जवान जैसे ही आगे बढ़े तो उन्होंने दोबारा फायरिंग शुरू कर दी। हालांकि, शाम पांच बजे के बाद से दोनों तरफ से गोलीबारी बंद है। जिस इलाके में यह मुठभेड़ जारी है, वहां मौसम खराब है। शाम को बारिश के साथ बर्फ भी गिरने लगी थी। अंधेरा हो गया था। इसलिए अभियान को स्थगित किया गया है, लेकिन आतंकियों को चारों तरफ से घेर लिया गया है।

सेना की तीन बटालियन आतंकियों को घेरे हैं : अधिकारी ने बताया कि आवूरा, कुमकाड़ी, जुरहामा, सफावाली, हयहामा में भी सुरक्षाबलों को अलर्ट कर दिया गया है। इस पूरे इलाके में सेना की 41 आरआर व 57 आरआर के अलावा 160टीए और एसओजी कुपवाड़ा के जवान भी हिस्सा ले रहे हैं। मुठभेड़ स्थल के चारों तरफ के इलाके को खंगालते हुए घेराबंदी कड़ी की जा रही है।

दैनिक जागरण

सबरंग

साहित्य के...

नई दिल्ली, गुरुवार, 2 अप्रैल, 2020

सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com

https://www.facebook.com/jagransabrang/

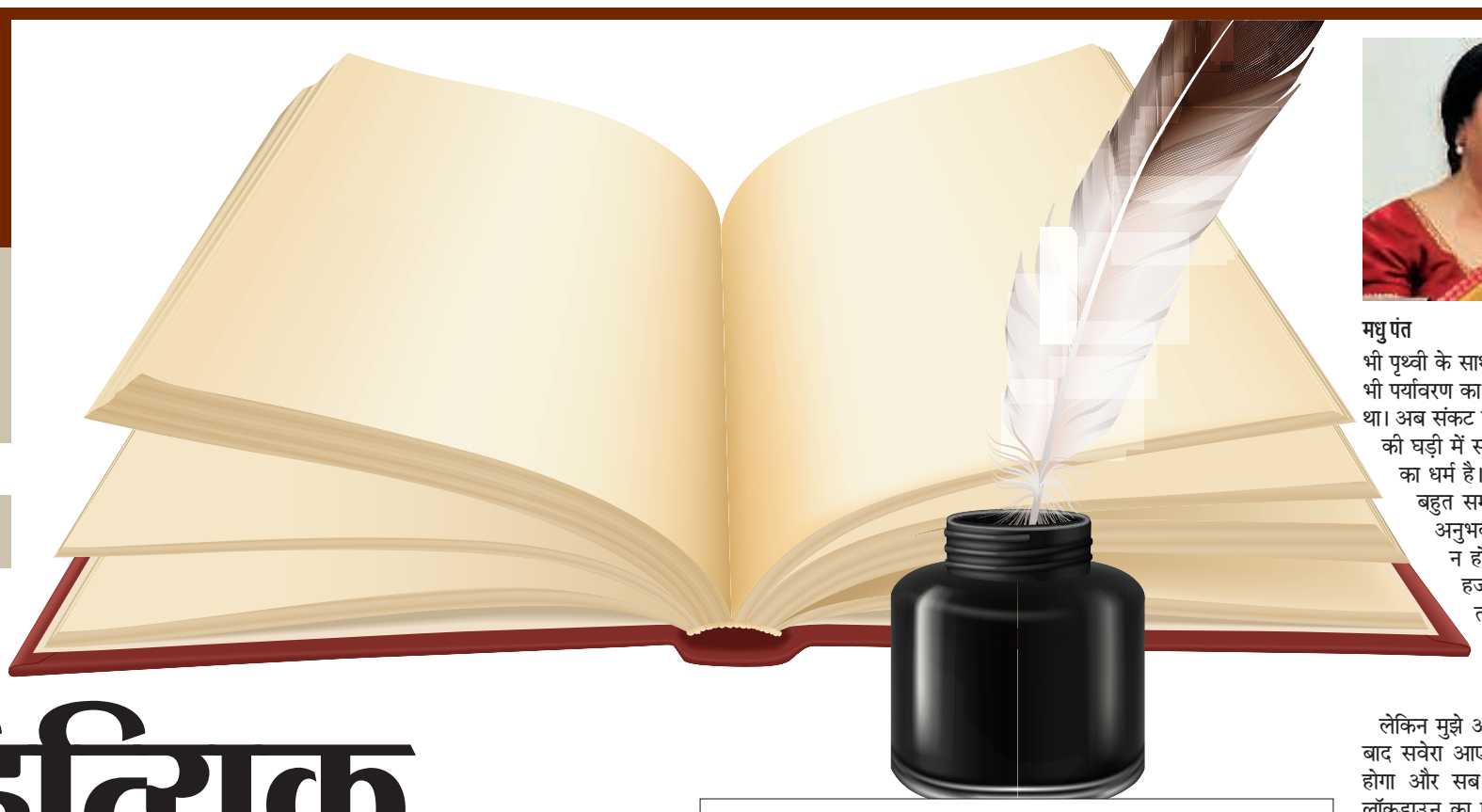

मधु पंत

कोरोना को हराना है

साहित्यिक अवदान का वक्त

एकांत है, मेज है, कलम है...मन में उमड़ घुमड़ रहे बादलों से विचार हैं। जो विचलित करते हैं, हालात को देखकर व्यथित करते हैं। बार-बार उठते हैं परिवार के साथ हंसी-ठिठोली करते हैं। फिर पढ़ते हैं, फिर गुनते हैं आजकल लॉकडाउन में वक्त को यूं ही संजोते हैं। वैसे भी कितना कुछ है पढ़ने को, कितना कुछ है सोचने को जो कब से इंतजार कर रहा था आपका...रचना का कलेवर रचनाकार के मानसिक संवेगों का सहचर...आखिर कैसे हो रहा है यह सब...साहित्यिक बिरादरी की रचनाधर्मिता हर दिन किस तरह बढ़ रही है रूबरू करा रही हैं मनु त्यागी, रितु राणा :

डॉ. भगवती शरण मिश्र

इसे बंदिश नहीं एक अवसर के रूप में लेना चाहिए, मैं भी इस मौके को अवसर की तरह ले रहा हूं। मैं तो घर पर बैठकर वैसे भी लिखता ही रहता हूं और अब तो मुझे एक बहुत अच्छा मौका मिल गया है जिसका मैं लाभ उठा रहा हूं। यह कहना है डॉ. भगवती शरण मिश्र का। जो आजकल घर बैठकर आराम से वृषभानुसुता नाम से उपन्यास लिख रहे हैं। बताते हैं कि यह पूरा उपन्यास कृष्ण भगवान की राधा पर है। मैं उपन्यास लिखते-लिखते इतना मग्न हो जाता हूं कि अहसास ही नहीं होता कि बाहर कोरोना का संकट भी है और मैं लॉकडाउन के कारण घर में बंद हूं। इसे लिखते हुए मेरा मन भी लग जाता है और ईश्वर से जुड़ने का मौका भी मिल जाता है। इस अवसर का सभी लाभ उठाएं अपने जरूरी काम निपटाएं। बच्चे इन दिनों पढ़ाई के साथ रचनात्मक कार्य कर सकते हैं। लोग तनाव न लें और दुनियाभर की बातों को भूल जाएं। इस दौरान लोगों को एकाग्र होकर आत्मचिंतन करना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूं कि जल्द ही हम सभी लोग कोरोना को हराकर इस संकट की घड़ी से बाहर आ जाएंगे।

एकांतवास रचनाधर्मिता की प्रक्रिया का हिस्सा है : यह लेखक का एकांतवास नहीं हो सकता। ऐसे एकांतवास की परिकल्पना किसी लेखक ने नहीं की होगी। यह अज्ञेय का वह एकांतवास नहीं है जहां एकांत क्षणों में मानव मात्र को आमंत्रित करने का भाव था। लेखक का एकांतवास उसकी रचनाधर्मिता की प्रक्रिया का हिस्सा होता है जिसमें एक लेखक चिंतन-मनन की गहराइयों में उतरकर अपने लेखन की अन्तर्वस्तु को खंगालता और संवारता है। लेखिका डॉ कुमुद शर्मा कहती हैं अपनी इच्छा से, अपने मन की भीतरी विवशता से एकांतवास को चुनता है। लॉकडाउन एक आरोपित स्थिति है। लॉकडाउन से उपलब्ध एकांतवास में आशंकाएं हैं, बेचैनी है, व्यग्रता है। वैश्विक आपदा के इस भयावह परिदृश्य को हम सूनी आंखों से देख रहें हैं। इसने कुछ याद भी दिलाया है। परिवारों के टूटने और दूरियां बढ़ने से कुछ समय पहले तक लोग अपने में सिमटते जा रहे थे। उपभोग की प्रबल आकांक्षाओं और महत्वाकांक्षाओं के पीछे दौड़ लगाती जिंदगी में बहुत कुछ पीछे छूट रहा था। अपनों के पास अपनों के लिए वक्त नहीं था। भीड़ थी, शोर था, उत्सव थे फिर भी लोग अकेले थे। हमारे संबंध यांत्रिक होते जा रहे थे। लेकिन कोरोना से आए मानव संकट ने व्यक्तियों की आपसी सहभागिता और सामूहिक सुरक्षा के भाव को जगा दिया । सर्वसाधारण से जुड़ने के भाव को , मानवता के भाव को जगा दिया। डॉक्टर, मीडियाकर्मी, स्वयं सेवी संस्थाएं और अपने व्यक्तिगत प्रयासों से लोग जिस तरह इस संकट की घड़ी में संकल्प, संयम और एकजुटता का प्रदर्शन कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। करुणा एवं उदारता के उद्गार भारत की मिट्टी में है जो इसकी सदियों की सांस्कृतिक परतों में समाई हुई है। कोरोना के इस संकट ने यह सोचने पर विवश किया है कि मनुष्य की शक्ति कितनी सीमित है ! हम जिस अंधी दौड़ के साथ आगे बढ़ रहे हैं उसके पुन आकलन का भी समय है। जो हमने अब तक जिया, और जो अब हम जीने वाले हैं, उसके मंथन का भी समय है। निश्चित तौर पर अनेक लोगों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलेगा। पिछले सप्ताह दिल्ली से दूसरे राज्यों के लिए, अपने गांवों की ओर मीलों दूर बगैर जाने सोचे समझे कंधों पर बैग लादकर, परिवार का हाथ थामे निकले लोगों को देखकर मन में यह ख्याल भी उपजा कि ये हमारी कितनी अमूल्य पूंजी हैं। और हमें कितना कुछ करना है इस देश के लिए। जो इस देश के अन्नदाता और निर्माता हैं उनके लिए सदियों से चले आ रहे हमारे समाज ने क्या किया? यह देख कर मन बहुत व्यथित हुआ। इस यथार्थ को हमने पढ़ा था लेकिन देखा नहीं था। उनकी पीड़ा, उनके दर्द को हमने महसूस किया। समाज के प्रति कुछ करने की उद्विग्नता पैदा हो रही है। क्या करूं, कैसे करूं!

डॉ कुमुद शर्मा

बहुत कुछ है पढ़ने लिखने को : लॉकडाउन एक तरीके से एकांतवास है, इस संकट से बचाव के लिए जरूरी है। इस समय लोग घबराएं नहीं बल्कि घर पर बैठकर कुछ पढ़-लिखकर अपना समय व्यतीत करें। प्रोफेसर मैनेजर पांडेय बताते हैं कि मैं भी आजकल खूब पढ़ रहा हूं। अभी मैंने कथादेश का विशेषांक आया था स्त्रियों के लेखन के बारे में, दो दिन लगाकर उसे पढ़ा और वह बहुत अच्छा था। इसके अलावा मैंने रमेश चंद्र के दो लेख पढ़े और दूसरा अनुवाद कन्नड़ की महान कवयित्रि अक्का महादेवी की कविताएं और उनके लेख पढ़ रहा हूं। इसके अलावा विभिन्न पत्रिकाएं पढ़ रहा हूं इस समय तो समय व्यतीत करने के लिए जो मिल जाए वही पढ़ लेता हूं। किताब और एकांत कितना... सुकून से समय गुजर रहा है। यह वक्त परिवार के सदस्यों के साथ प्रेमभाव से रहना भी सिखा रहा है।

मैनेजर पांडेय

अंधेरे के बाद सवेरा आएगा : बाल साहित्यकार डॉ. मधु पंत कहती हैं कि कोरोना की जंग आसान, घर में बैठकर ही निकलेगा समाधान...यही सोचकर घर पर समय व्यतीत कर रही हूं। दरअसल यह बहुत संकट की परिस्थिति है कोरोना वो शत्रु है जिसे हम जानते ही नहीं हैं, यह कहां से वार कर रहा है, किस तरह से वार कर रहा है किसी को नहीं पता। लेकिन जब हम सभी कारणों के बारे में सोचते हैं तो कहीं न कहीं लगता है कि कुछ हमने भी पृथ्वी के साथ अन्याय किए थे। हमने भी पर्यावरण का बहुत ज्यादा दोहन किया था। अब संकट तो आ गया है और संकट की घड़ी में संयम न खोना एक मानव का धर्म है। हम भी परिवार के साथ बहुत समय बाद सुखद पलों का अनुभव कर रहे हैं। विचलित न हों लॉकडाउन के बावजूद हजारों की संख्या में एक तबके के लोग किस तरह पैदल ही चले जा रहे थे। उस स्थिति ने मुझे अंदर से झकझोर दिया था।

लेकिन मुझे आशा है कि इस अंधेरे के बाद सवेरा आएगा। दोबारा से उजियारा होगा और सब चीजें सही होंगी। इस लॉकडाउन का एक सकारात्मक पक्ष भी है कि इस समय सभी लोग घर पर रहकर एक-दूसरे का सहारा बन रहे हैं, एक-दूसरे को समझ रहे हैं। जो लोग दूर हैं वह फोन व वीडियो कॉल के माध्यम से एक-दूसरे से बात कर रहे हैं। मैं आजकल अपनों से बातचीत करके समय व्यतीत कर रही हूं। मैंने यह भी देखा कि आजकल दिल्ली की हवा बदल गई है। प्रदूषण कम हो गया है तो इससे हमें एक सबक भी लेना चाहिए।

हर चुनौती एक अवसर भी प्रदान करती है : हर चुनौती का एक सकारात्मक पहलू होता है वे लोग जो पहले घर के सहायकों पर निर्भर रहते थे वही लोग अब घरेलू सहायकों को 'पेड लीव' देकर अपना घरेलू काम स्वयं कर रहे हैं। यह एक बहुत अच्छा संकेत है। जिससे न सिर्फ काम हो रहा है बल्कि समय भी व्यतीत हो रहा है। डॉ. परमानंद पांचाल कहते हैं कि 'वर्क फ्रॉम होम' की सुविधा से न केवल दफ्तर का कार्य हो रहा है बल्कि कर्मचारियों को भी इससे लाभ हो रहा है। वे अपना समय अब काम के साथ-साथ परिवार के साथ भी व्यतीत कर रहे हैं। पुराने मशहूर धारावाहिक जैसे रामायण व महाभारत आदि का प्रसारण कर दूरदर्शन भी लोगों को घर पर रहने में अपना योगदान दे रहा है। और बच्चों के लिए छुट्टियां हमेशा ही एक अवसर होती हैं। पढ़ाई के साथ टीवी, इंडोर गेम के अलावा हम जैसे दादा-दादी के साथ भी वक्त बिता रहे हैं, अच्छी बाते सीख रहे हैं।

डॉ. परमानंद पांचाल

सुविधा संपन्न लॉकडाउन

चित्रा मुद्गल

आंखें आजकल काले चश्मे के भीतर हैं, और बाहर सावधानी के साथ सन्नाटे भरा माहौल है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में मेरा जो अनुभव जुड़ता है वो युद्ध की स्थितियों को ज्यादा अभिव्यक्त करता है। वरिष्ठ साहित्यकार चित्रा मुद्गल कहती हैं कि मैंने 1962 का चीन युद्ध देखा है। पाकिस्तान के साथ युद्ध देखा है। तब भी ऐसे संशयी...आशंकित माहौल था। सावधानी बरतनी है। घरों में सब करीब तो होते थे लेकिन डरे सहमे होते थे। अभी भी कुछ ऐसा लगता है। कैसे ऑर्डर मिलते रहते थे, घर में रहकर भी उन निर्देशों का पालन करते रहते थे। अभी भी लोगों को उसी तरह एक अदृश्य वायरस से निपटने के लिए दूरियों के साथ एकजुट रहना है। आजकल अपनी पोती को यही सब बता रही हूं। अभी तो हम अपनी सुरक्षा के लिए...लॉकडाउन में हैं बहुत सुविधा संपन्न भी हैं। पहले इतनी सुविधाएं भी नहीं थीं। देश सतर्कता बरत रहा है, हर पक्ष को समझ रहा है। हालांकि हमारी गलतियों से उपजी आपदा ही तो है ये। हमने आसमां को खंगाल डाला, धरती को खोद डाला...ऐसा एक न एक दिन होना ही था। यह तो दायित्व और हकीकत का पहलू। अब बताती हूं कि हम आजकल घर पर किस तरह से वक्त बिता रहे हैं। हमने परिवार के साथ तय किया है लॉकडाउन के दौरान ज्यादा से ज्यादा दिन खिचड़ी बनाकर खाएंगे। आजकल खिचड़ी भी स्वादिष्ट लग रही है, क्योंकि परिवार एक साथ बैठकर खा रहा है। कल का वाकया बताती हूं मैंने कल पोती को कहा चलो भरता बनाकर खिलाती हूं, अब पहले तो उसे भरते का नाम ही अजीब लगा, स्वाद को लेकर संकोच करने लगी। लेकिन जब उसने भरता खाया तो उसे बहुत स्वादिष्ट लगा। हमारे लिए यह बहुत अच्छा वक्त है भविष्य की पीढ़ी को संचित करने का। उसकी रक्षा करने का। उसे स्वस्थ रखने का, वो स्वस्थ रहेगी तो देश स्वस्थ रहेगा।

फेसबुक लाइव पर प्रगाढ़ हो रहे पाठक-लेखक के रिश्ते

कोरोना को हराना है

किताबें-कातिब का अटूट रिश्ता...लाख विपदाओं में भी नहीं छूटता। संकट की घड़ी में तो किताबें और करीब आ जाती हैं। कोरोना संक्रमण के खतरे को थामने के लिए लॉकडाउन हुआ, इसमें किताबें कितनी अच्छी दोस्त बन गईं। लेखक रचनात्मक लेखन भी कर रहे हैं लेकिन फिलवक्त किताबों का प्रकाशन थमा हुआ है। जिस वजह से पाठकों तक नई किताबें नहीं पहुंच रही हैं। हालांकि किताबें कभी पुरानी नहीं होती। जितनी बार पढ़ो उतनी बार ही नई लगती हैं। फिर भी ऐसे माहौल में पाठक और लेखक के रिश्ते को और प्रगाढ़ बनाए रखने के भी सफल प्रयास हो रहे हैं। जिसकी शुरुआत दिल्ली के कई प्रकाशकों द्वारा की गई है। इसके लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म एक ऐसी जगह थी जिसका दायरा भी बड़ा था और जिससे हिंदी का पाठक वर्ग जुड़ा भी था। सभी हिंदी के बड़े प्रकाशक सोशल मीडिया पर भी सक्रिय हैं और उन्होंने सोशल मीडिया का सदउपयोग लेखकों और पाठकों के बीच संवाद बनाने में किया। हलांकि इसमें एक चुनौती भी थी। हिंदी के वरिष्ठ लेखकों में से अब भी कई ऐसे हैं जो फेसबुक पर तो हैं पर उसके तकनीकी पक्ष से बहुत ज्यादा परिचित नहीं हैं। उनको तकनीक समझाना और लाइव करवाना एक बड़ी चुनौती थी। कहते हैं न कि आवश्यकता सब कुछ करा लेती है। लिहाजा थोड़ी मेहनत के बाद हिंदी के उन वरिष्ठ लेखकों ने भी फेसबुक पर लाइव करना सीख लिया, जो अब तक इसका उपयोग नहीं जानते थे। वाणी प्रकाशन ने ऑनलाइन साहित्य महोत्सव की शुरुआत की, जिसमें देश-विदेश के लेखक भाग ले रहे हैं लेकिन बाद में इसका नाम बदलकर समय और समाज ऑनलाइन गोष्ठी कर दिया गया। अदिति के मुताबिक ये नाम इस वजह से बदला गया क्योंकि उन्होंने जब दिल्ली से बाहर जाने वालों की भीड़ और उनका दर्द देखा तो उनको लगा कि ऐसे माहौल में किसी तरह का महोत्सव उचित नहीं है, लिहाजा उसको गोष्ठी का नाम दे दिया गया।

कोरोना के रहस्य पर नजर

महेश भारद्वाज
(सामयिक प्रकाशक, मैनेजिंग डायरेक्टर)

दिल्ली को हिंदी साहित्य का केंद्र माना जाता है। हिंदी प्रकाशन का केंद्र भी दिल्ली ही माना जाता है। सबसे अधिक प्रकाशन संस्थान दिल्ली में ही हैं। कोरोना के कारण जो लॉकडाउन चल रहा है उसको भी हिंदी के प्रकाशक एक अवसर की तरह देखते हुए योजना बना रहे हैं। हिंदी के प्रमुख प्रकाशक सामयिक प्रकाशन के मैनेजिंग डायरेक्टर महेश भारद्वाज ने बताया कि अपने पूरे जीवनकाल में कोरोना जैसी बीमारी को उन्होंने पहली बार देखा है। जब भी समाज में कोई नई चीज आती है, कोई नई घटना घटित होती है तो एक सजग प्रकाशक होने के नाते हमारी नजर उसपर रहती है। कोरोना से बचाव और उपचार पर अगर कोई शोध सामने आता है तो हम उसको छापना चाहेंगे। एक प्रकाशक के तौर पर हम ऐसे किसी भी प्रस्ताव पर विचार करते हैं जो समाज के हित में हो. कोरोना वायरस जिस तरह से पूरी दुनिया में तबाही फैला रहा है और जिस तरह से उसने पूरी दुनिया को ठप कर दिया उसको लेकर पुस्तक छापने की इच्छा है और हम इस विकल्प पर भी विचार कर रहे हैं। इसी तरह से एक और प्रकाशक हैं कांति शर्मा जो शिल्पायन बुक्स के नाम से अपना प्रकाशन गृह चलाते हैं। उन्होंने भी बताया कि कोरोना वायरस के विश्वव्यापी असर पर अगर कोई पुस्तक मेरे सामने आती है तो इसको छापना चाहूंगा। अगर इस तरह की कोई किताब आती है तो वो प्रकाशन जगत में मील का पत्थर साबित होगी। प्रकाशक भी समाज हित में काम करते हैं और मुझे लगता है कि इस तरह की किताब जरूर छापनी चाहिए। मुझे यह मालूम है कि इस तरह की किताब तैयार करवाने में दिक्कत हो सकती है लेकिन कठिनाइयों के बावजूद अगर इस विषय पर कोई किताब छाप सकूं तो अच्छा लगेगा।

अदिति माहेश्वरी

ऑनलाइन साहित्य संवाद की पहल करने वाली वाणी प्रकाशन की युवा निदेशक अदिति माहेश्वरी कहती हैं कि लॉकडाउन शुरू होने के बाद मेरे पास लेखकों के फोन आते थे तो कई बार एक निराशा का भाव भी महसूस करती थी। मैंने महसूस किया कि एक सवांदहीनता की स्थिति बन रही है और मुझे लगा कि कहीं इससे निराशा न व्याप्त हो जाए। फिर मैंने ऑनलाइन साहित्य महोत्सव शुरू करने का फैसला लिया। कई लेखकों को लॉग-इन करके लाइव करना सिखाना पड़ा, उनको वाणी प्रकाशन के पेज से लाइव किया। इसके बहुत अच्छे नतीजे रहे। लाइव के वक्त हजारों की संख्या में पाठक जुड़े। अब तो रास्ता खुल गया था और हिंदी के कई प्रकाशकों ने भी लाइव करना शुरू कर दिया।

राजपाल एंड संस की कर्ताधर्ता मीरा जौहरी कहती हैं कि 'लेखकों को फेसबुक पर लाइव करवाने का अनुभव बेहद अच्छा है। इसका एक फायदा यह भी हुआ है कि आप अगर लाइव के दौरान अपने पसंदीदा लेखक की बात नहीं सुन सकते हैं तो आप बाद में भी उसको देख सकते हैं। लेखक का वीडियो और उनकी बातें हमारे फेसबुक पेज पर लगी ही रहती हैं, पाठकों को जब इच्छा होती है तो वो अपनी सुविधानुसार इसके देख सकते हैं। हां, लाइव में एक फायदा ये होता है कि कि कोई पाठक अगर चाहे तो अपने लेखक से सवाल भी पूछ सकता है, उनकी रचनाओं के बारे में बात भी कर सकता है। यह एक बिल्कुल नई शुरुआत है और इसने संवाद को लेकर एक नई उम्मीद जगाई है।

मीरा जौहरी

लॉकडाउन के इस दौर में जब सब लोग अपने घरों में ही रह रहे हैं और अभी लगभग एक पखवाड़ा तक ये दौर चलेगा उसमें दिल्ली के प्रकाशकों की इस पहल का असर हिंदी साहित्य पर असर डालने वाला है। जैसे-जैसे इंटरनेट का दायरा बढ़ेगा वैसे-वैसे ये संवाद और भी बढ़ेगा।

पश्चिम के देशों में इस प्रवृत्ति के कई लाभ देखने को मिले हैं। कुछ सालों पहले ई एल जेम्स की 'फिफ्टी शेड्स ट्राएलॉजी' प्रकाशित हुई थी जिसने पूरी दुनिया में धूम मचा दी थी। इस उपन्यास का दुनिया की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ। इसपर फिल्म भी बनी। ई एल जेम्स ने इस उपन्यास को लिखने के पहले छोटे-छोटे अंश लिखकर इंटरनेट पर डाले थे और पाठकों की प्रतिक्रिया मांगी थी। पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर वो उस अंश को आगे बढ़ाती थी। उन्होंने एक इंटरव्यू में स्वीकार किया था इस उपक्रम से उसको फिफ्टी शेड्स लिखने में काफी मदद मिली थी। कहने का मतलब ये है कि ऑनलाइन इस तरह के संवाद से पाठकों की रुचि जानने में लेखकों को मदद मिल सकती है। अगर पाठकों के फीडबैक को लेखक अपनी रचनाओं में शामिल करते हैं तो हो सकता है कि पाठक उसको अधिक पसंद करें और लेखक की लोकप्रियता बढ़े।

-अनंत विजय

दिल्ली में जगह-जगह मिलते हैं अज्ञेय की यादों के निशां

सच्चिदानन्द वात्स्यायन अज्ञेय, 4 अप्रैल, पुण्यतिथि विशेष

दिल्ली जेल में ही लिखी थी शेखर एक जीवनी

सच्चिदानन्द वात्स्यायन 18 वर्ष की आयु में लाहौर में क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की टोली से जुड़े। भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना में भाग लेने से सक्रिय जीवन शुरू हुआ था। उस योजना की विफलता के बाद आजाद के निर्देश पर 1930 में दिल्ली में बम बनाने की एक गुप्त फैक्ट्री स्थापित की, जिस का ऊपरी नाम सौंदर्य-प्रसाधन बनाने का 'हिमालयन टॉयलेट्स' था। यह दिल्ली सदर थाने के ठीक सामने थी। उसी वर्ष गिरफ्तारी बाद उन्हें दिल्ली जेल में रखा गया, जो दिल्ली गेट के पास थी। वहीं वे लगभग चार वर्ष रहे, और मुकदमा चला। दिल्ली जेल में ही, जब मृत्युदंड संभावित था, उन्होंने 'शेखर एक जीवनी' लिखी। 1933 में वे मुलतान जेल भेज दिए गए, और बाद में रिहा हुए। इसी बीच जैनेन्द्र कुमार और प्रेमचंद ने मिलकर उन्हें 'अज्ञेय' लेखकीय नाम दिया, जब वात्स्यायन जी की एक रचना प्रकाशन के लिए अनाम आई थीं।

वर्ष 1942 में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय आकाशवाणी दिल्ली में थे। सिविल लाइंस के मेडंस होटल के पास श्रीराम रोड पर निवास था। वहां से प्रायः पैदल आकाशवाणी जाते थे। उसी वर्ष दिल्ली में 'अखिल भारतीय एंटी-फासिस्ट कान्फ्रेंस' आयोजित की। फिर सेना में शामिल होकर तीन वर्ष तक बर्मा मोर्चे पर रहे।

पुनः दिल्ली में वात्स्यायन जी 1950-58 के बीच अंग्रेजी त्रैमासिक 'वाक' का संपादन करते मिलते हैं। इसी बीच कपिला मलिक से निकटता हुई। इसी अवधि से जुड़े अज्ञेय के पत्र फैज बाजार रोड, फिरोजशाह रोड, रूप नगर, अंसारी रोड, सुंदरनगर के पतों से मिलते हैं। 1958-64 तक मोती बाग और सत्य मार्ग पर उनका निवास रहा, संभवतः कपिला जी के साथ। उन से 1956 में विवाह हुआ था, 14 वर्ष साथ रहे, पर कपिला वात्स्यायन से विवाह-विच्छेद नहीं किया।

1965 में वात्स्यायन जी ने दिल्ली से साप्ताहिक 'दिनमान' भी आरंभ किया, जो अपने युग का कीर्तिमान बना। उससे अनुकरण में एकाधिक अंग्रेजी पत्रिकाएं आईं। पांच वर्ष दिनमान में रहे। फिर जयप्रकाश नारायण के आग्रह पर अंग्रेजी 'एवरीमैन' का संपादन 1972-74 में किया। तब वे वसंत विहार में रहते थे। अपनी साहित्य पत्रिका पुनः 'नया प्रतीक' नाम से 1974 में शुरू की। इस समय पता राउज एवेन्यू मिलता है। 1976-77 में गोल्फ लिंक में निवास था। 1977 के आरंभ में एक दिन लक्ष्मीचंद्र जैन के साथ सीताराम गोयल के यहां दरियागंज 'वॉयस ऑफ इंडिया' आए, जहां से सब लोग अजमेरी गेट पर जेपी व जगजीवन राम की ऐतिहासिक आम सभा सुनने गए थे। दिल्ली में कैसे-कैसे अलग दिशाओं में उनका निवास बदलता रहा, उसी कड़ी में 1977-1980 के बीच उनका निजामुद्दीन वेस्ट में घर था। उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को नई भाषा दी और अनेक नए शब्द भी दिए। अंत में वात्स्यायन जी 1981 से केवेंटर्स ईस्ट, चाणक्यपुरी में रहने लगे। वहीं नीम के पेड़ पर एक घर भी बनाया। जिस दिन उस में प्रवेश एवं काव्य-पाठ होना था, उसी प्रातः हृदयाघात से वे अनंत की यात्रा पर चले गए।

शंकर शरण
लेखक

आजीवन गतिमान वात्स्यायन जी का जीवन अत्यंत विपुल अनुभवों से भरा था। जो उनकी कविता और गद्य में गहनता से लबालब भरा है। सागर और पहाड़ उन की आत्मा में बसते थे, पर काम सर्वाधिक दिल्ली से किया। वे नए रचनाकारों की मदद भी करते थे। उन्होंने ही चित्रकार सतीश गुजराल की पहली प्रदर्शनी लगवाई थी। इस विषयक राष्ट्रकवि दिनकर का एक रोचक प्रसंग है। तब दिनकर जी राज्य सभा सदस्य थे, और प्रातः सैर में कभी-कभी अज्ञेय के यहां चले जाते। फिर चाय-नाश्ते बाद अज्ञेय उन्हें गाड़ी से घर छोड़ आते। यह 1958-64 के बीच की बात होगी। दिनकर ने अपनी कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद में भी अज्ञेय का सहयोग मांगा और पाया था। एक बार दिनकर सुबह-सुबह गंभीर मुद्रा में अज्ञेय से पूछने आए कि युवा रचनाकारों में अज्ञेय इतने प्रभावी क्यों हैं? पर उत्तर से संतुष्ट न हुए। फिर एक बार दिनकर जी ने बड़ी व्यग्रता से पूछा, 'हम यह जानना चाहते हैं कि तुम में इतना आत्मविश्वास कैसे है?' तुम्हारा कस कर विरोध होता है, लेकिन तुम पर जैसे किसी बात का कोई असर नहीं है, तुम अपने रास्ते चले जा रहे हो। वह क्या चीज है, कहां से तुमको बल मिलता है, ईश्वर से या श्रद्धा से? सवाल बड़ी गंभीरता से पूछा गया था।'

उत्तर भी अज्ञेय ने धीर-गंभीर भाव से दिया था 'दिनकर जी, आपके सवाल का जबाव मैं नहीं जानता, सचमुच नहीं जानता। लेकिन जीवन हमेशा मेरे लिए बड़ी अचरज भरी चीज रहा है एक के बाद एक अचरज और उसमें से निकलने वाली कर्म-प्रेरणा जिसके मारे कभी फुर्सत ही नहीं मिली....यही समझ लीजिए कि मुझे इतनी भी फुर्सत नहीं है कि दुर्बलता के आगे झुक सकूं, इसी को आप स्ट्रेंग्थ कहते हैं तो ठीक है।'

ऐसे जीवन के धुनी गुरुकवि को नित्य प्रणाम!

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

आजकल

गुरुवार 2 अप्रैल 2020

14

www.jagran.com

भारत ने दूसरी बार जीता था क्रिकेट विश्व कप

आज ही 2011 में भारत ने क्रिकेट विश्व कप जीता था। श्रीलंका के साथ फाइनल मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला गया। श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी की और 274 रन बनाए थे। भारत ने गौतम गंभीर के 97 रनों की मदद से 277 रन बनाकर मैच जीत लिया।

देश की सबसे लंबी चेनानी-नाशरी सुरंग का हुआ उद्घाटन

आज ही 2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चेनानी और नाशरी के मध्य देश की सबसे लंबी सुरंग का उद्घाटन किया। यह जम्मू और कश्मीर में राष्ट्रीय राजमार्ग 44 पर स्थित है। इसकी लंबाई 9 .2 किमी और इस पर 3750 करोड़ रुपये की लागत आई।

अजय देवगन ने निभाएं हैं हर तरह के किरदार

आज ही 1969 में बॉलीवुड अभिनेता और निर्माता-निर्देशक अजय देवगन का जन्म मुंबई में हुआ। असली नाम विशाल देवगन है। शुरुआती पढ़ाई मुंबई में हुई। वे निर्देशक बनना चाहते थे। 1991 में 'फूल और कांटे' से फिल्मों में पदार्पण किया। 1998 में फिल्म जख्म में संजीदा अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। द लीजेंड ऑफ द भगतसिंह, गोलमाल, राजनीति, सिंघम जैसी बेहतरीन फिल्में दी है। हालिया रिलीज तान्हाजी रही। हर तरह के किरदार निभाए हैं। आने वाली फिल्मों में भुज द प्राइड ऑफ इंडिया, मैदान, गोलमाल-5 और आरआरआर शामिल हैं।

इधर-उधर की

पार्टी कर दिया शारीरिक दूरी रखने का संदेश

लंदन, एजेंसी : कोरोन वायरस के कारण ब्रिटेन में करीब एक सप्ताह से लॉकडाउन की स्थिति है। लोगों को कहा गया है कि वे घरों से बहुत ज्यादा बाहर न निकलें और एक दूसरे से शारीरिक दूरी रखें। हालांकि लोग सप्ताह भर में ही काफी बोर हो चुके हैं। वेशायर में लोगों ने घरों में रहने के तनाव से निजात पाने के लिए नया तरीका ढूंढ निकाला है। यहां के स्थानीय लोगों ने घरों से बाहर निकलकर डांस किया। खास बात ये रही कि इस दौरान लोगों ने उचित शारीरिक दूरी बनाए रखी। लोग एक-दूसरे से काफी दूर खड़े थे। अब लोग रोजाना अपने घरों के दरवाजों पर खड़े होकर डांस पार्टी का आयोजन करते हैं। सुबह 11 बजे डांस किया जाता है। इसका वीडियो ट्विटर पर पोस्ट किया गया है। जिसे एक ही दिन में करीब 17 लाख लोगों ने देखा और 80 हजार ने इसे लाइक किया है। कई लोगों ने इसे तनाव घटाने का तरीका बताया है।

रासायनिक छिड़काव से हो सकते हैं बीमार

जताई चिंता ▶ विशेषज्ञों ने कहा- शोध के नतीजे बताते हैं कि त्वचा, मुंह और आंखों को हो सकती है हानि

इसकी अपेक्षा साफ-सफाई और शारीरिक दूरी को मान रहे ज्यादा कारगर

मेक्सिको में लोगों को विसंक्रमित करने के लिए इस तरह के चेंबर बनाए गए हैं। फाइल/राटयर

सिंगापुर, रायटर : कोरोना वायरस के विसंक्रमण के लिए किए जा रहे रासायनिक छिड़काव से स्वास्थ्य खतरे का अंदेशा पैदा हो गया है। इसको लेकर नई बहस शुरू हो गई है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की चेतावनी के बावजूद यह काम बड़े पैमाने पर हो रहा है।

दुनिया के जिस भी देश में कोरोना का प्रकोप फैला है वहां एहतियात के तौर पर बड़े पैमाने पर छिड़काव हो रहा है। तुर्की का ग्रांड बाजार हो या मेक्सिको के पुल या भारत के पलायित मजदूर। विशेष सुरक्षा सूट पहने कर्मचारी इन पर रासायनिक छिड़काव करते नजर आ रहे हैं। इंडोनेशिया के दूसरे सबसे बड़े शहर सुराबया में तो ड्रोन से छिड़काव किया जा रहा है। इससे निकला रसायन काफी देर तक हवा में मौजूद रहा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से संबद्ध ग्लोबल आउटब्रेक एलर्ट एंड रेस्पांस नेटवर्क के प्रमुख और संक्रामक रोगों के विशेषज्ञ डेल फिशर ने कहा कि कई देशों में छिड़काव की हास्यास्पद तस्वीरें देखने को मिली हैं।

मुझे नहीं लगता कि इससे कोरोना वायरस की रोकथाम में मदद मिलेगी। इससे लोगों की दूसरी समस्याएं बढ़ जाएंगी। उधर, सुराबाया शहर में ड्रोन से किए गए छिड़काव पर सफाई देते हुए मेयर के प्रवक्ता ने कहा कि इस इलाके में संक्रमण के मामले अधिक होने के कारण ऐसा करना पड़ा। प्रवक्ता फेब्रियादित्या प्रजातारा ने कहा कि बेंजलकोनियम के छिड़काव से लोगों को त्वचा संबंधी परेशानी हो सकती है लेकिन साबुन लगाने से न केवल इसमें आराम मिलेगा बल्कि वायरस का असर भी कम होगा। दरअसल, कोरोना वायरस श्वसन संबंधी संक्रमित रोग है। यह खांसने और छींकने से हवा में फैलने वाले तरल कणों (ड्रापलेट) के संपर्क में आने से एक दूसरे में आता है। इसके साथ ही किसी संक्रमित के संपर्क में आने के बाद हाथ के जरिये इसका वायरस नाक, मुंह व आंख से शरीर में प्रवेश कर सकता है। सुराबाया के निवासी अली सरबोनो ने ड्रोन से छिड़काव के फैसले का स्वागत किया है। उनके अनुसार इससे छत सहित सभी जगह रसायन पहुंच जाता है जबकि जमीन पर रहकर किए गए छिड़काव से चहारदीवारी तक ही दवा पहुंच पाती है।

एशिया पैसेफिक सोसायटी ऑफ क्लीनिकल माइक्रोबायोलाजी एंड इंफेक्शन के पाल तांबियाह ने कहा कि इस बीमारी से निपटने के लिए छिड़काव की अपेक्षा बार बार हाथ धोने और सार्वजनिक प्रयोग की सतह की सफाई रखने से ज्यादा बेहतर परिणाम आते हैं। शारीरिक दूरी भी एक बेहतर उपाय है। भारत के बरेली शहर में मजदूरों पर कीटनाशक के छिड़काव की घटना को लेकर विश्वव्यापी प्रतिक्रिया हुई है। इसी तरह मलेशिया में देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान ट्रकों से किए जा रहे छिड़काव की तस्वीरों ने भी विशेषज्ञों की चिंता बढ़ा दी है।

सड़क किनारे लगाए गए गए हैं बॉक्स : मलेशिया के स्वास्थ्य मंत्रालय के पूर्व उप निदेशक व संक्रामक रोग विशेषज्ञ क्रिस्टोफर ली ने बताया कि सड़कों पर छिड़काव से कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला। यह समय और संसाधनों की बर्बादी है। उधर, मलेशिया के स्वास्थ्य महा निदेशक नूर हिशाम अब्दुल्लाह ने मंगलवार को कहा कि छिड़काव का काम ठीक से करने के लिए सरकार ने दिशा निर्देश जारी कर दिए हैं। इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में सड़क किनारे इस तरह के बॉक्स चैंबर लगाए गए हैं जिनमें कोई भी खड़ा होकर खुद पर छिड़काव करा सकता है। इस तरह के बॉक्स से खुद को सैनिटाइज कर बाहर निकलीं फैनी अनीशा ने कहा कि छिड़काव के बाद मैं खुद को सुरक्षित महसूस कर रही हूं।

रोकथाम में नहीं है कारगर

इसी तरह सिंगापुर माउंट एलिजाबेथ अस्पताल के संक्रामक रोग विशेषज्ञ लियोंग हो नाम का कहना है कि बड़े पैमाने पर किया जा कहा छिड़काव देखने में अच्छा लग रहा है और इससे लोगों की हिम्मत भी बढ़ रही है लेकिन यह कोरोना की रोकथाम में कारगर नहीं है। इससे तो बेहतर रहता कि लोगों पर पानी की बौछार छोड़कर उन्हें घर जाने पर मजबूर किया जाता। लोगों को घरों में रोककर ज्यादा बेहतर नतीजे पाए जा सकते हैं।

कोरोना लॉकेट : लीजिए, विश्वव्यापी कोरोना वायरस की महामारी के बीच कोरोना लॉकेट बाजार में आ गया है। रूस की कोस्त्रोमा स्थित डॉ. वोरोबेव ज्वेलरी कंपनी ने चांदी का कोरोना लॉकेट तैयार किया है। यह ऑनलाइन उपलब्ध है। रायटर

पृथ्वी पर अलग-अलग समय में हुआ सामूहिक विनाश

करोड़ों साल पहले हुए सामूहिक विनाश से कई जीवों का समूल नाश हो गया था। प्रतीकात्मक

लॉस एंजिलिस, प्रेट्र : करोड़ों साल पहले पृथ्वी में उल्कापिंडों के गिरने से हुई सामूहिक विनाश की घटना में कई जीव-जंतुओं का समूल नाश हो गया था। इस दौरान पृथ्वी के वातावरण में सल्फर की मात्रा बढ़ गई थी, जिससे यहां के महासागर भी काफी अम्लीय हो गए थे जलीय जीवन भी प्रभावित हो गया था।

अब एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने सामूहिक विनाश की घटनाओं के बारे में नया दावा किया है। उनका कहना है कि 25.2 करोड़ वर्ष पहले हुआ सामूहिक विनाश पृथ्वी और समुद्र में अलग-अलग समय में हुआ है। इसमें लगभग 70 फीसद जीव-जंतु मारे गए थे। यह दावा दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में खोजे गए जीवाश्मों के अध्ययन के आधार पर किया गया है। नेचर कम्युनिकेशंस नामक जर्नल में प्रकाशित शोध में पाया गया है कि ये जीवाश्म 29.9 करोड़ से 25.1 साल पुराने थे, जो इस बात को पुख्ता करते हैं कि सामूहिक विनाश की घटनाएं अलग -अलग समय पर हुई थीं।

अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले (यूसी) के शोधकर्ताओं के अनुसार, इस सामूहिक विनाश की घटना के दौरान पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन समुद्र की तुलना में हजारों साल पहले पृथ्वी पर शुरू हुआ था। जब समुद्री में विनाश की घटनाएं होनी शुरू हुई तो उस समय लगभग 95 फीसद जलीय जीव खत्म हो गए थे। अब तक वैज्ञानिकों का मानना था कि लाखों वर्ष की अवधि में हुई सामूहिक विनाश की घटनाएं उल्कापिंडों के गिरने और भयंकर ज्वालामुखी विस्फोट के कारण हुई थी, लेकिन पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्ध में भूमि पर हुए सामूहिक विनाश और उत्तरी गोलार्ध में समुद्री क्षेत्रों में हुई 'सामूहिक विनाश' की घटनाएं अलग-अलग तात्कालिक कारणों से हुई थी। यूनिवर्सिटी ऑफ बर्कले से इस अध्ययन की सह-लेखक कैंडी लॉय ने कहा, 'ज्यादा लोग मानते हैं कि समुद्री और स्थलीय क्षेत्रों में एक ही समय पर सामूहिक विनाश की घटनाएं हुई थीं पर अध्ययन के निष्कर्ष कुछ और कहते हैं।' उन्होंने कहा कि इस बात की प्रबल संभावनाएं हैं कि पृथ्वी के हर हिस्से में सामूहिक विनाश की घटनाएं अलग-अलग समय पर हुईं। इसीलिए हर दूसरे क्षेत्र में मिले जीवाश्मों का अध्ययन करने पर अलग-अलग निष्कर्ष सामने आते हैं।

लंबे समय तक काम करने से थायरॉयड का खतरा

शोध अनुसंधान

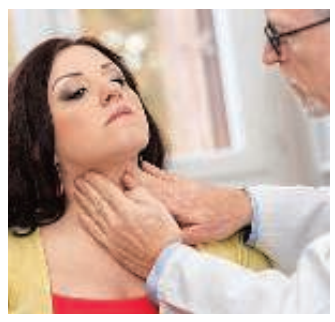

प्रतीकात्मक

एक अध्ययन में पाया गया है कि लंबे समय तक काम करने वाले वयस्कों को थाइरॉयड का सामना करना पड़ सकता है। इसे हाइपोथायरॉयडिज्म कहा जाता है। इसके चलते थायरॉयड ग्रंथि पर्याप्त मात्रा में थायरॉयड हार्मोन की उत्पत्ति नहीं करती। इससे थकान, डिप्रेशन और सर्दी महसूस होती है।

एंडोक्राइन सोसाइटी जर्नल में छपे अध्ययन के अनुसार, लंबे समय तक काम करने वालों में हाइपोथायरॉयडिज्म का उच्च खतरा पाया गया है। इस आम थायरॉयड विकार से पुरुषों से ज्यादा महिलाएं प्रभावित होती हैं। यह निष्कर्ष करीब 2160 वयस्कों पर किए गए अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। दक्षिण कोरिया के नेशनल कैंसर सेंटर के शोधकर्ता योंग की ली ने कहा, 'अधिक काम एक प्रचलित समस्या है, जिससे दुनियाभर में कामगारों की सेहत और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो रहा है। हमारी जानकारी के अनुसार, यह पहला अध्ययन है, जिसमें लंबे समय तक काम करने का संबंध हाइपोथायरॉयडिज्म से पाया गया है।' -प्रेट्र

एआइ की मदद से स्किन कैंसर की सटीक पहचान

शोधकर्ताओं ने एक नया आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) सिस्टम विकसित किया है, जिसकी मदद से स्किन (त्वचा) कैंसर का सटीक अनुमान लग सकता है। इससे प्रारंभिक उपचार के विकल्पों को अपनाया जा सकता है। दक्षिण कोरिया की सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता जुंग-इम ना ने कहा, 'चिकित्सा क्षेत्र में एआइ के इस्तेमाल की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मेलेनोमा (स्किन कैंसर) और त्वचा संबंधी दूसरी समस्याओं में अंतर को लेकर विशेषज्ञों के मुकाबले एआइ का नतीजा बेहतर पाया गया है। हालांकि इस तरह के सिस्टम का और परीक्षण करने की जरूरत है। -प्रेट्र

मनरंजन

पीरियड फिल्म करने की तमन्ना है जैक्लिन की

इंडस्ट्री में लगातार कई पीरियड फिल्में रिलीज हुई हैं। आने वाले समय में 'पृथ्वीराज', 'तख्त' जैसी पीरियड फिल्में रिलीज होंगी। अपने करियर की शुरुआत 'अलादीन' और 'जाने कहां से आई है' जैसी फंतासी और साइंस फिक्शन फिल्मों से करने वाली जैक्लिन फर्नांडीज भी विशुद्ध पीरियड फिल्म करने की चाह रखती हैं। यही नहीं, जैक्लिन टाइम ट्रैवल करके अतीत में जाना चाहती हैं। उनका कहना है कि पीरियड फिल्म में भरपूर ड्रामा होता है। ऐसी फिल्म में काम करने की चाह है। जैक्लिन को ओम राउत निर्देशित पीरियड फिल्म 'तान्हाजीः द अनसंग वॉरियर' फिल्म पसंद आई थी। उनका कहना है कि पीरियड फिल्म में वह जिन निर्देशकों के साथ काम करना चाहती हैं, उनमें ओम राउत का नाम सबसे ऊपर है। वह कहती हैं कि जिस तरह से ओम ने उस दौर को सही तरह से समझकर फिल्म में दर्शाया है, उसकी वजह से वह मेरी लिस्ट में सबसे ऊपर हैं। फिलहाल जैक्लिन अपने घर में हैं।

बेटी के लिए नील नितिन मुकेश ने बनाई अपनी चोटी

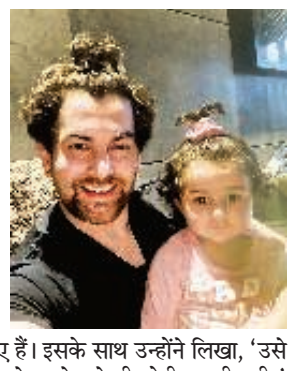

बच्चों को खुश करने और उनसे अपनी बात मनवाने के लिए मां-बाप को क्या-क्या नहीं करना पड़ता। यह बात बुधवार को सोशल मीडिया पर साझा की गई नील नितिन मुकेश की एक तस्वीर से देखने को मिली। इस तस्वीर में बेटी नूर्वी के साथ-साथ वह खुद भी चोटी बांधे हुए हैं। इसके साथ उन्होंने लिखा, 'उसे चोटी बनाने के लिए मनाने से पहले मुझे भी चोटी बनानी पड़ी।' नील और उनकी बेटी नूर्वी की इस तस्वीर को इंटरनेट पर काफी पसंद किया जा रहा है।

जॉनी लीवर ने बताया खुश रहने का राज

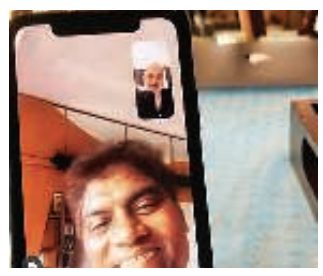

अमेरिका से लौटने के बाद अनुपम खेर वीडियो कॉलिंग के जरिए अपने दोस्तों से लगातार संपर्क में हैं। अनिल कपूर और सतीश कौशिक के बाद उन्होंने बुधवार को जॉनी लीवर से वीडियो कॉल पर बातचीत का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया। इस वीडियो में अनुपम जॉनी लीवर से उनके खुश रहने का राज पूछते हैं। इस पर जॉनी बताते हैं कि आप दूसरों को खुश रखिए, आप स्वयं खुश रहेंगे। इस बातचीत के दौरान दोनों पुराने दिनों की दोस्ती को याद करते हैं और जॉनी लीवर खुद को अनुपम का प्रशंसक बताते हैं। इसके बाद वह जॉनी से पूछते हैं कि जिन लोगों के हालात ठीक नहीं हैं, वे खुद को कैसे खुश रख सकते हैं? इसके जवाब में जॉनी कहते हैं, 'सच्चाई का पता चलने के बाद इंसान अपने आप ही खुश हो जाता है। साधारण बात है, कुछ लोग सच्चाई से परे होकर अपने हालात खुद ही खराब कर लेते हैं।' इस वीडियो में अनुपम जॉनी के बेटे और बेटी दोनों की कॉमेडी की प्रशंसा भी करते हैं।

तापसी को याद आया पिंक का टैटू

अभिनेत्री तापसी पन्नू ने सोशल मीडिया पर एक पुरानी तस्वीर साझा की। यह तस्वीर साल 2016 में रिलीज हुई फिल्म 'पिंक' के टैटू ट्रायल की है। इसमें तापसी की गर्दन पर एक टैटू बना है, जिसमें चिड़ियां उड़ रही हैं। इसे साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'पिंक का पहला टैटू ट्रायल। इस टैटू के डिजाइन के माध्यम से मीनल की मानसिकता प्रदर्शित करने का विचार था। एक चिड़िया जो अपने पंखों को फैलाकर उड़ना चाहती है। मेरे लिए यह सुखद अनुभव था कि फिल्म रिलीज होने के बाद कई लड़कियों ने इसी तरह का टैटू बनवाया। मैं खुद टैटू पसंद करती हूं। बशर्ते वह टैटू सिर्फ एक डिजाइन होने की बजाय इंसान के व्यक्तित्व से जुड़ा होना चाहिए। मैंने भी दो टैटू बनावाए हैं, जो मेरे अभिनय के पेशे का हिस्सा नहीं है। अब तक मुझे अपनी गर्दन के पीछे तीसरा टैटू भी बनवा लेना चाहिए था।' तापसी इससे पहले भी सोशल मीडिया पर अपनी पुरानी तस्वीरें साझा कर चुकी हैं। आगामी दिनों में वह हसीन दिलरुबा, रश्मि रॉकेट और शाबाश मिठ्ठू जैसी फिल्मों में नजर आएंगी।

मलाइका ने बनाए बेसन के लड्डू

इन दिनों हर कोई घर पर बैठकर काफी रचनात्मक हो रहा है। वह हर काम कर रहा है, जो वह पहले नहीं कर पाया है। मलाइका ने एक वीडियो साझा किया है, जिसमें वह बेसन के लड्डू बना रही हैं। किचन में खड़े होकर बेसन को भूनने से लेकर उसे लड्डू बनाने तक मलाइका ने पूरा वीडियो साझा किया है। इस वीडियो में मलाइका लड्डू बनाकर बेहद खुश दिखती हैं। उन्होंने इसकी तस्वीर साझा करते हुए लिखा, 'खाना बनाना, सफाई, वर्कआउट और पॉजिटिव रहने के साथ ही मैं सो भी रही हूं। परिवार संग समय बिता पा रही हूं। घर रहने के यही सारे फायदे होते हैं।'

बॉलीवुड अपडेट

कोरोना वायरस से लड़ने के लिए संगीत जगत ने कसी कमर

कोरोना वायरस से लड़ने के लिए हर कोई मदद के हाथ बढ़ाकर अपनी क्षमता के मुताबिक दान कर रहा है। अब संगीत जगत ने भी इसमें अपना योगदान देने के लिए कमर कस ली है। टी सीरीज और रेड एफएम ने साथ मिलकर फंड जमा करने के लिए द केयर कॉन्सर्ट शुरू किया है। द केयर कॉन्सर्ट डिजिटल प्लेटफॉर्म पर 11 अप्रैल को शाम 6 बजे शुरू होगा। टी सीरीज ने रेडियो चैनल के साथ यह पहल की है, ताकि पैसे एकत्रित करके कोरोना वायरस को मात दी जा सके। यह कॉन्सर्ट इनके आधिकारिक यूट्यूब और फेसबुक पेज पर स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगा। जिसे भी यह कॉन्सर्ट देखना होगा, वे लॉगइन करके इसे देख सकते हैं। 15 आर्टिस्ट इसमें परफॉर्म करेंगे। द केयर कॉन्सर्ट में हनी सिंह, अदनान सामी, नेहा कक्कड़, तुलसी कुमार, अरमान मलिक, ध्वनि भानुशाली, पलक मूच्छल, जुबीन नौटियाल, आदित्य नारायण जैसे कई आर्टिस्ट शामिल होंगे। ये सभी अपने घर से ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर परफॉर्म करेंगे। टी सीरीज के अध्यक्ष भूषण कुमार का कहना है कि यह पहल लोगों को घरों में रहने के लिए भी प्रेरित करेगी।

एंड टीवी पर भी रामायण का प्रसारण

दूरदर्शन ने अपने कई पुराने धारावाहिकों को फिर से प्रसारित करना शुरू कर दिया है, जिनमें से मुख्य हैं 'रामायण' और 'महाभारत' धारावाहिक। अब एंड टीवी ने भी अपने पुराने धारावाहिक (श्री रामचरित मानस आधारित) 'रामायण' शो को भी रामनवमी के शुभ अवसर पर प्रसारित कर दिया है। आज (गुरुवार) से इसका प्रसारण सुबह 8 बजे से किया जाएगा। सोमवार से रविवार तक इस शो का प्रसारण किया जाएगा। फिल्म में लक्ष्मण का किरदार निभाने वाले अभिनेता नील भट्ट का कहना है कि यह धारावाहिक उनके लिए एक टर्निंग प्वॉइंट था। इस शो ने उनकी सोच को प्रभावित किया था। लक्ष्मण के किरदार की तैयारी के लिए नील ने जिम जाना छोड़ दिया था। उनका कहना है कि 'जब मैं लक्ष्मण के किरदार की तैयारी कर रहा था, तो जहन में यही था कि उस वक्त जिम नहीं था, तो लक्ष्मण कैसे खुद को फिट रखते होंगे। मैंने उसके बाद से आज तक जिम के उपकरणों का उपयोग नहीं किया है। नील का मानना है कि दूरदर्शन और एंड टीवी पर दिखाए जाने वाले 'रामायण' के बीच कोई तुलना नहीं हो सकती है। अरुण गोविल, सुनील लहरी और दीपिका जी ने तो स्टैंडर्ड सेट कर दिए हैं, वहां तक पहुंचना आसान नहीं है। आज की पीढ़ी मार्वल्स की फिल्में 'आर्यनमैन', 'कैप्टन अमेरिका' देखती है, जबकि ये सारे सुपरहीरो हमारे 'रामायण' और 'महाभारत' से ही आते हैं। जो वास्तविक स्त्रोत हैं, उन्हें देखने का मौका अब लोगों को मिलेगा। नील बताते हैं कि उनका यह शो नेटफ्लिक्स पर भी है। इस शो की सराहना करते हुए उन्हें विदेश से कई मैसेज भी आते हैं।

इटली के बुजुर्ग की कहानी से भावुक हुए शक्ति कपूर

हिंदी सिनेमा के सितारे लोगों से अलग-अलग माध्यमों से घर से बाहर न निकलने की अपील कर रहे हैं। शक्ति कपूर ने बुधवार को सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा कोरोना की त्रासदी झेल रहे देश इटली के बुजुर्ग की कहानी साझा की। इसके माध्यम से उन्होंने लोगों से जिंदगी की कीमत समझने और घर से बाहर न निकलने की अपील की। वीडियो में वह कोरोना वायरस से संक्रमित बुजुर्ग की बात बताते हुए कहते हैं कि जब बुजुर्ग संक्रमण से ठीक होकर अस्पताल से बाहर निकले तो डॉक्टर्स ने उनसे एक दिन वेंटिलेटर पर रखने के लिए फीस मांगी। यह सुनकर बुजुर्ग व्यक्ति की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा कि आज मुझे यह एहसास हुआ कि मुझे भगवान का कितना बड़ा बिल देना पड़ेगा, जिन्होंने मुझे इतने दिनों तक मुफ्त में सांस लेने का मौका दिया। इसके बाद शक्ति वीडियो में बताते हैं कि यह बात उनके दिल पर असर कर गई। हम सिर्फ अस्पताल जाते हुए ये बातें सोचते हैं। वीडियो के अंत में शक्ति ने लोगों से घर में रहने और अपनी जिंदगी की कीमत समझने की अपील की। शक्ति कपूर आखिरी बार वेब सीरीज 'परछाईं' में प्रेम बहादुर के किरदार में नजर आए थे।

लॉकडाउन में रिश्ते हुए और मजबूत : नीतू सिंह

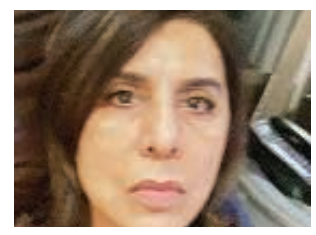

हर कोई सोशल मीडिया पर अपने मन की बात कर रहा है। वह हर छोटी-बड़ी बात जो पहले ज्यादा मायने नहीं रखती थी, अब उसकी उपयोगिता को लेकर वे पहले से ज्यादा शुक्रगुजार हो गए हैं। बात करें अगर ऋषि कपूर की पत्नी नीतू कपूर की तो उन्होंने इस कठिन समय में तकनीक की भूमिका को अहम बताया है। नीतू ने वीडियो कॉल पर बात करते हुए अपनी एक तस्वीर साझा की है। इसके साथ ही उन्होंने लिखा, 'इस मुश्किल समय में वीडियो कॉलिंग हमारे लिए एक रक्षक की तरह है। अगर इन हालातों का सकारात्मक पहलू देखें, तो हमारे रिश्ते और मजबूत हो गए हैं। वजह यह है कि हम एक-दूसरे से और ज्यादा जुड़ रहे हैं। ज्यादा बातचीत, तो ज्यादा जुड़ाव।'

अमित त्रिवेदी ने रिलीज किया अपने लेबल में बना पहला गाना

गायक और संगीतकार अमित त्रिवेदी ने बुधवार को यूट्यूब पर अपने म्यूजिक लेबल एटी आजाद के अंतर्गत पहला गाना 'मोती वीराना' रिलीज किया है। अमित त्रिवेदी और ओस्मान मीर द्वारा स्वरबद्ध यह गाना गुजराती में है। इन गाने को अमित के साथ उनकी मां जयश्री त्रिवेदी ने लिखा है और दोनों ने इस गाने को संगीतबद्ध भी किया है। इससे पहले अमित ने एक वीडियो जारी करके बताया था कि यह गाना उनके लिए बहुत खास है, क्योंकि इस गाने को उनकी मां ने 33 वर्ष पहले तैयार किया था। अमित ने गाने में दर्शकों की दिलचस्पी के अनुसार थोड़ा बदलाव करके रिलीज किया है। अमित 'काय पो चे', 'उड़ता पंजाब', 'फितूर' और 'अंधाधुन' जैसी फिल्मों के लिए गाने गा चुके हैं।